॥ ओ३म ॥

नमः विश्वम्भराय जगदीश्वराय !

❀ तौल नाप का संक्षिप्त विवरण ❀

(देशी तौल प्रथम प्रकार)

१२ सरसों = १ यव (जौं)। २ यव = १ गुंजा (रत्ती)।
८ रत्ती = १ मासा। ४ मासा = १ टंक।
१२ मासा = १ कर्ष = १ तोला। ४ कर्ष = १ पल = ४ तोला।
४ पल = १ कुड़व = १६ तोला।

(देशी तौल द्वितीय प्रकार)

३० परमाणु = १ त्रसरेणु (वंसी)। ६ वंशी = १ मरीचि।
१६ मरीचि = १ राई। ३ राई = १ सफेद सरसों
४ जौं = १ रत्ती ६ रत्ती = १ मासा।
४ मासा = १ शाण। ४ शाण = १ कर्ष।
४ कर्ष = १ विल्व। ४ विल्व = १ अंजुली।
४ अंजुली = १ प्रस्थ। ४ प्रस्थ = १ आढ़क।
४ आढ़क = १ राशि। ४ राशि = १ गोणी।
४ गोणी = १ खारी। ८ सफेद सरसों = १ जौं।

(अङ्गरेजी सूखी दवाओं की तौल)

१६ ड्राम = १ औंस। १६ औंस = १ पौंड = ७ ७७ छटांक।
२८ पौंड = १ क्वार्टर। ४ क्वार्टर = १ हड्रेडवेट = १ मन १६ सेर
२० हड्रेडवेट = १ टन। १ टन = २८ मन के लगभग।
१ पौंड = ७००० ग्रेन। १ तोला = १८० ग्रेन।
१ ग्रेन = आधा रत्ती।

(अङ्गरेजी तरल (पनील) दवाओं की तौल)

६० बूंद = १ ड्राम। ८ ड्राम = १ औंस।
२० औंस = १ पाइन्ट। २ पाइन्ट — क्वार्टर।

८ पाइन्ट = १ गैलन।   १ गैलन = १६० औंस।
२४ औंस = १ बोतल।

मिट्रिक सिस्टम की तोल

१० मिली लीटर = सैंटीलीटर।
१० सैंटीलीटर = १ डेसीलीटर।
१० डैसीलीटर = १ लीटर (Litre)।
१० लीटर = १ डैकेलीटर = २ गैलन।
१००० लीटर = १ किलोलीटर = २२० गैलन।

ग्राम की परिभाषा तोल

१ ग्राम = १५.४३२ ग्रेन = १ मासा।
४५४ ग्राम = १ पौंड = ७३/८ छटांक।

औषधियों के लिये भाव तथा पता:—

1. Imperial Chemical Industries (India Ltd) 18 Strand Road Calcutta
2. Trading Co, Graham Road Ballard Estat Bombay
3. B R. Paul & Co., Banfield's lane Calcutta.

बक्स और डब्बे मंगाने के पते:—

1. National paper Box Manufacturing Co., Bholeshwar Bombay.
2. Laxmi paper box works Bombay.
3. Bhagwan printing worrks Bar Shahbulla, Chawri Bazar, Delhi.

खाली शीशियां मंगाने के पते:—

1. All India Bottle Supply Co., 168-170 Chakla Street Bombay.
2. Sikki Bottle Stores, 8 Ezra Street Calcutta
3. C. K. Dass & Sons, 17 College Street Calcutta
4. Laxmi Glass works, Station Road Kasganj.

ॐ

नम. विश्वम्भराय जगदीश्वराय !

❀ विषय सूची ❀

ॐ

नमः विश्वम्भराय जगदीश्वराय !

प्रस्तावना

अहा ! उस सर्वेश्वर की लीला अपरम्पार है, कि जिसकी थाह लेने में बड़े बड़े ऋषि तथा महर्षि भी असमर्थ हो मूक हो रहे हैं कि जिसकी एक २ विचित्र रचना सहस्रों जीवों को आनन्द प्रदान करती हुई आश्चर्य के महान् सागर में डाल मोहित कर रही है। सर्व प्रथम आप अपने शरीर की रचना पर ही ध्यान दीजिये। इसमें आँख को विधाता ने कैसी कोमल बनाई कि तनिक भी सूक्ष्म तृण तथा धूलि आदि के पड़ते ही दुखने लगे तो उसकी रक्षा निमित्त पलकों की कैसी विचित्र रचना प्रदान करदी जो किसी प्रकार की धूलि या तृण के पड़ते ही तुरन्त ढाप लेवे और भीतर न जाने देवे। इसी प्रकार अपनी जिह्वा को भी ध्यान दो ! ३२ कठोर दाँतों के बीच में कोमल जिह्वा सैकड़ों बार दाँतों से टकराया करे किन्तु किसी प्रकार भी कटने न पावे। देखो ! भूख प्यास कैसी दुखदाई बनाई किन्तु इसकी निवृत्ति के निमित्त अन्न जल की कैसी विचित्र रचना कर दी कि जिस से प्रत्येक जीव अनायास ही अपनी भूख प्यास की शान्ति कर सके। कहने का अभिप्राय यह है कि सृष्टि में ऐसी किसी वस्तु की कमी नहीं है कि जिसको विधाता ने हमारे

शारीरिक सुख के निमित्त न बनाया हो, ऐसी अवस्था में यदि हम अपनी अज्ञानता से उन वस्तुओं का सदुपयोग न करें तो इस में किस का दोष है? अपनी त्रुटियों का उत्तरदायित्व अपने पर ही निर्भर होता है।

अब प्रश्न यह है कि विधाता ने जिस प्रकार हमारे शारीरिक सुखों के निमित्त इतने पदार्थों की रचना की है उसी प्रकार हमारे शारीरिक रोगों के निमित्त भी कोई व्यवस्था की है या नहीं इसका उत्तर यह है कि अवश्य किया है! सर्व प्रथम आप अपने मानसिक रोगों पर ही ध्यान दो! शरीर में भूख, प्यास, सर्दी तथा गरमी आदि सब रोग हैं, इनके निवृत्ति निमित्त अन्न, जल तथा अग्नि आदि पदार्थों की रचना की है। इसी प्रकार ज्वर, अतिसार, कुष्ट, भगन्दर तथा बवासीर आदि जितने रोग हैं उनके निमित्त भी अनेकों प्रकार की जड़ी-बूटियां उत्पन्न कर दी हैं, यदि इन सब जड़ी बूटियों का विधिवत पालन किया जावे तो रामबाण सदृश समस्त रोगों का नाश कर सकती हैं। वैधक शास्त्रों मे दो प्रकार की चिकित्सा का उल्लेख पाया जाता है। प्रथम प्राकृतिक चिकित्सा और दूसरी जड़ी-बूटियों की चिकित्सा। इनमें प्राकृतिक चिकित्सा बहुत ही सुगम तथा हित कर मानी गई है। क्योंकि इसमें कोई औषधि आदि सेवन करने का विधान नहीं पाया जाता। अपितु अपने समस्त रोगों का प्राकृतिक नियमों (Laws of nature) के द्वारा ही हटाने का प्रयत्न किया जाता है। आज इसका उपयोग मानव समाज मे बहुत ही कम देखने में आता है और इसीलिये संसार में रोगों की वृद्धि उत्तरोत्तर दिखाई दे रही है। बड़े २ डाक्टर तथा आयुर्वेदाचार्यों द्वारा यह बात निर्विवाद सिद्ध हो चुकी है कि हमारे शरीर में जितने रोग व्यापक देख पड़ते हैं उन सब का मूल कारण प्राकृतिक नियमों की अवहेलना

करना ही है और इनकी एक मात्र परमौषधि भी प्राकृतिक नियमों की पूर्ति करा देना ही सिद्ध है। अब रही जड़ी-बूटियों के द्वारा दूसरे प्रकार को चिकित्सा—सो इसका प्रचार उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है और साथ ही साथ सैकड़ों औषधालय तथा शफाखाना (Hospitals) खुलते जा रहे हैं, इतना सब कुछ उपाय किये जाने पर भी रोगियों की संख्या दिन दूनी तथा रात चौगुनी होती दिखाई दे रही है और यही अनुमान किया जाता है कि ये सब शफाखाना तथा औषधालय आदि की जो (Scheme) है वह सब अधूरी ही है अथवा सारा संसार ही रोगालय बन गया हो।

अब बुद्धिमानों के विचारने की बात है कि आज इतने रोगों की वृद्धि क्यों दिखाई दे रही है मेरी तो समझ में एक ही बात आती है और धर्म शास्त्र में भी लिखा हुआ है कि "भोगे रोग भयं" अर्थात् भोगों में रोगों का भय है। आज संसार एक दम भोगों का दास बनता दिखाई दे रहा है और इसी कारण रोगों की भी वृद्धि होती जा रही है। इनकी शान्ति तथा चिकित्सा मेरी समझ में शफाखाना तथा औषधालय खुलने से ही नहीं हो सकती अपितु भोगों का त्याग तथा प्राकृतिक नियमों का यथेष्ट पालन करने से ही हो सकती है क्योंकि मूलमात्र का खोज निकालना ही बुद्धिमत्ता कही जा सकती है। आज कल जिन जड़ी-बूटियों के द्वारा शफाखाना तथा औषधालयों में चिकित्सा की जाती है उनका ज्ञान भी सर्व साधारण को नहीं है। पूर्व समय में प्राकृतिक नियमों का पालन करने के कारण प्रथम तो इतने रोग होते ही न थे और जो भूल से कदाचित किसी प्राणी को हो भी जाता था तो उन जड़ी बूटियों का ज्ञान हमारे सर्व साधारण को हुआ करता था और वह स्वयं इनमें से अपने रोग के निमित्त किसी भी

उपयोगी चीज का सेवन करके रोग से मुक्त हो जाता था। आयुर्वेद विद्या का उपयोग पैसा कमाने तथा किसी प्रकार का स्वार्थ सिद्ध करने के निमित्त नहीं था अपितु सर्व संसार के प्राणियों के हित प्रति ही इसकी अध्ययन अध्यापन प्रणाली चलती थी, किन्तु जब से इसका प्रयोग पैसा कमाने के निमित्त किया जाने लगा। तब से ही हमारे वैद्य तथा डॉक्टर लोग हमारी इन साधारण २ जड़ी-बूटियों के भिन्न २ योगों को पेटेन्ट मेडीसन्स के रूप मे बना कर रजिस्टर्ड कराने में लग गये। और योगों को एक दम सोने की चीज को तिजोरी मे रखने के समान गुह्य (Secret) रखने लगे। आज इस प्रकार की सैंकड़ों पेटेन्ट मेडीसन्स रजिस्टर्ड कराई जा चुकी हैं जो मूल्य में अधिक होने के कारण हमारे बड़े बड़े राजा, महाराजा तथा सेठ साहूकारों के उपयोग में ही आ सकती है और संसार के गरीब लोग विचारे इन सब पेटेन्ट मेडीसन्स से वंचित रह जाते हैं।

ये पेटेन्ट मेडीसन्स क्या है तथा किस प्रकार तैयार की जा सकती हैं इन सब बातों का उल्लेख इस पुस्तक में कर रहा हूं और मेरी यह हार्दिक इच्छा है कि सर्व साधारण इन सब योगों से सुपरिचित हो अपने २ रोगों की चिकित्सा स्वयं करें और इनको उपयोग मे लावें। ये सब पेटेन्ट मेडीसन्स कोई निराली वस्तु नहीं है अपितु हमारे घर तथा वनों में पैदा हुई साधारण २ जड़ी बूटियों के ही योग है जो कि "राड के ओले पर्वत" सदृश सर्व साधारण को प्रकट नहीं हो सकते। इन सब योगों को अनेक फार्मेसी तथा वैद्य डाक्टरों ने नाना प्रकार के नाम व रूपों मे परिवर्तन कर पेटेन्ट करने की चेष्टा की है यथा—किसी फार्मेसी ने अपनी औषधि निर्माण कर उसका नाम बालामृत रख रजिस्टर्ड कराया तो दूसरी फार्मेसी

वालों ने उसी चीज को बाल जीवन, बाल सुधा, बाल रस अथवा Infant cure आदि विविध २ नामों में रजिस्टर्ड करा लिया। कहने का अभिप्राय यह है कि ये सब फार्मेसियाँ तथा वैद्य डाक्टर अनेकों प्रकार की औषधियों को इसी प्रकार नाम व रूपों में परिवर्तन कर रजिस्टर्ड करा अपने २ नामों से प्रचार करने में लगे हुए हैं। रजिस्टर्ड कराने तथा औषधियों के नाम बदलने में इनका अभिप्राय यह है कि कोई अन्य व्यक्ति इन दवाओं को उन रजिस्टर्ड नामों में से किसी भी नाम को रख कर अपनी निजी बना कर बेच नहीं सकता। हाँ! इन नामों के अतिरिक्त कोई दूसरा ही नाम रख कर जो चाहे सो रजिस्टर्ड करा सकता है और बेच भी सकता है।

आज इन पेटेन्ट मेडीसन्स को बनाने तथा प्रचार करने वाले इन साधारण जड़ी-बूटियों के योग से लाखों रुपया उपार्जन करके धनपति बन चुके हैं किन्तु हमारे गरीब लोग इनके द्वारा अपने रोगों को भी दूर न कर सके, यही शोक की बात है। यद्यपि इस समय इन सब पेटेन्ट मेडीसन्स का रासायनिक क्रिया द्वारा पृथक्करण (Analysis) किया जाकर पूर्णतया भंडा फोड़ हो चुका है और कितने ही महाशयों ने अपनी २ पुस्तकें तथा लेखों द्वारा बहुत कुछ प्रकाश भी डाला है किन्तु उनकी गूंज (Announcement) विशेष कर शहरों तक ही पहुँच पाई है और बिचारी गरीब ग्रामीण जनता अभी तक इन सब योगों से पूर्णतया अनभिज्ञ है। अतः मेरी यह हार्दिक इच्छा है कि इन सब योगों को तथा साधारण २ जड़ी-बूटियों के गुणों का संग्रह करके सर्व साधारण जन समाज तक पहुँचाने की चेष्टा कर सकूं। इस पुस्तक में आयुर्वेदिक तथा इङ्गलिश दोनों ही प्रकार की पेटेन्ट मेडीसन्स के योग दिये जा रहे हैं और साथ ही प्रत्येक रोग पर सैकड़ों ही जड़ी-बूटियों के योग

भी लिखे गये हैं कि जिससे सर्व साधारण जन समाज का बहुत कुछ हित होने की सम्भावना की जा सकती है।

यद्यपि मुझको इन सब इङ्गलिश पेटेन्ट मेडीसन्स के योगों के लिखने की विशेष आवश्यकता न थी, क्योंकि इस प्रकार के योग तो पहले ही बहुत सी पुस्तकों में प्रकाशित हो चुके हैं, केवल मुझको तो अपनी साधारण २ जड़ी बूटियों का ही परिचय कराना था किन्तु हमारे बहुत से धनिक महाशय तथा नई रोशनी के कुछ बाबू लोग (newlightened young) हमारी इन जड़ी बूटियों पर विश्वास नही करते और इसी कारण इनके घरों मे पेटेन्ट मेडीसन्स की भरमार लगी रहती है सो उनको विश्वास दिलाया जाता है कि ये पेटेन्ट मेडीसन्स कोई निराली चीज नही है किन्तु हमारे घर तथा वनों में पैदा हुई इन साधारण २ जड़ी बूटियों (Herbs) के ही योग है जो नाना प्रकार की उत्तमोत्तम शीशियों में रंग बिरंगे लेबिल्स के लगे रहने के कारण सर्व साधारण पर प्रगट नही हो पाता।

जगन्नियन्ता ईश्वर को कोटिशः धन्यवाद है कि उसने हमारे भरण पोषण तथा रोग निवारण निमित्त पहाड़ तथा जंगलों में कैसी २ अद्भुत जड़ी बूटियां उत्पन्न कर दी हैं जो समयानुसार प्रत्येक स्थान से सहज में ही प्राप्त की जा सकती हैं और ये जड़ी बूटियां हमारे घर तथा वनों से हमारे सुदूर्वर्ती वैद्य तथा डाक्टरों के पास पहुँचती हैं, जिनके द्वारा हमारे जीवनोपयोगी कैसे २ अनुपम योग तैयार किये जाते हैं। अब चतुर पाठकों का कर्त्तव्य है कि सब मिल कर हमारी इन साधारण २ जड़ी बूटियों का परिचय प्राप्त करें। मुझको इस पुस्तक द्वारा आपको इतना ही परिचय कराना है कि अमुक-अमुक जड़ी बूटी की जड़, छाल पत्ते तथा फल फूल अमुक २ रोगों में काम आते है। इनमें से बहुत सी चीजें तो हमारे घर

के आस पास ही लगी हुई मिल जाती हैं यथा—गुड़, तेल, घृत, नमक, मिरच, प्याज, लहसुन, हल्दी, गेहूं, मूंग, चावल, नीम, आक, तुलसी, धतुर, बबूल, जाल तथा गूंदी आदि इनमें भगवान के कैसे २ पुष्ट प्रभाव तथा रोग नाशक गुण बनाये हैं परन्तु शोक है! कि आज हम इनके गुण, कर्म, प्रभाव तथा शक्ति को न जानने के कारण साधारण २ रोगों के निमित्त भी वैद्य तथा डाक्टरों के दरवाजे खट खटाया करते हैं। ये वैद्य तथा डाक्टर भी धनवान रोगी की जैसी चिकित्सा करते हैं वैसी गरीबों के रोगों पर ध्यान नहीं देते क्योंकि यह बात प्रत्यक्ष है जैसे ये लोग धनवानों के लिये बहुत कीमती कीमती दवाइयां लिख कर मनमाना पैसा ले लेते है, वैसे ही गरीबों के लिये साधारण सौंठ तथा मिर्च देकर ही चंगा कर लेते है। कई समय ऐसा भी देखा जाता है कि कोई २ असाध्य रोगी वर्षों तक वैद्य तथा डाक्टरों की कीमती २ दवाइयां लेते २ थक जाते है और रोग दूर नहीं होता किन्तु जब ये भूले भटके किसी साधु महात्मा के पास पहुंच जाते हैं तो साधु महात्मा इनको साधारण जड़ी बूटी देकर ही चगा कर देते हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि हमारी इन साधारण जड़ी-बूटियों का भली भांति परिचय प्राप्त करके विधिवत पालन किया जावे तो इनका गुण हमारे बड़े २ वैद्यों के बनाये चन्द्रोदय तथा मकरध्वज और बड़े २ डाक्टरों के प्रसिद्ध इन्जेक्शनों से किसी प्रकार कम नहीं रह सकता। मैंने यही सोच विचार कर प्रत्येक रोगों पर अनेकों जड़ी बूटियों के योग दिये हैं जिनका परिचय प्राप्त कर लेने पर हमारा साधारण पढ़ा लिखा मनुष्य भी अपने साथ अपने परिवार की चिकित्सा बिना किसी वैद्य तथा डाक्टर की सहायता के स्वयं कर सकता है। आप लोग अपने साधारण २ रोगों के लिये भी विचारे वैद्य तथा डाक्टर को कष्ट देने जाने

है सो न देवे। क्योंकि आरम्भ मे रोगों की प्रवृत्ति साधारण ही हुआ करती हैं और इन सब की चिकित्सा भी साधारण जड़ी-बूटियों के द्वारा ही की जा सकती है किन्तु आप लोगों को हमारी इन साधारण २ जड़ी-बूटियों का भी ज्ञान नहीं है और इसी कारण अपने रोगों को बढ़ाते रहते है, जब रोग की अत्यन्त वृद्धि हो जाती है तब थकित होकर इन वैद्य तथा डाक्टरों को कष्ट दिया जाता है और इस समय इन लोगों को भी रोग की शांति निमित्त बड़ा परिश्रम तथा उपचार करना पड़ता है और रोगी को तो जो कुछ कष्ट होता है उसको तो स्वयं रोगी ही जान सकता है। अत. सर्व प्रथम तो अपने रोगों की शांति प्रीत्यर्थ अपने विलास प्रियता रूपी भोगों की कमी करें क्योंकि सर्व रोगों की उत्पत्ति स्थान विलास प्रियता की सामग्री ही कही जा सकती है। दूसरे प्राकृतिक नियम पालन करने मे सदैव कटिबद्ध रहें। तीसरे अपनी इन साधारण २ जड़ी-बूटियों का परिचय तथा पालन अवश्य करो, केवल औषधालय, शफाखाने तथा वैद्य डाक्टरों पर निर्भर न बैठे रहें। चौथे इस पुस्तक को सदैव अपने घर में रखो और इसको आद्योपान्त पढ़ने का परिश्रम करो।

इस पुस्तक को यदि आप घर का डाक्टर (Family Doctor) भी कहें तो अत्युक्ति न होगी, क्योंकि इसमें क्या पुरुष तथा स्त्रियां सभी के शरीरों मे व्यापने वाले प्राय. मुख्य २ सभी रोगों पर प्रकाश डाला गया है। ऐसे स्थान तथा ग्रामों में जहां न शफाखाना है और न वैद्य तथा डाक्टर। वहां यह पुस्तक एक सच्चे वैद्य तथा डाक्टर का काम दे सकती है। अब विशेष क्या लिखें —"हाथ कंगन को आरसी क्या है"। बुद्धिमान पाठक पढ़ कर स्वयं ही अनुभव कर सकेंगे।

स्वामी नारायण पी एू०

॥ ॐ ॥

नमः विश्वम्भराय जगदीश्वराय !

Family Doctor

श्री नारायण

अनुभव रोग चिकित्सा

सर्वेत्र सुखिनः सन्तु सर्वेसन्तु निरामयः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखमाप्नुयात् ॥

रोगों की कल्पना

यों तो चारों युगों से प्राणियों के शरीर में रोगों का प्रवेश करना और औषधियों द्वारा निरोग होना चला ही आता है पर जीवों की जो दुर्दशा इन भयंकर रोगों ने इस कलियुग में करदी है और होती रहती है ऐसी दशा किसी समय किसी इतिहास पुराण द्वारा सुनने में नहीं आई। अनेक ग्रन्थों के अवलोकन करने से यह बात निर्विवाद सिद्ध हो जाती है कि पहले युगों में हजारों में कोई एक रोगी हो जाता था तो ग्राम में सर्वत्र धूम मच जाती थी कि अमुक प्राणी रुग्ण (रोगी) हो गया है। यहां तक कि हजार में एक का रोगी होना भी सर्व साधारण में आश्चर्य जनक था किन्तु आज हजार में एक का निरोगी

होना आश्चर्य समझा जाता है। बात भी सच है ! वर्तमान काल मे रोग ने छोटे बड़े, मूर्ख, विद्वान, राजा रंक सबों पर अपना ऐसा शासन जमा रखा है कि जिसके कारण एक २ घर में दो चार को अपने वशीभूत अवश्य रखता है और जब जिस समय जो चाहता है खिलाता है और जिस करवट चाहे सुलाता है। किसी समय मे एक बूढ़ा सा वैद्य किसी कोने में निवास करता था जो नगर भर के रोगियों को निरोग कर लिया करता था किन्तु आज नगर २ मे वैद्य, हकीम, डाक्टर ठौर २ साइन बोर्ड (Sign Board) संकेत पट्टिका द्वार पर लगाये बैठे हैं। भारत सरकार की ओर से स्थान २ पर औषधालय खोल रखे हैं, रेलवे स्टेशनों पर एक २ डाक्टर अलग ही प्लेग इत्यादि का प्रबन्ध कर रहा है। यदि १००० मनुष्यों की नाड़ी परीक्षा की जावे तो ९९९ का वीर्य भ्रष्ट और दग्ध पाया जावेगा। किसी अस्पताल (Hospital) को जाकर देखिये। कैसा भयंकर दृश्य हृदय को डोला देने वाला देख पड़ता है, सैकड़ों रोगी त्राहि २ करते कराहते मैले कुचैले दुर्गंध बिछावनों पर पड़े हैं. किसी की आंख में पट्टी बंधी है, किसी के कान में पिचकारियां चल रही हैं, किसी की टांग आधी कटी देख पड़ती है। किसी का हाथ, किसी की अंगुलियां, किसी की जिह्वा, किसी की नाक सड़ी गली देख पड़ती है। मारे दुर्गंध में एक क्षण ठहरना कठिन जान पड़ता है और ऐसा बोध होता है कि मानों यथार्थ नरक यही है, देखते ही अपने पाप कर्म स्मरण हो आते हैं तो सारा शरीर कंपायमान हो जाता है और त्राहि नारायण ! त्राहि नारायण !! कहते हुए परमात्मा से यही प्रार्थना करनी पड़ती है कि हे दयामय ! बचाना !! बचाना !!! पापों से उद्धार करना !

यह शरीर सर्व प्रकार के साधनों का द्वार है। जप, तप, ज्ञान

ध्यान, योग, यज्ञ, शम, दम इत्यादि सब इसी शरीर द्वारा सिद्ध किये जाते हैं, जब तक यह नीरोग रहता है सर्व प्रकार के पुरुपार्थ करने को समर्थ रहता है। खाना, पीना, सोना, बैठना, चलना, फिरना, नाच, रंग, तमाशे, राग, तान, गाने, बजाने सब सुहावने लगते हैं और सबों में आनन्द का भान होने लगता है पर जिस समय यह रोगी हो जाता है तो कोई बात अच्छी नहीं लगती, इन्द्र का भी राज अच्छा नहीं लगता, फिर तो यह शरीर ठीक २ नरक जान पड़ता है, लौकिक, पार लौकिक किसी प्रकार का साधन इससे नहीं बन पड़ता।

धर्म अर्थ काम मोक्षाणां मूल मुक्त कलेवरम् ॥

अर्थात्—धर्म, अर्थ काम और मोक्ष चारों पदार्थों के साधन का मूल शरीर है इसलिए इसको अवश्य नीरोग रखना चाहिये तप और स्वाध्याय इत्यादि धर्मों को ब्रह्मचर्य व्रत को और आयु को हरने वाले रोग सर्वत्र जहां तहां फैले हुए हैं, ये रोग शरीर के दुर्बल करने वाले बल के क्षय करने वाले, देह की चेष्टा हरने वाले इन्द्रियों की शक्ति के क्षय करने वाले, सब अङ्गों मे पीड़ा करने वाले धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में बलात्कार उपद्रव करने वाले और शीघ्र प्राण के हरने वाले जब तक शरीर मे प्रवेश किये देखे जाते हैं तब तक प्राणियों को कल्याण कहां है अर्थात् नहीं है।

अब बुद्धिमान पाठक विचार करें कि सब रोगों के उत्पन्न होने का मुख्य कारण क्या है? थोड़ा ही विचारने के पश्चात् सब बातें ठीक २ प्रगट हो जावेगी। यह शरीर कफ, पित्त और वायु के संयोग से स्थित है, जब तक ये तीनों ठीक ठीक अपने २ स्थान पर अपने २ प्रमाण के अनुसार अपने २ कार्य को कर रहे हैं और ठीक समय पर परिपक्व हो शरीर की मुख्य नाड़ियों में प्रवेश कर शरीर को रोम २ मे उचित रीति से पहुँचा देते

हैं तब तक किसी प्रकार का उपद्रव शरीर में नहीं होता किन्तु जब ये तीनों ठीक २ परिपक्व न होकर कच्चे रह जाने के कारण दूषित हो जाते हैं तब नाना प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं। तीनों कच्चे क्यों रह जाते हैं? जठराग्नि के कम हो जाने से। जठराग्नि क्यों कम हो जाती है? धातु स्थान अर्थात् वीर्य की निर्बलता से कम होती है? वीर्य की निर्बलता क्यों होती है? धातु स्थान मे उष्णता की अधिकता होने से होती है। धातु स्थान मे उष्णता अर्थात् गरमी क्यो होती है? शरीर की नाड़ियों मे अन्न के परमाणुओं के जम जाने से होती है। हम लोग जितने प्रकार के अन्न नित्य भोजन करते है वे जब पक्व होने लगते है तब उनके छोटे २ परमाणु शरीर मे फैल कर नाड़ियो मे जा लिपटते है. परमाणु प्रतिदिन यत्न पूर्वक नाड़ियो से यदि न निकाले जाय तो जमते २ जम जाते है।

सब छोटे बड़े इस बात को भली भांति जानते है कि अपने अपने घर मे भोजन पश्चात जिस नाली मे हाथ मुंह धोते है वहां नित्य अन्न के छोटे २ टुकड़ों के एकत्र होने से जमते २ अन्न के स्तर के स्तर अर्थात तह के तह बन जाते हैं। यदि उस घर के रहने वालो ने उसे दस पांच दिन पर बाहर निकाल जल द्वारा नाली को शुद्ध करवा दिया तो अति उत्तम नहीं तो वे स्तर जमते २ थोड़े दिनों के पश्चात विषैले हो जाते है अर्थात उनके परमाणु अति उष्ण होकर विष से भर जाते है और उनमें कीड़े उत्पन्न हो वायु मे प्रवेश कर नाना प्रकार के रोग उत्पन्न करते है। मैंने प्राय देखा है कि जो मनुष्य अत्यन्त पंकिल और मलीमस अर्थात स्वभाव के मलिन हैं उनके घर की नालियों मे सड़े हुए स्तर इस प्रकार जम जाते है कि उनमें बड़े २ पिल्लु चलते हुए देख पड़ते है और उस घर मे मारे दुर्गन्ध के नाक नहीं दी जा सकती, मस्तक मे चक्कर आ जाता

है और इसी कारण उस घर के बाल बच्चे प्लेग (विसूचिका) इत्यादि रोगों से पीड़ित हो काल के गाल में प्रवेश कर जाते हैं। भिन्न २ नगरों में भी प्लेग इत्यादि रोगों के अधिक फैलने का कारण यही है कि शहरों के बीच होकर घरों के आगे खुली हुई नालियां नगर भर के मल मूत्र युक्त पानी को लिये चल रही हैं जिनसे ऐसे असह्य दुर्गन्ध निकल रहे हैं कि भले पुरुषों का शहर की सड़कों पर चलना मानो नरक की गलियों में चलना है। अतः नगरों तथा घरों की नालियों के दुर्गन्ध से बचने का प्रबन्ध अवश्य करें।

कहने का अभिप्राय यह है कि विषैले परमाणुओं के शरीर की नाड़ियों में जम जाने से जो उष्णता उत्पन्न होकर धातु स्थान को निर्बल करती हुई जठराग्नि को मन्द कर कफ, पित्त, वायु में विकार डाल रोगों को उत्पन्न करता है, उस उष्णता के दूर करने का यत्न करे अर्थात् अन्न के परमाणुओं को शरीर की नाड़ियों में जमने न देवे। न परमाणु जमेंगे न उष्णता उत्पन्न हो धातु स्थान को निर्बल करेगी, न जठराग्नि मन्द हो परिपाक शक्ति को नष्ट करेगी, न कफ, पित्त, वायु दूषित होंगे और न किसी प्रकार का रोग होगा। शास्त्र में चार प्रकार के रोगों का वर्णन पाया जाता है। और इनसे प्रायः समस्त संसार के प्राणी न्यूनाधिकता रूप में अवश्य ग्रसित देखे जाते हैं। अब इनकी न्यारी २ परिभाषा की जाती है पाठक स्वयं विचार करें--

१. स्वभाविक रोग - क्षुधा, पिपासा, नींद, बुढ़ापा, जन्म, तथा मृत्यु आदि सब स्वभाविक रोग कहे जाते हैं।

२. मानसिक रोग—काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, अभिमान, पराधीनता, दम्भ, दर्प, हर्ष, शोक, खेद, ईर्षा, असुया, मृगी मूर्छा तथा भ्रमादिक सब मानसिक रोग कहे जाते हैं।

३. आगन्तुक रोग—जन्मान्धता तथा लकड़ी, पत्थर,

शस्त्रादि के जो दुख है वे सब आगन्तुक रोग कहे जाते हैं।

४—शारीरिक रोग—ज्वर, अतिसार, खांसी, श्वांस, हैजा, कुष्ट, भगन्दर तथा जलोदरादि शरीर में व्यापने वाले शारीरिक रोग कहे जाते हैं। इस पुस्तक में शारीरिक रोगों पर ही प्रकाश डाला जायगा। और प्रत्येक रोग की बहुत ही सुगम चिकित्सा प्रायः जड़ी बूटियों के रूप मे वर्णन की जावेगी, कि जिनके द्वारा साधारण पढ़ा लिखा मनुष्य भी अपनी तथा अपने परिवार की चिकित्सा बिना किसी वैद्य तथा डाक्टर के स्वयं कर सकता है। अब आयुर्वेदिक शास्त्रो के आधार पर कितने प्रकार की औषधियां निर्माण की जाती है। सो सब विषय संक्षेपतया पाठकों के हितार्थ वर्णन किया जाता है।

आयुर्वेदिक औषधियों के नाम व परिभाषा

आयुर्वेदिक नियमों के आधार पर पांच प्रकार के काढ़े, चूर्ण, वटी, अवलेह घृत तथा तेल आदि बनाये जाते है जिनकी विधि संक्षेपतया इस प्रकार वर्णन की गई है।

पांच प्रकार के काढों की परिभाषा

१ स्वरस, २ कल्क, क्वाथ, हिम तथा फांट इन पांचों को कषाय (काढ़ा) कहते है। यह एक की अपेक्षा दूसरा हल्का है, जैसे स्वरस की अपेक्षा कल्क हल्का है और कल्क की अपेक्षा क्वाथ हल्का होता है, क्वाथ की अपेक्षा हिम और हिम की अपेक्षा फांट हल्का होता है। अब इन पांचों की भिन्न २ परिभाषा वर्णन की जाती है।

१—स्वरस परिभाषा

स्वरस क्रिया तीन प्रकार से सिद्ध मानी जाती है। प्रथम जो वनस्पति शुद्ध तथा ताजा लाई गई हो, किसी प्रकार के कीड़े

मकोड़ों की दूषित न हो, उसको खूब कूट तथा कपड़े में से निचोड़ कर रस निकालने का नाम स्वरस कहा जाता है।

दूसरी विधि यह है कि १६ रुपया भर सूखी औषधि को खूब कूट कर चूर्ण बना डालो उस चूर्ण का दुगना (३२ तोला) पानी के साथ डाल कर आठ पहर भीगने दो और फिर उसको कपड़े में से निचोड़ कर रस निकाल डालो। बस यह स्वरस क्रिया द्वितीय प्रकार से सिद्ध जानना। तीसरी विधि यह है जितनी सूखी औषधि हो उससे आठ गुना पानी ले दोनों को मृतिका के पात्र में डाल अग्नि द्वारा खूब औटाओ जब चौथा हिस्सा शेष रह जावे तब उतार कर कपड़े में छान लो यह स्वरस क्रिया तीसरे प्रकार से सिद्ध हुई जानना।

२ कल्क परिभाषा

गीली वनस्पति को चटनी की तरह बारीक पीसो। बस इसी का नाम कल्क है। कल्क की मात्रा १ तोला भर की है। कल्क में यदि मधु, घृत, तथा तेल मिलाने की आज्ञा हो तो औषधि मात्र से द्विगुण मिलाओ और शकर या गुड़ मिलाना हो तो औषधि के बराबर तथा दूध या पानी मिलाना हो तो मात्रा से चार गुणा मिलाना चाहिये।

३ क्वाथ परिभाषा

क्वाथ अर्थात काढ़ा को संस्कृत में कषाय, निर्यूह ये पर्य्याय वाचक शब्द है। इसके बनाने की क्रिया यह है। कि ४ रुपया भर औषधि और ६४) रुपया भर पानी को मिट्टी के पात्र में डाल कर मन्द २ आंच से औटावे, हांडी का मुख खुला रहने दो बन्द करने से क्वाथ ठीक नहीं बनता। जब आठ रुपया भर पानी शेष रहे तब उतार कर छान लो और कुछ गरम रहते पी जाओ बस इसी नाम क्वाथ या काढ़ा है। क्वाथ की मात्रा ४ तोला

उत्तम, ३ तोला मध्यम और २ तोला निकृष्ट कहलाती है।

४ क्वाथ में मिलाने के पदार्थों का प्रयोग

यह है कि शक्कर डालना हो तो क्वाथ के प्रमाण से वात रोगों मे चतुर्थांश, पित्त रोगों मे अष्टमांश और कफ रोगों से सोलवां अंश डालो। यदि मधु (शहद) मिलाना हो तो वायु मे १६वां अंश, पित्त में ८ वां अंश, कफ में चतुर्थांश और जीरा गूगल, यवाखार नोंन, हींग, त्रिकुटा (सोंठ, मिरच, पीपल) आदि पदार्थ क्वाथ मे ६ माशा डालना चाहिये।

५ हिम परिभाषा

चार तोला औषधि को कूट कर २४ तोला पानी के साथ मिट्टी के पात्र में भीगने दो और प्रातः काल छान कर पी जावो बस इसी का नाम हिम (ठण्डा) क्वाथ है। इसकी मात्रा ८ तोला प्रमाण की है। हिम मे जो वस्तु मिलानी हो तो उसको प्रमाणानुसार ही मिलाना चाहिये।

६ फांट परिभाषा

४ तोला वनस्पति का महीन चूर्ण कर रख छोड़े। फिर मिट्टी की हांडी मे पाव भर पानी डाल कर चूल्हे पर चढ़ावे जब वह औटने लगे तब रखे हुए चूर्ण को उसमे डाल कर कुछ काल बाद उतार कपडे से छान लेवे। बस इसी का नाम फांट क्रिया है। इसकी मात्रा ८ तोला तक की है। फांट में गुड, शक्कर तथा मधु आदि पदार्थ मिलाना हो तो क्वाथ के प्रमाणानुसार मिलाना चाहिये।

७ चूर्ण परिभाषा

अत्यन्त सूखी वनस्पति को कूट कर कपड छन करलो, बस इसी का नाम चूर्ण है। चूर्ण की मात्रा १ तोला भर की है। चूर्ण

में गुड़ मिलाना हो तो समान, मिश्री चूर्ण से दुगुनी, पकी हुई हींग अनुमान माफिक। मधु अथवा और कोई चिकना पदार्थ मिलाना हो तो चूर्ण से चौगुना मिलाओ, यदि नीबू का रस आदि में पुट देना हो तो उस रस में चूर्ण पूर्णतया भीग जाना चाहिये।

८—अवलेह परिभाषा

औषधियों के कषाय, फॉट तथा काढ़ा को पुन: औटाओ। इस प्रकार गाढा करने से जो रस कम होता है उसको अवलेह और लेह क्रिया कहते हैं। इसकी मात्रा १ पल अर्थात ४ तोला तक की है। इसमें खांड डालनी हो तो चूर्ण से चौगुना डालो यदि गुड़ डालना हो तो चूर्ण से दुगुना और गौ मूत्र, दूध तथा पानी आदि द्रव पदार्थ डालना हो तो चूर्ण से चौगुना डालो। यह अवलेह अच्छा पका या नहीं ? इसकी परीक्षा यह है कि हाथ के लगाने से तांत छूटते हैं और पानी में डालने से यह अवलेह डूब जाता है और अंगुलियों में दबाने से करड़ा, चिकना विदित होता है तथा उसमें किसी एक प्रकार की अपूर्व गन्ध वर्ण और स्वाद उत्पन्न होता है। इन लक्षणों से अवलेह अच्छा परिपक्व हुआ जानना। दूध, ईख का रस, पंच मूल का काढ़ा, यूप और अडूसा का काढ़ा इस अवलेह के अनुमान हैं। तिनमें रोगी की योग्यता अनुसार विचार कर अनुमान देना चाहिए।

९—वटी गोली परिभाषा

गुटिका, वटी, मोदक, वटिका, पिंटी, गुड और वर्त्ती ये सात नाम वटी गोली) के पर्य्याय वाचक हैं। इनके बनाने की क्रिया यह है कि गुड़ खांड या गूगल का पाक करके उसमें चूर्ण मिला कर घी से गोली बनावे। यदि खांड या मिश्री डाल कर गोली बनाना हो तो चूर्ण से चौगुना डाल कर बनावे और गूगल तथा

शहद डाल कर गोली बनाना हो तो गूगल और शहद चूर्ण के समान भाग लेकर गोली बनावे, और पानी या दूध आदि द्रव पदार्थ डाल कर गोली बनाना हो तो चूर्ण से दुगुना डाल कर बनाना चाहिये।

१० घृत और तेल बनाने की परिभाषा

जिन वनस्पतियों का घृत या तेल बनाना हो तो पहले उनका कल्क बनाओ और फिर उससे चौगुणा घृत या तेल लेकर मिट्टी के चिकने पात्र या लोहे की कड़ाही मे डाल दो और उसमें ही गौ मूत्र तथा दूध आदि जो भी पदार्थ लिखे हों वे सब डाल उस पात्र को चूल्हे पर चढ़ा दो। जब आंच देते २ केवल घृत या तेल मात्र शेष रह जावे और दूसरे पदार्थ सब जल जावे तब उतार कर छान डालो और बोतलों मे भर दो। बस यही तेल या घृत प्रस्तुत हो गया। इसकी मात्रा ४ तोले तक की होती है। इसमें दूध, दही तथा गौ मूत्र आदि पदार्थ डालना हो तो तेल या घृत से चार गुना अधिक डालना चाहिये।

११ भस्म (रसादिक) परिभाषा

सोना, चांदी, तांबा तथा लोहा आदि धातुओं को रासायिनिक क्रिया द्वारा जो फूंका जाता है उसको भस्म (रसादिक) कहते हैं। इनका बनाना जरा कठिन है किसी योग्य महात्मा तथा वैद्य के समीप रह कर अनुभव करना चाहिये प्रसङ्गानुसार भस्म आदि बनाने की क्रिया सूक्ष्म रूप मे दिग्दर्शन मात्र लिखी जावेंगी। आयुर्वेदिक ढग से बस ये उपरोक्त दस प्रकार की औषधिया भिन्न २ योगों सहित तैयार की जाती है। औषधियों की तोल नाप तथा मात्रा का अवश्य ध्यान रखना चाहिये। अब पाठकों को औषधियों की भिन्न २ तोल नाप का विवरण पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर देखना चाहिये।

स्वास्थ्य रक्षा तथा प्राकृतिक नियम

नोट इसके लिए मेरी लिखी स्वास्थ्य कुन्जिका तथा प्राकृतिक नियम पालन नामक पुस्तक को देखो ! इसमें मैंने स्वास्थ्य रक्षा के नियम ऋतुचर्या, दिनचर्या, रात्रिचर्या, तथा प्राकृतिक नियम पालन विधि सविस्तार वर्णन की हैं अब यहाँ पर नाड़ी परीक्षा पर कुछ सूक्ष्म रूप में प्रकाश डाला जाता है कि जिससे हमारे पाठकों को नाड़ी के देखते ही रोगों की पहिचान हो जावे।

नाड़ी परीक्षा विचार

संसार में जितने शारीरिक रोगों की गणना हमारे आयुर्वेदाचार्यों ने की है उन सब का निदान नाड़ी द्वारा ही यथेष्ट किया जा सकता है। जिस वैद्य को नाड़ी का ज्ञान नहीं वह किसी प्रकार भी रोगों को नहीं समझ सकता और न किसी उचित औषधी को ही निर्धारित कर सकता है। इसी लिए हमारे जितने चिकित्सा ग्रन्थ है उन सब में प्रथम नाड़ी चिकित्सा को ही मुख्य माना है। यदि वैसे तो देखा जाय तो शरीर में इतनी नाड़ियां हैं कि जिनका विधि पूर्वक योग शास्त्र के आधार पर अनुसन्धान किया जाय तो सारी आयु समाप्त हो जाय तो भी भेद नहीं पा सकते. किन्तु रोगों की चिकित्सा के लिए केवल एक ही नाड़ी को मुख्य माना है, वह धमनी नाड़ी के नाम से प्रख्यात है, इसका स्थान हाथ के अंगुष्ठ की जड़ मे वर्तमान है अत बुद्धिमान तथा अनुभवी वैद्य प्रथम इस नाड़ी की चाल के द्वारा रोगों का निदान कर तत्पश्चात् कोई औषधि निर्माण करते हैं। इसकी चाल को पहिचानने के लिए यहां पर सूक्ष्म रूप में दिग्दर्शन मात्र कराया जाता है, विशेष परिचय के लिए आयुर्वेदिक महान शास्त्रों के अवलोकन की आवश्यकता है।

आप लोगों ने आधुनिक विज्ञानवादियों के द्वारा बनाई हुई घड़ी को तो अवश्य ही देखा होगा? इसमें जितने पुर्जे अर्थात् मशीन है उन सब का केन्द्र चाबी (wind) है, जब तक घड़ी मे चाबी दी हुई रहती है, घड़ी टक! टक! शब्द करती हुई समय का ज्ञान कराती रहती है और जहां चाबी बन्द हुई की स्प्रिङ्ग की मशीन बिखर जाती है, तब न शब्द होता है और न समय का ही ज्ञान। बस इसी प्रकार हमारे शरीर का भी नाड़ी से सम्बन्ध है। जब तक शरीर नीरोग रहता है तब तक नाड़ी अपने नियुक्त स्थान पर शब्द करती हुई बराबर चलती रहती है और जहां शरीर मे कोई अड़चन पैदा हुई कि स्थानान्तर इधर उधर दौड़ने लगती है और जब इसकी दौड़ नितान्त बन्द हो जाती है तब शरीर एक दम मृतक हो जाता है अत. हमारे पूर्व आयुर्वेदाचार्यो ने सर्व प्रथम नाड़ी की चाल द्वारा ही सैकड़ों रोगों का निदान लिखा है और उसकी यथार्थ चाल का बोध भी कराया है सो सुनिये—

शरीर में जितने रोग पैदा होते हैं वे सब कफ, पित्त तथा वायु आदि दोषों के दूषित होने से ही होते हैं और इसलिए इस नाड़ी की चाल भी इन तीनों की स्थिति के अधार पर ही वर्णन की है कि जिससे प्रत्येक बुद्धिमान चिकित्सक बातज, पित्तज, तथा कफज से होने वाले जितने रोग हैं उन सब का ठीक २ निर्णय नाड़ी की चाल द्वारा ही करले। जब शरीर मे (वायु का प्रकोप होता है तो- नाड़ी जोंक तथा सर्प के समान गमन करती है. और पित्त के प्रकोप पर नाड़ी कुलिंग (घर के चिड़ा) कौआ और मेंढक इनकी गति के समान चलती है, एवं कफ के प्रकोप से नाड़ी हंस और कबूतर के समान चलती है मांसपान मे नाड़ी लवा और बटेर की सी चाल चलती है, दो दोषों के कोप से नाड़ी धीरे २ चल कर तत्काल जल्दी २

चलने लगती है तथा अपने स्थान को अन्यत्र निज गति से चले तो वात, पित्त जानना इत्यादि ।

असाध्य नाड़ी के लक्षण

जो नाड़ी अपने शरीर को त्याग दे अर्थात् उस स्थान से आगे पीछे चलने लगे और जो ठहर २ कर चले, ये दोनों प्रकार की नाड़ी रोगियों के प्राण को नाश करने वाली हैं। जो नाड़ी कुटिल और ऊंची नीची चले तो उस नाड़ी को भी प्राण हरने वाली समझना चाहिये ।

ज्वरादि नाड़ी के लक्षण

सामान्य ज्वर के कोप में नाड़ी गरम और जल्दी २ चलती है। स्त्री आदि की इच्छा होने पर उसके न मिलने से तथा क्रोध से नाड़ी बहुत जल्दी चलती है। एवं चिन्ता (सोच विचार) और भय से नाड़ी अत्यन्त मन्द हो जाती है, तथा रुधिर के कोप से अर्थात् रुधिर पूरित नाड़ी कुछ गरम और भारी होती है। आम युक्त नाड़ी अत्यन्त भारी होती है। जठराग्नि के दुर्बल होने से जो बिना पका हुआ रस शेष रह जाता है उसकी आम संज्ञा है, अथवा आम करके उस स्थान पर आमाजीर्ण जानना ।

उत्तम प्रकृति के लक्षण

जिस पुरुष की जठराग्नि प्रदीप्त होती है उसकी नाड़ी स्थिर बलवती होती है। क्षुधातुर मनुष्य की नाड़ी चंचल होती है और भोजन कर चुका हो उसकी नाड़ी स्थिर होती है। यह नाड़ी परीक्षा विचार संक्षेपतः वर्णन किया गया है ।

१ ज्वर रोग चिकित्सा

— o —

शरीर में जितने रोग होते है उन सब का राजा यह ज्वर देव है यह बली से बली मनुष्य को भी कम्पायमान कर देता है जिस प्रकार सिंह से अनेक वन के पशु दुखित तथा भयभीत रहते है, उसी प्रकार इस ज्वर देव का भय भी सारे संसार मे छाया रहता है। हाथी कितना बडा तथा बली जानवर होता है परन्तु यह भी जब ज्वर देव के झपाटे में आ जाता है तो एक दम चीख मारने लगता है। कहने का अभिप्राय यह है कि ज्वर देव इतने निर्दयी है कि इनको किसी पर दया नहीं आती इनकी जब सवारी आती है तब शरीर को पहिले ही सूचना मिल जाती है अर्थात् शरीर एक दम गरम हो जाता है पसीना नहीं निकलता, भूख एक दम बन्द हो जाती है, अंग जकड़ता है, मस्तिष्क मे पीड़ा हो जाती है और हाथ पैर टूटने लगते है तथा वमन (उल्टी, कै) तृषा (प्यास) अतिसार (दस्त होना, कब्जी, हिचकी, खांसी, अरुचि तथा संपूर्ण शरीर मे दाह उत्पन्न हो जाती है। जब शरीर मे इस प्रकार के लक्षण जान पड़े तो जान लेना चाहिए कि ज्वर देव की सवारी आन पहुंची है।

वैद्यक शास्त्रो में इस ज्वर देव के कितने ही भेद लिखे हैं जिनमें मुख्य ८ भेद होते है यथा—वात ज्वर, पित्त ज्वर, कफ ज्वर, वात कफ ज्वर, वात पित्त ज्वर, पित्त कफ ज्वर। वातादिक तीनों दोषों के मिलने से एक सन्निपात ज्वर होता है। आठवां आगंतुक ज्वर कहलाता है। इनके भी परस्पर में कई भेद होते है जिनका विस्तार पूर्वक लक्षण तथा भेद 'चरक' 'सुश्रुत' 'भाव प्रकाश' 'शार्ङ्गधर' तथा चक्रदत्त आदि प्रसिद्ध

ग्रन्थों में वर्णन किये गये हैं और साथ ही सैकड़ों प्रकार की औषधियां भी वर्णन की गई हैं सो सब इस छोटी सी पुस्तक में नहीं दी जा सकती। अत उनमें से कुछ मुख्य २ सुगम तथा सुलभ औषधियों के ही प्रयोग देने की इच्छा कर रहा हूँ कि जिससे साधारण पढ़ा लिखा मनुष्य भी अपनी तथा अपने परिवार की चिकित्सा बिना किसी वैद्य तथा डाक्टर के स्वयं कर सके। और साथ ही साथ हमारे कुछ सुप्रसिद्ध वैद्य तथा डाक्टरों की पेटेन्ट औषधियों के प्रयोग दिये जा रहे हैं जिनको हमारे सुबोध पाठक सहज में ही बना कर उपयोग में ले सकते हैं।

ज्वर मात्र पर चिकित्सा

१ सामान्य ज्वर पर पहिले शास्त्र में किसी औषधी का न लेना ही पथ्य कहा है केवल गर्म जल पीना हलके लंघन करना, हलका पथ्य करना, वायु रहित स्थान में रहना। ज्वर आने के तीन दिन तक किसी भी प्रकार की कड़वी, कषैली औषधि तथा जुलाब न लेना। तीन दिन के पश्चात् २ माशा सोंठ और १ माशा धनिया का क्वाथ बना कर पीने से सामान्य ज्वर दूर हो जाता है और भूख लगती है।

२—नीम की जड़, फल, फूल, पत्ता तथा छाल (पंचाङ्ग) १२ टंक। सोंठ ६ टंक काली मिरच २ टंक छोटी पीपल ३ टंक त्रिफला (हरड़ बहेड़ा, आंवला) ६ टंक। जवाखार ३ टंक। ये सब दवा कूट कपड़छन करके रख लेवे और २ टंक दवा गरम पानी के साथ खाय तो सर्व प्रकार के ज्वर नाश हों। यह नीम पंचाङ्ग सब ज्वर नाशक औषधि है।

३—चढ़े हुए ज्वर में अतीस के चूर्ण की फंकी देने से पसीना आकर ज्वर उतर जाता है इसको ५ रत्ती फंकी देने से ज्वर की गरमी कम होती है। इससे वमन और हल्लास (जी मचलना) नहीं होता है। अतीस के चूर्ण की मात्रा शक्ति अनुसार २ माशा से ४ माशा तक देने से तुरन्त फैलने वाला बुखार उतर जाता है।

४—आक की जड़ का चूर्ण को २॥ रत्ती फक्की देने से पसीना आ कर सब प्रकार के ज्वर उतर जाते है।

५—ओंगा के जड की रस की २ या तीन दिन नस्य देने से वारी से आने वाला ज्वर छूटता है।

६—ओंगा के पत्तों को काली मिरच और लहसुन के साथ घोट कर गोलियां बना कर देने से सर्दी से आने वाला ज्वर उतर जाता है।

७—अड़से की जड़ के चूर्ण की फक्की देने से मौसमी बुखार उतर जाता है।

८—अड़ूसे के पत्तों को मिश्री के साथ औटा कर छान के पिलाने से ज्वर की गर्मी से बढ़ी हुई घबराहट मिट जाती है।

९—अड़ूसे के पत्तों का पुट पाक कर उनका रस निकाल कर मधु (शहद) के साथ पीस कर पिलाने से पित्त का कास (खांसी) और ज्वर मिट जाता है।

१०—अड़ूसे का फांट पिलाने से ज्वर में बढ़ी हुई (तृषा) प्यास शान्त होती है।

११—धतूरे के बीजों की भस्म बना के उसकी चार माशा जवान को और १ रत्ती बालक को देने से शीत ज्वर दूर होता है।

१२—ज्वर के वेग को रोकने के लिये अतीस के १० से १५

रत्ती तक चूर्ण तीन २ तथा चार २ घंटा के अन्तर तीन चार बार देना चाहिए।

१३—धतूरे के पत्ते, नागर बेल के पान और काली मिरच गिनती में तीनों बराबर लेकर पीस डालो और उड़द समान गोलियां बनाले। दिन में दो बेर एक २ गोली देने से हर प्रकार का ज्वर (ताप) उतर जाता है।

१४—नीम की छाल का अष्टमांश या दशमांश का क्वाथ बना कर निरन्तर आने वाले ज्वर के छुड़ाने के लिए हर घन्टा देना चाहिये। जो ज्वर दूसरी औषधियों से नहीं जाता वह नीम की छाल को पिलाने से चला जाता है। इस की छाल से एक कड़वा तत्त्व निकलता है जो ज्वर का छोड़ने में बड़ा प्रबल होता है।

१५—बारी से आने वाले बुखार में भी नीम की छाल का क्वाथ दिन में तीन बेर देना चाहिये।

१८—ज्वर छूट जाने के पश्चात् निर्बलता दूर करने के लिये तथा पेट के कीड़े मारने के लिए नीम की छाल का क्वाथ पीना चाहिये।

१९—थोड़े शीत ज्वर को मिटाने के लिये नीम के अन्दर की छाल का क्वाथ दिन मे दो बार पिलाना चाहिये।

२०—पुराना ज्वरातिसार (बुखार तथा दस्त) मिटाने के लिये नीम की छाल का क्वाथ पिलाना चाहिये।

२१ नीम की कोंपल और काली मिरच को घोट कर पीने से बारी का ताप नाश हो जाता है।

२२—नीम के २१ पत्ते और २१ काली मिरच को महीन वस्त्र में पोटली बांध उसको आध सेर पानी में डाल हांडी में औटा, आध पाव रह जावे तब उतार कर थोड़ा गरम २ दिन में दो बार सात दिन तक पिलाने से सब प्रकार के ज्वर उतर जाते हैं।

२३—जिस ज्वर में दाह हो उसमें नीम के कोमल पत्तों को नींबू के रस में पीस कर लेप करने से दाह तथा ज्वर नाश होता है।

नोट—इस नीम में भगवान ने बड़े गुण प्रदान किये हैं। यह ज्वर को तो नाश करने में राम बाण है ही किन्तु हर प्रकार के फोड़ा, फुन्शी, दाद, खुजली, घाव तथा हर प्रकार के रक्त विकार को दूर करने की भी परम औषधी है।

२४—चिरायता और नीम गिलोय बराबर ले औटा कर पिलाने से या दोनों को रात भर ठण्डे पानी में भिगो प्रातःकाल मल छान के पिलाने से बारी से आने वाला तथा अन्य प्रकार के ज्वर उतर जाते हैं।

२५—नीम की सात सींख हरी, २१ काली मिरच, ६ मासा तुलसी पत्र तथा ६ माशा सेंधा नमक को महीन पीस कर वस्त्र की पोटली बांध उसे आध सेर पानी में डाल मिट्टी के बरतन में औटावे जब आध पाव जल रह जावे तब कपड़े से छान कुछ गरम २ पिलादे। इस प्रकार प्रातः सायं दोनों समय पांच या छः दिन तक पिलाने से सर्व प्रकार के ज्वर नाश हो जाते हैं।

२६—आम्लक्यादि चूर्ण—आंवला, चीते की छाल, जगी हरड़, पीपल, सेंधा नमक ये पांच चीजें समान भाग ले चूर्ण करके सेवन करें तो सर्व प्रकार के ज्वर नाश हों। यह चूर्ण दस्तावर भी है।

२७—त्रिफलादि चूर्ण—हरड़ एक, बहेड़ा दो, आंवला चार गुणा लेकर चूर्ण कर लो और सेवन करे तो विषम ज्वर नाश हो।

२८ सुदर्शन चूर्ण—हरड़, बहेड़ा, आवला, हल्दी, दारु हल्दी, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, कपूर, सोंठ, काली मिरच, पीपल पीपलामूल मूर्वा गिलोय प्रत्येक ४ माशा कुटकी, पित्त पापड़ा

नागर मोथा, त्रायमाण, नेत्रवाला, नीम की छाल, पोहकर मूल, मुलैठी, कूड़ा की छाल, अजवायन, इन्द्र जौ, भारंगी, सहिजना के बीज, फिटकरी, वच, दालचीनी, पद्माख, चीत की छाल, देवदारु, चव्य, पटोल पत्र, जीवक, ऋपभक, लौंग, वंसलोचन सफेद कमल, काकोली पत्रज, जावित्री और तालीस पत्र इन ५२ औषधियों को समान भाग लेवे और सब औषधियों का आधा भाग चिरायता लेकर सबको कूट दरदरा चूर्ण करले। इसको सुदर्शन चूर्ण कहते हैं। इसको शीतल जल के साथ लेने से वात, पित्त, कफ, द्वन्द, सन्निपात से होने वाले ज्वर, धातु जन्म ज्वर, मानस ज्वर, सम्पूर्ण शीत ज्वर, एकाहिक आदि ज्वर सबको नाश करे जैसे सुदर्शन चक्र सम्पूर्ण दैत्यों को नाश करता है, वैसे ही सुदर्शन चूर्ण सम्पूर्ण ज्वरों के नाश करने की परमौषधि मानी गई है।

२९—फिटकरी फुलाई को कूट छान कर शीशी में मुंह बन्द करके रख छोड़े। ज्वर चढ़ने से एक या दो घन्टे पहिले ४ रत्ती से ८ रत्ती तक मात्रा चौगुनी देशी चीनी मिला कर देवे। ऊपर से प्यास लगे तो पानी न पीवे केवल दूध पीवे। इससे तिजारी चौथिया तथा सब प्रकार के ज्वर नाश हो जाते हैं।

३०—वनफशा १ तोला, गुलबनफशा १ तोला, नीलोफर १ तोला, मुलैठी १ तोला, गाजुवां २ तोला, और मुनक्का १ छटांक। इन सब दवाओं को दरदरी कूट कर रख छोड़े। इसमें से दो या तीन माशा दवा को पाव भर पानी में उबाल ले जब दो तोला पानी रह जाय तब छान कर पिलादे। इससे ज्वर नाश हो जाते हैं।

३१—मलेरिया ज्वर में काली मिरच को तुलसी के पत्तों के रस में मिला कर सुखा डाले, इस प्रकार सात बार इसको इससे पुट देवे और सुखा डाले, फिर इसकी मटर समान गो

गोलियां बनाकर रख छोड़े। बुखार आने के चार घन्टे पहले एक एक घन्टे के अन्तर से एक २ गोली गरम पानी के साथ निगल जावे तो फिर कभी ज्वर नहीं चढ़ेगा।

३२—दारु हल्दी की छाल में बहुत ही कड़वा सत्व होता है, इसलिये यह बारी से आने वाले ज्वर को तथा विसर्गी और अविसर्गी ज्वर को छुडाने के लिये बहुत उत्तम औषधि है। इसकी जड़ मे भी इसके छाल समान ही गुण हैं ज्वर को रोकने और उतारने में यह कुनैन के बराबर है क्योंकि जो बुखार कुनैन और सखिया आदि के प्रयोग से भी न जावे वह इसके चूर्ण अथवा क्वाथ के देने से छूट जाता है इसकी टहनियों में भी वैसी ही शक्ति है जैसी की जड़ में। इसका क्वाथ निम्नलिखित प्रकार से बनाना चाहिये।

१५ तोला दारु हल्दी की जड़ को दरगच कर एक सेर ६ छटाक जल में मन्द २ आंच से औटावे जब दसवां अन्स रह जावे तब उसमें से ५ तोला से १५ तोला तक आवश्यकतानुसार पिलाना चाहिये। इसके रस का ही रसौत बनता है इसकी विधि यह है—

रसौत बनाने की विधि—दारु हल्दी की जड़ को कूट कर आठ पहर तक पानी में भीगने दो। और फिर मुंह बन्द किये हुए बरतन मे मन्द २ आंच से औटाओ जब उसका क्वाथ गाढ़ा हो जावे तब उसको मल कर छान लो। फिर छने हुए क्वाथ को बालु के यन्त्र पर चढा के मन्द २ आंच मे उसका गाढ़ा करके उतार लो। बस इसी का नाम रसौत है जो नेत्रादि रोग पर कई औसाधियों मे काम आती है।

३३ प्राकृत ज्वर पर—कुनैन, बंसलोचन, छोटी इलायची नींबू का सत्त और मूंगा भस्म सब एक २ तोला लेकर गुलाब के अर्क में घोटे और दो २ रत्ती की गोलियां बनाले। ज्वर चढ़ने

से तीन घंटे पहिले एक २ घंटे में एक २ गोली अजवायन के अर्क के साथ देवे तो ज्वर नहीं चढ़े तथा इसके सेवन से सब प्रकार के मौसमी ज्वर भाग जाते हैं।

३४—आक की जड़ १ छटांक, काली मिरच आधी छटांक तुलसी के पत्ते पाव छटांक। इन सब को कूट कर छोटे बेर के समान गोली बनालो। और एक २ गोली सायं प्रातः ले तो शीत ज्वर नाश होगा।

३५—सजीवनी वटी—वाय विडंग १ तोला, सोंठ १ तोला, गुर्च (गिलोय) १ तोला, वच १ तोला, हरड़ १ तोला, बहेड़ा १ तोला, आवला १ तोला, सोंठ १ तोला, पीपल छोटी १ तोला भिलावा (शुद्ध) १ तोला, गो मूत्र यथाऽवश्यक। सब दवाओं को कूट पीस कपड छन कर गो मूत्र में खब घोट कर उसकी रत्ती २ भर की गोलियां बना ले। यह आयुर्वेद में एक बहुत ही पेटेण्ट चीज है प्रायः इसको सब वैद्य लोग बनाकर अपनी फार्मेशियों में बेचा करते हैं। यह बालकों के सर्दी, बुखार, बद-हजमी तथा हरे पीले दस्त आदि में फायदा करती है और मियादी बुखार में फायदा करती है। इसको तुलसी के पत्तों के रस के साथ एक या दो गोली लेने से बुखार शीघ्र ही पाचन हो जाते हैं।

३६—करज के मुलायम पत्ते, नीम के पत्ते, गुर्च (गिलोय) के पत्ते, हार सिंगार के पत्ते, भट कटैया (बड़ी) के पत्ते, तुलसी के पत्ते, पित्त पापड़ा, काली मिरच, छोटी पीपल, काकड़ा सींगी कुटकी, चिरायता के फूल, नागर मोथा तथा कचनौंन। सब को समान भाग से कूट पीस कपड़छन करलो। और अदरख के रस में दो २ रत्ती की गोलियां बनाओ। रोज एक गोली प्रातः तथा सायं लेने से हर प्रकार के ज्वर नाश हो जाते हैं। यह एक बाजार की बिकने वाली पेटेन्ट ज्वर हर्ता है।

३७—ज्वर वटी—कंजा की गिरी ४० तोला, शुद्ध गन्धक ४० तोला, गोदन्ती हड़ताल की भस्म ४० तोला, फिटकरी २० तोला, सोडा बाई कार्ब २० तोला, क्विनीन १० तोला, इन सब दवाओं को बारीक करके एक में मिला ले और इसमें चिरायते के काढे की सात भावना देकर चार २ रत्ती की गोलियां बनाले। बुखार आने के पहिले १ गोली पानी के साथ लेने से आता हुआ बुखार रुक जाता है।

३८—ताप तिल्ली तथा ज्वर—गधक का तेजाब २० बूंद, मिश्री २ तोला, जल एक पाव। ८ औंस की शीशी में २ तोला पिसी हुई मिश्री तथा २० बूंद गधक का तेजाब डाल कर एक पाव भर पानी देना चाहिए। तीनों चीजें मिलाकर एक रस हो जाने से काम लेना चाहिये। मात्रा एक तोला से २ तोला तक साय प्रात तथा किसी समय अधिक बार भी सेवन किया जा सकता है। इससे पित्त का प्रकोप, पित्ती का उछलना, ज्वर का तीव्र योग, उदर विकार, प्लीहा एवं अरुचि पर लाभदायक है।

३९—ज्वर नाशक पेय—गुल बनफशा ४ तोला लौंग १ तोला, लालचन्दन १ तोला, गुल गाजवां १ तोला, उन्नाव २ तोला, मुनक्का २ तोला, खश २ तोला, मिश्री १ सेर। सब चीजों को साफ करके रात को किसी मिट्टी के बरतन में या अन्य पात्र में ३॥ सेर जल डालकर उक्त औषधियों को भिगो दो। प्रात काल चूल्हे पर चढा कर मीठी आँच से सब चीजों को पका लो, आधा सेर जल शेष रहने पर उतार कर छान लो। शीतल होने पर १ सेर मिश्री डाल कर किसी कलईदार साफ बटलोई में पुन आग पर चढा देना चाहिये दो तार की चाशनी आजाने पर उतार छानकर किसी साफ बोतल में भरकर रख देना चाहिये। मात्रा आवश्यकतानुसार ६ माशा से २ तोला तक प्रात, तथा साय तथा अन्य समय भी दिया जा सकता है।

अनुपान—बच्चों के लिए माता का दूध या साधारण जो दूधादि। बड़ों के लिये १ छटांक जल। इससे चित्त की व्याकुलता, पित्त ज्वर, प्यास, मस्तक पीड़ा, पेशाव का पीलापन या जलन, गले का सूखना एवं हृदय दाह आदि सर्व रोग नाश होते हैं।

४०—कट फलादि चूर्ण—कायफल, नागर मोथा, कुटकी सोंठ, काकड़ा सींगी और पोहकर मूल इनको समान भाग ले चूर्ण करके अदरख के रस या शहद के साथ सेवन करे तो सर्व ज्वर नाश हों।

ज्वर रोग पर इङ्गलिश पेटेण्ट मेडीसन्स

इस ज्वर रोग पर बहुत सी इङ्गलिश पेटेन्ट औषधियां है जो प्राय. बाजारों में प्रत्येक केमिस्ट की दुकानों पर मिला करती हैं और बहुत सी दवायें योरुप तथा अमेरिका आदि से भी आती हैं। और हमारे भारत के सुप्रसिद्ध २ डाक्टर तथा फार्मेसियों ने भी पेटेन्ट कर रजिस्टर्ड करा रखी हैं। तिनमें से कुछ मुख्य २ औषधियों के प्रयोग पाठकों के हितार्थ लिखकर वर्णन किये जाते हैं। पाठक अपनी २ रुचि के अनुसार बना कर अपने ज्वर रोग पर अनुभव करें।

१. एग्युमिकश्चर (Ague Mixture)—क्विनीन सल्फेट १ ड्राम, मैग्नीशियासाल्ट १ औंस, टिंकचर नक्स वामिका १० बूंद, लिकर आर्सेनिक ५ बूंद, लिकर स्ट्रिकनिया (Liqour stychnia) ५ बूंद, एसिड कार्बोलिक ५ बूंद, सपर्फ का पानी आधा पाइन्ट।

बनाने की विधि—सब को मिलाकर शीशी में भर ले। सर्व प्रकार के मलेरिया को नाश करता है।

२. एग्युकिलर (Ague Killer)—लायकर एमोनिया एसिड २ ड्राम, एकोनाइट १० मिनिम, स्प्रिटईथर १ ड्राम, टिंचर क्लोरोफार्म २० मिनिम टिंचर नक्स वामिका १५ मिनिम, डिस्टिल्डवाटर ३ औंस।

बनाने की विधि - सबको मिलाकर शीशी में भरलो। खुराक आधा औंस पानी के साथ दिन मे ३ बार लेवे। रग के लिये कोचलाइन की बूंद डाल दे। इससे जूड़ी (ज्वर) इनफ्लुन्जा और मलेरिया से पैदा हुई व्याधि हरण हो जाती है।

३ एग्युरिन (Agurinc) टिंचर एकोनाइट ८ मिनिम मग्नेशिया सल्फ ४ ड्राम, स्प्रिट नाइट्रासो २ ड्राम, टिंचर क्लोरोफार्म ५० मिनिम, लायकर एमोनिया एसिड ४ ड्राम, लायकर आर्सेनिक २० मिनिम, डिस्टिल्ड वाटर १ औंस।

बनाने की विधि—प्रथम डिस्टिल्ड वाटर मे मग्नेशिया घोलकर मिला दो और शीशी मे भर कर बाकी शीशी का हिस्सा डिस्टिल्ड वाटर से पूर्ण करो। मात्रा २ या ३ चम्मच दवा पानी के साथ पीवो। बच्चों के लिये मात्रा आवश्यकतानुसार देनी चाहिए।

४. फीवर मिक्स्चर (Fever Mixture)—कुनेन सल्फ ५० ग्रेन, एसिड सल्फ्यूरिकडिल ४० मिनिम लिकर आरसेनिकल्स २० मिनिम, टिंचर कार्डमम १ ड्राम, डिस्टिल्ड वाटर एक औंस।

बनाने की विधि—प्रथम कुनैन को सल्फ्यूरिकडिल के साथ चीनी की खरल मे डालकर रगड़ो, तत्पश्चात बाकी दवाइयां मिला दें और एक शीशी मे तैयार कर रख छोड़ें। मात्रा ५ से १० बून्द को १ औंस पानी मे मिला कर देवे, कुछ खाने पर इन

दवा को पिलावे। सब प्रकार के ज्वरों को हरण करती है बाजारों में यह दवा कुनेन मिक्श्चर के नामों से प्रसिद्ध है। बेचने वाले इसमें पानी मिलाकर छोटी बड़ी जैसी चाहें शीशी बनाकर बेचते हैं।

५. मलेरिया मिक्श्चर—लायकर एमोनिया एसीटेसी ५ ड्राम, टिंचर एकोनाइट ८ मिनिम, स्प्रिटईथर नाइट्रोसी २ ड्राम, टिंचर क्लोरोफार्म ४० मिनिम। डिस्टिल्ड वाटर ८ औंस सबको मिलाकर मिश्रण करे। मात्रा एक औंस खुराक दिन में दो बार देवे, इससे सब प्रकार के ज्वर नाश होते हैं।

६. एन्टी कालरा पिल्स—कैपसिकम १ ग्रेन, असीफाटीडा १ ग्रेन, पीपर नीगरम १ ग्रेन, कैम्फर १ ग्रेन। सबको मिला कर एक गोली बनावे, इस मात्रा से जितना चाहो गोली बना सकते हो। यह कालरा (हैजा की अचूक दवा है।

७. बुखार की शर्तिया दवा—अर्क चिरायता या क्वाथ चिरायता १ पाव, कुनेन सल्फ आधा ड्राम। इसमें दो चीजों का योग है सबको मिला कर शीशी में भरलो, ज्वर में लाभ-दायक है।

८. एन्टी मलेरिया क्योर—टिंचर चिरायता १ औंस, कुनेन सल्फ ५ ग्रेन, नक्स वामिका एक्स्ट्रेक्ट २ ग्रेन, लायकर आरसेनिक १५ बूंद। सबको मिलाकर शीशी में भरलो। यह २४ खुराक दवा है। एक छटांक पानी मे एक खुराक दवा मिला कर पीना चाहिये।

९. फीवर सोल्यूशन—टिंचर एको नाइट ३० मिनिम, एन्टी फेबरिन १ ड्राम, स्प्रिट रेक्टी फाइड १ ड्राम डिस्टिल्ड वाटर ६ ड्राम। प्रथम फेबरिन और स्प्रिट आपस मे मिलावें, जब गल जाय तब पानी मिलाकर अन्य चीजें भी मिलावें। [illegible]

ड्राम से १ ड्राम तक। दवा पीने के १ घन्टा बाद दूध पीना चाहिये।

१०. कालेरा सोल्यूशन—टिंचर कैपसीकम ६ ड्राम, टिंचर क्लोरोफार्म ४० मिनिम। सबको एकत्र करो, मात्रा ४ बूंद से १२ बूंद तक।

११. एन्टी मलेरिया—भूनी आलम (फिटकरी) २ ड्राम एसिड आर्सेनिक १ ग्रेन पाउडर कैपसीकम ६ ग्रेन। सबको खरल करके गोंद का पानी देकर २४ गोलियां बनालो।

१२. फीवर टेबलेट—क्यूनाइन सल्फेट आधा ड्राम एसाटानी लीड आधा ड्राम, पाउडर चिरेटा ४ ड्राम, नक्सवामिका पाउडर आधा ड्राम। सबको एकत्र करके मशीन द्वारा १०० टिकिया तैयार करलो। इसे खाकर खूब दूध पीना चाहिये इससे सब प्रकार के ज्वर नाश हो जाते हैं।

१३. कल्पद्रुम मिक्श्चर—कुनैन सल्फ १ ड्राम। लाइकर आर्सेनिक ८० मिनिम, टिंचर नक्स वामिका ४० मिनिम, एसिड सल्फ्यूरिक डिल १ ड्राम। प्रथम कुनाइन एसिड में डालो जब गल जाय तब छान लो फिर उसमें इतना डिस्टिल्ड वाटर डालो कि शीशी पूरी हो जावे बाद को सब दवा मिलाकर हिलादो और रङ्ग के लिये कोई कार्माइन रंग डाल दो। अथवा पीचलाइन की कुछ बूंद डालदो।

२ राजयक्ष्मा (टी० बी०) चिकित्सा

वैद्यक शास्त्रों में वर्णन किया गया है कि राजयक्ष्मा रोग मल मूत्रादिकों के वेगों के रोकने, अधिक अन या उपवास करने अति मैथुन आदि क्षयकारी कार्य करने बलवान मनुष्य से कुश्ती लड़ने अथवा बिना समय खाने, कभी कम और कभी ज्यादा खाने आदि कारणों से क्षय या राजयक्ष्मा रोग होता है। आय

प्रकाशादि ग्रन्थों में लिखा है। कि इस रोग का रोगी वैद्य की खूब पूजा करता है इसलिए इसको यक्ष्मा कहते हैं और सम्पूर्ण क्रिया तथा धातुओं को क्षय करने के कारण इसको क्षय रोग भी कहते हैं। इस का अभिप्राय यह है कि रस, रक्त, मांस, मेद अस्थि, मज्जा और शुक्र इन सातों धातुओं को सोखता है। इसी से इस का नाम शोख रोग भी पड़ गया है। क्षय, शोष रोग राज यक्ष्मा ये चारों नाम एक दूसरे के पर्याय वाचक शब्द हैं। इसकी उत्पत्ति के विषय में लिखा गया है कि जब प्रधान और वातादिक तीनों दोष कुपित हो जाते हैं, तब उनसे रसवाहिनी नाड़ियों के मार्ग रुक जाते हैं, रसवाहिनी शिराओं या नाडियों के रुक जाने से क्रमश रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र आदि सप्त धातुएं क्षीण हो जाती हैं और इसी कारण मनुष्य भी क्षीण हो जाता है।

मनुष्य जो कुछ खाता है उसका पहले रस बनता है रस से रक्त (खून), रक्त से मांस, मांस से मेद, मेद से अस्थि, अस्थि से मज्जा, और मज्जा से शुक्र या वीर्य बनता है। सम्पूर्ण धातुओं का कारण अर्थात मांस, मेद आदि छओं धातुओं का बनाने वाला रस ही प्रधान है। इससे ही रक्त आदि बन सकता है जब रस ही न बनेगा तब रक्त कहां से होगा। रक्त न होगा तब मांस भी नहीं होगा। जिन नालियों में हो कर "रस" रक्त बनने की मशीन में पहुँचता है और वहां जा कर खून हो जाता है, उन नालियों की राह जब दोषों से कुपित हो जाने से बन्द हो जाती है तब रस रक्त बनने की मशीन में पहुंच ही नहीं सकता सो वहां का वहां ही अर्थात अपने उत्पन्न स्थान में जम कर खांसी के साथ मुंह से निकल जाता है, रस नहीं रहता। इसका परिणाम यह होता है कि खून दिन पर दिन कम होता जाता है,

और खून की कमी के कारण मांस मज्जा आदि सब धातुयें क्षीण हो जाती है। चरक आदि शास्त्रों में भी ऐसा उल्लेख पाया जाता है। शरीर मे रस ही सब प्रधान होता है जिससे सर्व धातुओं का सृजन होता है जब इस की चाल रुक जाती है तो रक्त आदि धातुओं का पोषण कैसे हो सकता है केवल क्षय रोगी मल के आश्रय जीता है रोगी का मल टूटा कि जीवन नाश हुआ। यों तो सभी के बल का सहारा मल और जीवन अवलम्ब वीर्य माना गया है किन्तु क्षय रोगी को तो केवल मल का ही आश्रय होता है क्यों कि उसमे वीर्य आदि का तो पहले ही अभाव (कमी) रहता है।

जब किसी मनुष्य को क्षय रोग होने वाला होता है तब उसमे निचे लिखे चिन्ह या लक्षण विदित होने लगते है। क्षय रोगी को श्वास रोग होता है, शरीर मे दर्द रहता है, कफ गिरता है। तालु सूखता है, वमन (कय) होता है अग्नि मन्द हो जाती है, सदैव नशा सा बना रहता है, नाक से पानी गिरता है खांसी तथा नींद अधिक आती है। अभिप्राय यह है कि क्षय रोगी को प्रारम्भ में सब उपरोक्त लक्षण देखे जाते है। इसके अतिरिक्त क्षय रोगी का मन मांस और मैथुन पर अधिक चलता है। और उसकी आंखे सफेद हो जाती हैं। इसके अतिरिक्त क्षय रोगी अपने खाने पीने के शुद्ध तथा साफ बर्तनों को भी अशुद्ध समझता है, अपने हाथों को देखता रहता है अर्थात दोनों भुजाओं का बल जांचा करता है। सुन्दर शरीर देखकर भी डरता है, और उसके नाखून तथा बाल बहुत बढते है। सो जाने पर इसको पतंग, सर्प, बन्दर तथा गिरगेंटा आदि से स्वप्न में तिरस्कृत होता है और बिना जल की सूखी नदियां देखता है तथा धूआं, या दावानल (बन की आग) से पीड़ित सूखे वृक्ष देखता है। ये लक्षण क्षय रोगी मे पाते हैं। चतुर

मनुष्य इन सब लक्षणों को देखते ही सावधान हो जाता है और यथेष्ट औषधी विचार कर चंगा हो जाता है, परन्तु जो मनुष्य इस समय सावधान नहीं होता तो उनको फिर नये २ उपद्रव अर्थात खांशी, जुकाम, स्वर भेद, अरुचि पसलियों का संकोचन और दर्द, खून की क्यै और मलभेद के सब लक्षण बढ़ जाते हैं।

असाध्य क्षय रोग के लक्षण—जिस क्षय रोगी की आंखें सफेद हो गई हों, अन्न में अरुचि हो, और उर्द्ध श्वांश चलता हो तो समझ लेना चाहिए कि रोगी मर जायेगा। दूसरे यदि क्षय रोगी खाने पर भी क्षीण हो जाता हो और उसे अतिसार (दस्त) हों अथवा उसके पैर, हाथ, फोतों पर सूजन आगई हो तो समझ लेना चाहिए कि रोगी अवश्य ही मर जायेगा।

क्षय रोगी के जीवन की अवधि —जो क्षय रोगी जवान हो और जिसकी चिकित्सा उत्तमोत्तम वैद्य तथा डाक्टरों द्वारा होती रहती हो वह १००० दिन (दो वर्ष नौ महीने दस दिन) तक जी सकता है। अभिप्राय यह है कि क्षय रोगी की चिकित्सा होना बड़ी कठिन है। जिस क्षय रोगी का शरीर ज्वर से न तपता हो जिस में चलने फिरने की कुछ शक्ति हो और जो तेज दवाओं को सह सकता हो, जो पथ्य पालन में मजबूत हो, जिसे भोजन पच जाता हो और जो बहुत दुबला और कमजोर न हो ऐसे क्षय रोगी की चिकित्सा करना आवश्यक है। इस क्षय रोग पर बहुत सी औषधियां हमारे आयुर्वेद शास्त्रों में वर्णन की हैं और बहुत से वैद्य तथा डाक्टरों ने अनुभव भी की हैं किन्तु वे सब यहां पर नहीं लिखी जा सकती, किन्तु उनमें से कुछ खास २ लाभकारी अनुभूत औषधियां ही लिखी जाती हैं, पाठक उनका अनुभव कर अपने रोग का नाश करें।

यक्ष्मा रोगी के लिए बहुत सी औषधियों का विधान है परन्तु मुख्य दवा जैसे लवंगादि चूर्ण, सितोपलादि चूर्ण। च्यवनप्राश

ज्वरेन्द्र तथा मृगांक रस आदि उत्तमोत्तम दवाओं में से कोई सी देनी चाहिए। यदि रोगी बहुत कमजोर हो तो उसे घी, दूध, शहद, कालीमिर्च और मिश्री का पन्ना बनाकर पिलाना चाहिये। यक्ष्मा रोगी को बकरी का दूध बहुत हितकर है। क्षय रोगी को बकरी का मांस खाना, बकरी का दूध पीना, सोंठ मिलाकर बकरी का घी खाना और बकरे तथा बकरियों में ही सोना बहुत हितकर है। इनके अतिरिक्त क्षय रोगी को आग तापना, रात में जागना, धूप में बैठना, घोड़े आदि पर चढ़ना, गाना बजाना तथा चिल्लाना या क्रोध करना, स्त्री प्रसंग करना पैदल चलना कसरत तथा हुक्का बीड़ी आदि का पीना, मल मूत्रादिक वेगों का रोकना, स्नान करना, कामोद्दीपन पदार्थों का सेवन करना एक दम वर्जित है। अब यक्ष्मा नाशक कुछ औषधियों का वर्णन किया जाता है।

यक्ष्मा नाशक पेटेन्ट औषधियां

१. विडंगादि लेह—वायविडंग, लोह भस्म, शुद्ध शिलाजीत और [illegible] इनका चूर्ण घी और शहद के साथ चाटने से प्रबल यक्ष्मा, खांसी तथा श्वास नाश होता है।

२. त्रिफलाद्यवलेह—त्रिफला, त्रिकुटा, शतावर तथा लोह चूर्ण प्रत्येक चार २ तोला लेकर कूट कर रखलो। इसमें से १ तोला चूर्ण की मात्रा शहद के साथ चाटने से उर क्षत और कंठ रोग नाश होते हैं।

३. धान्यादि क्वाथ—धनियां, सोंठ, दशमूल, पीपल इन [illegible] द्रव्यों को समान भाग लेकर कूट कर रखलो और २॥ [illegible] तोले का काढ़ा बनाकर पीने से यक्ष्मा और इसके उपद्रव पसली का दर्द, खांसी, ज्वर, दाह श्वास और जुकाम दूर होते हैं।

४. दिन में कई समय दो दो तोला अंगूर की शराब, महुवे की शराब या मुनक्का की शराब पीने से यक्ष्मा नाश होता है।

५. असगन्ध और पीपल के चूर्ण में शहद घी तथा मिश्री मिलाकर चाटने से और ऊपर से दूध पीने से क्षय रोग नाश होता है।

६. सितोपलादि चूर्ण दालचीनी १ तोला, इलायची २ तोला, पीपल ४ तोला, वंसलोचन ८ तोला, मिश्री १६ तोला, इन सब को पीस छान कर रखलो। यह आयुर्वेदिक एक बहुत ही पेटेन्ट दवा है। इसको अधिक तर शहद के साथ चटाया जाता है। यदि रोगी को दस्त लगते हो तो शरबत अनार या शरबत वनफशा में चटाते हैं। इससे जीर्ण ज्वर, क्षय या तपेदिक निश्चय आराम हो जाती हैं। इसकी मात्रा १। माशा से ३ माशा तक की है। यक्ष्मा वाले को इसकी १ मात्रा शहद ४ माशा और मक्खन १० माशा में चाटने से बहुत लाभकारी है तथा इसको घी और शहद मे मिला कर चाटने से श्वांस खांशी, और क्षय रोग दूर होता है। इसके अतिरिक्त अरुचि, मन्दाग्नि पसली का दर्द, हाथ पैरों की जलन, कन्धों का दर्द ज्वर, कफ रोग तथा शिर रोग निश्चय आराम होता है।

७. तालीसादि चूर्ण तालीस पत्र १ तोला, गोल मिरच २ तोला, सोंठ ३ तोला, वंसलोचन ४ तोला, छोटी इलायची के दाने ६ माशा, दालचीनी ६ माशा, मिश्री ३२ तोला। इन सबको पीस कूट कपड़ छान करके रख दो, इस की मात्रा ३ माशा से ६ माशा तक है। इसका अनुपान शहद कच्चा दूध, बासी पानी, मिश्री की चाशनी अनार तथा वनफशा का शरबत या चीनी का शरबत है। इसके सेवन करने से श्वांस, खांसी अरुचि, संग्रहणी, पीलिया, तिल्ली ज्वर, राज यक्ष्मा और पुरानी

की वेदना ये सब आराम होती हैं। इस चूर्ण से पसीने आते हैं, हाथ का ज्वर उतर जाता है। इसके साथ २ लाक्षादि तेल की मालिश भी की जाय तो बहुत उत्तम है।

८. द्राक्षाऽरिष्ट उत्तम बड़े २ बीज निकाले हुए मुनक्का ४। सेर लेकर कलईदार देग या कड़ाही में रख कर ऊपर से १० सेर पानी डालकर मन्दी २ आग से पकाओ जब २॥ सेर पानी रह जाय तब उतार कर शीतल करलो और मल छानलो पीछे उसमें ४। सेर मिश्री भी मिला दो, इसके पश्चात दालचीनी २ तोला, छोटी इलायची के बीज २ तोला, नाग केशर २ तोला तेजपात दो तोला, वायविडंग २ तोला, फूल प्रयुंग २ तोला, काली मिरच एक तोला, छोटी पीपल १ तोला इन सब को जो कूट करके उसी मुनक्के के मिश्री मिले काढ़े में मिलादो, पीछे एक चीनी या कांच के बरतन में चन्दन अगर और कपूर की धूनी देकर यह सारा मसाला भरदो। ऊपर से ढकना बन्द करके कपड़ मिट्टी से सन्धि बन्द कर दो हवा जाने को श्वांस न रहे इसका ध्यान रखो। फिर इसे एक महीना तक ऐसी जगह पर रख दो जहां दिन में धूप और रात में ओस लगे। जब महीना भर हो जावे तब मुंह खोल कर सब को मथो और छान कर बोतल में भर दो और काग लगा दो। यही द्राक्षारिष्ट है। यह कभी बिगड़ता नहीं। इसकी मात्रा ६ माशा से २ तोला तक है, इसे अकेला या लवंगादि चूर्ण और फलादि [illegible] के साथ सवेरे शाम [illegible] दोपहर के १० बजे, सन्ध्या के ४ [illegible] और रात को १० बजे खाना चाहिये। अगर कफ के साथ [illegible] खून आता हो इसे [illegible] बार दो २ घण्टे पर देना चाहिये। मुंह से खून आने पर यह फौरन आराम करता है। [illegible] शरीर, [illegible] गोला पेट रोग कृमि रोग, [illegible] के रोग, फोड़े फुन्सी, नेत्र रोग, सिर के रोग और

गले के रोग नाश हो जाते हैं तथा इससे अग्नि वृद्धि होती, भूख लगती, भोजन पचता तथा दस्त साफ होता है।

९. द्राक्षाऽसव—बड़े २ दाख १। सेर, मिश्री ५ सेर, झरबेरी की जड़ की छाल २॥ पाव, धाय के फूल सवा पाव, चिकनी सुपारी, लौंग जावित्री, जायफल, तज, बड़ी इलायची, तेजपात सौंठ, काली मिरच, छोटी पीपल, नाग केसर, मस्तंगी, कसेरू अकरकरा और कूट इन सबको एक मिट्टी के घड़े में भर कर ऊपर से ढकना रख कर कपड़ मिट्टी करलो और गड्ढा खोदकर १४ दिन तक दबा दो १५ दिन बाद निकाल और उसका मसाला भभके में डाल कर अर्क खींचलो, इस अर्क में २ तोला केसर और १ मासा कस्तूरी मिलाकर कांच के पात्र में भर कर रख दो और तीन दिन तक मत छेड़ो। चौथे दिन से पी सकते हो। प्रातःकाल ६ तोला, दोपहर १० और रात को १५ तोला तक पी सकते हो, ऊपर से भारी घृत तथा दूध का भोजन करना चाहिये। इसके पीने से खांसी, श्वांस और राज्यक्ष्मा नाश होता है तथा वीर्य बढ़ता. दिल खुश होता और जरा जरा सा नशा आता है।

१०. द्राक्षादि घृत—बिना बीज के मुनक्का २ सेर और मुलैठी तीन पाव, दोनों को खरल में कुचल कर रात के समय दस सेर पानी में भिगो दो प्रातः ही मन्दाग्नि से औटावो जब चौथाई पानी रह जाय तब उतार कर छानलो। इसके पश्चात बिना बीजों के मुनक्का ४ तोला, मुलैठी छिली हुई ४ तोला, छोटी पीपल ८ तोला इन तीनों को सिल पर पीस कर लुगदी बनालो। इसके पश्चात गाय का घृत २ सेर तीनों दवाइयों की लुगदी। मुनक्का व मुलैठी का काढ़ा जल जाय तब उतार कर छान लो और रखदो। इस घी को रोगी के लिये पिलाते हैं, दाल रोटी तथा भात के साथ खिलाते हैं, यदि घी को पिलाना हो तो घी में तीन

के द्वारा किया करते थे। हमारे घर की देवियां इन सब उपचारों को विधिवत जानती थीं और इसी कारण हमारी ज्योति वृद्धावस्था तक ठीक बनी रहती थी। ये नेत्र रोग और भी कई कारणों से उत्पन्न हो जाते हैं जिनमें से कुछ मुख्य कारण पाठकों के लाभार्थ वर्णन किये जाते हैं पाठक अपने नेत्रों को आरोग्य रखने निमित्त इन पर अवश्य ध्यान देवे।

१. ऋतु विरुद्ध अहार विहार करने से २. अधिक गरम मसाले तथा खटाई आदिकों के सेवन करने से। ३. रोजाना नेत्रों से धूली तथा धूंआ आदि के जाने से। ४. दिन को सोने तथा रात को जागने से। ५. बिजली तथा लेम्पादि की रोशनी में अधिक देर तक लिखने तथा पढ़ने से। ६. अधिक क्रोध तथा शोकादि करने से। ७. अधिक मैथुन तथा रुदन करने से नेत्रों की ज्योति शीघ्र ही न्यून हो जाती है। अत प्रत्येक पाठक को अपने नेत्रों के हितार्थ उपरोक्त विषयों से अवश्य बचना चाहिये। इन नेत्र रोगों पर हमारे सुबोध वैद्य तथा डाक्टरों ने अनुभव कर सैंकड़ों ही औषधियां निर्माण की हैं और आयुर्वेद शास्त्र में भी सैंकड़ों ही योग लिखे गये हैं। सो सब योग इस छोटी सी पुस्तक मे लिख कर नहीं बतलाये जा सकते। अतः उनमे से कुछ मुख्य २ तथा सुगम योग पाठकों के हितार्थ लिखे जा रहे हैं कि जिनको प्रत्येक पाठक बड़ी सुगमता से बना कर अपने तथा अपने परिवार के नेत्रों की चिकित्सा बिना किसी वैद्य तथा डाक्टर की सहायता के स्वयं कर सकता है।

नेत्र रोग पर सुगम चिकित्सा

१. नीम के पुष्पों को छाया मे सुखा कर उनमे बराबर का कलमी शोरा मिला कर और पीस कपड़ छन कर नेत्र में अंजन करे तो धूंधली तथा रतोंधा मिटता है।

२. एक रत्ती फिटकरी को फुला कर २॥ तोला गुलाब जल में डाल देवे। इसकी दो या तीन बूंद नेत्र में डालने से नेत्रों की ललाई, पीड़ा तथा गीड़ आदि आना बन्द होता है।

३. अडूसा के ताजा पुष्पों को गम कर आंख पर बांधने से आंख के गोल की पित्त शोथ मिटती है।

४. अडूसा के पत्तों को पीस टिकिया बना बांधने से नेत्र पीड़ा मिटती है।

५. इमली के पुष्पों की पुल्टिश बांधने से आंख की सूजन मिटती है

६. कांदे का रस नेत्र में लगाने से नेत्र पीड़ा मिटती है तथा कांदे का रस शहद में मिलाकर अंजन करने से भी नेत्र पीड़ा शान्त होती है।

७. नीम के पत्तों को सम्पुट में रख कपड़ मिट्टी लगा कर अग्नि में रख देवे जब उनकी भस्म हो जाय तब निकाल कर उस भस्म को नीबू के रस में खरल कर नेत्राॅऽजन करने से नेत्रों की खुजली तथा जलनादि रोग नाश होते हैं।

८. नेत्र पीड़ा मिटाने के लिए नीम की कोमल कौंपलों का रस निकाल कुछ निवाया कर जिस आँख में पीड़ा हो उसके दूसरी ओर कान में डाले।

९. हरी दूब के रस का लेप करने से आंख का दुखना और गीड़ आना बन्द होता है।

१०. हरी दूब के ऊपर पड़ी हुई ओस को चैत तथा कार्तिक मास मे ५ वर्ष से १३ वर्ष तक के लड़के की आंख में प्रातःकाल सूर्योदय से पहले १० या १५ मिनट तक नित्य आंजे तो कभी नेत्र की ज्योति न्यून न होवे।

११. अरार (मूर की जड़ को पानी में घिस कर आंजने से आंख का जाला कट जाता है।

१२. हरी दूब के मैदान पर पड़ी हुई ओस से नेत्र की ज्योति तथा मस्तक की धारणशक्ति का विकास होता है।

१३. आंवलों को कूट कर दो घन्टे तक पानी में औटा छान कर दिन में तीन समय आंख में डालने से आँख के जालादि रोग नाश होते हैं।

१४. अदरख के रस की दो तीन बूंद आंख में टपकाने से आंख की पीड़ा नाश होती है।

१५. पान के रस का अंजन करने से रतौंधी तथा आँख के सफेद भाग के रोग मिटते हैं।

१६. घी गुवार (गुवार पाठा) के गिर पर हल्दी डाल कर गर्म करके बांधने से नेत्र पीड़ा शान्त होती है।

१७. गुवार पाठा के रस की तीन चार बूंद सोते समय कान में टपकाने से आँख की पीड़ा शान्त होती है।

१८. तिमिर रोग मिटाने के लिये मुख में पानी भर लेवे फिर उस पानी से नेत्र छांटे पानी मुख में गरम न हो जाना चाहिये।

१९. आंवला एक भाग और दो भाग हरड़े को पानी के साथ घिस बत्ती बना कर आंख में फेरने से तिमिर, अर्बुद, पटल तथा नेत्र के समस्त रोग नाश हो।

२०. आंख के सफेद भाग पर जो बहुत दिन से खून जमा हो वह बबूल के कोमल पत्तों को घी में तल कर बांधने से मिट जाता है।

२१. शुद्ध असली शोरा में रंगत आजावे इतनी हल्दी मिला कर आंजन से जाला तथा नाखूना आदि नेत्र के सर्व दोष दूर होते हैं।

२२. हरड़े को रात में पानी में भिगो रखे और प्रात ही उस पानी से आंखों को धोवे तो नेत्र कभी दुखते नहीं और ठंडे रहते हैं

२३. हल्दी का आँख पर लेप करने से आँखों की सूजन मिटती है।

२४. रसौत को स्त्री के दूध में घिस कर आंजने से आँख के सर्व रोग दूर होते हैं।

२५. काली मिरच को दही में घोंट कर लगाने से रतोन्धा दूर होता है।

२६. कपूर के चूर्ण को वड़ के दूध मे घोंट कर अंजन बनावे। इसको आँख मे लगाने से दो महीने का फूला नाश होता है।

२७. चमेली के पत्तों को अरण्ड के पत्तों में लपेट फिर उस पर एक अंगुल मोटा मिट्टी का लेप करे और पुट पाक विधि से पाक करे। फिर उसमें से चमेली के पत्तों को निकाल कर रस निकाल ले और उसे कांसी के बर्तन में डाल कर उसमें समुद्र फल घिसे। इसे आँख में लगाने से आँख का फड़कना तथा उस की खुजली दूर होती है।

२८. दृष्टि प्रसादनी सलाई.—हरड़े, बहेड़ा, आँवला, भाँगरा सोंठ, घी, शहद, गोमूत्र, बकरी का दूध इन चीजों मे शीशे को गरम करके प्रत्येक में २१ बार बुझावे और सलाई बनावे। इस सलाई को सायँ प्रातः आँख में फेरने से आँख के समस्त रोग नाश होते हैं। त्रिफला और सोंठ का अलग २ क्वाथ बना कर शीशा को बुझाना चाहिए।

२९. आँख मे पानी भरे तब कीकर के पत्तो का काढ़ा बना कर उसे खूब गाढ़ा करले और फिर उसमे उतना ही शहद मिला कर आँखों में आंजना चाहिये।

३० नीम के पत्ते और पठानी लोन को पानी मे पीस कर रस निकाल लेवे। इसको थोड़ा गुन गुना कर आँख मे आंजने से प्रायः नेत्रों के समस्त रोग दूर हो जाते है।

३१. सिरस के पत्तों के अर्क मे एक साफ महीन कपड़ा १ बालिस्त तर करके छाया में सुखावे। इस प्रकार तीन बार पुट देवे फिर उस कपड़े की बत्ती बना कर चमेली के तेल में जला कर कज्जल बनावे। इसको आजने से नेत्रों की कमजोरी दूर हो।

३२. सप्ताह मे एक बार काले तिलों का उबटन शरीर में मलने से आंवलो का उबटन मलने से और कान में तेल डालने से ज्योति बढ़ती है।

३३. भोजन करने के पश्चात अपने दोनों हाथों को नेत्रों पर फेरने से नेत्रों की ज्योति बढ़ती है।

३४ आखों में सूजन आगई हो तो सौंठ और निबौली को पीस कर उसमे जरा सा सैंधा नमक मिला कुछ गरम कर टिकिया बनालो। इसको आंखों पर बांधने से सूजन तथा नेत्र पीड़ा मिटती है।

३५ सोते समय ७ माशा सौंफ मे समान भाग खांड मिला कर फाकने से नेत्रो की ज्योति बढ़ती है।

३६ नेत्र का तथा पैर के तलवों का बहुत सम्बन्ध है। अत पैर के तलवों को साबुन से साफ कर तेल की मालिश करे और पैरों मे खड़ाऊं आदि धारण करे।

३७ नींबू के रस को लोहे की खरल मे लोहे के दस्ते से घोटते २ जब काला हो जावे तब नेत्राऽजन करे या नेत्र के आस पास पतला २ लेप करे तो नेत्र पीड़ा मिटती है। तथा इसके रस मे हरे कांच की चूड़ी को खूब बारीक पीस खरल करे जब खूब बारीक हो जावे तब नेत्र मे आजने से नेत्र की फूली तथा जाला कटता है।

३८. नौसादर और फिटकरी को बारीक पीस नेत्र में आंजने से नेत्र रोग मिटते हैं।

३६. पेड़ से ताजा तोड़े आंवलों का रस आंजने से नेत्रों के समस्त रोग दूर होते हैं।

४०. मुलैठी, गिलोय, हरड़, बहेड़ा, आंवला तथा दारु हल्दी प्रत्येक एक २ तोला और जल ४८ तोला लेकर क्वाथ बनावे। १५ तोला जल शेष रहने पर उतार कर छानलो और पी जावो। इससे नेत्रों के समस्त रोग दूर होते हैं।

४१. नेत्र रक्षक वटीः—रसौत १ तोला, अफीम १ मासा, सुहागा भुना हुआ ६ मासा, फिटकरी भुनी हुई ६ मासा, इमली की पत्ती का रस ५ तोला, गुलाब जल आवश्यकतानुसार। सब चीजों को गुलाब जल में घोट कर धीमी आंच पर पकावे और फिर दो २ रत्ती की गोलियां बनाले। आवश्यकता के समय एक गोली को कांसी के बरतन में घिस कर हाथ से आंखों में लगावे इससे सब प्रकार की नेत्र पीड़ा दूर होती है।

४२ नेत्राऽन्जन नं० १.—कपूर शुद्ध ४ तोला, शुद्ध डली का सुरमा ॥ सेर, पीपर मेन्ट ६ मासा। सुरमा को सोधने के लिये उसे तीन दिन तक पानी मे भिगो रखे पश्चात उसे पानी से अलग करके नीबू के रस में खूब घोटे, इसके पीछे उसको सुखा कर कपूर और पीपरमेन्ट के साथ सौंफ के अर्क में घोटले और सूखने पर शीशियों मे भरले बस सुरमा तैयार है।

४३. नेत्राऽन्जन नं० २:—रतन जोत १ तोला, काले निरमल के बीज १ तोला, नौसादर १ तोला फिटकरी भुनी हुई १ तोला कलमी शोरा १ तोला, सैंधा नमक १ तोला, समुद्र फेन १ तोला नीलाथोथा भुना हुआ १ मासा, बबूल का गोंद २ तोला, भीमसेनी कपूर १० माशा, पीपर मेन्ट ३ माशा। सत्यानाशी कटैली का अर्क आवश्यकतानुसार। ऊपर की सब दवाओं को कूट पीस कपड़ छन करले, फिर उस चूर्ण से कटैली के अर्क की सहा

भावना देकर सुखा लेवे और पीपरमेन्ट तथा कपूर मिलाकर शीशी मे भरले। इस नेत्रऽन्जन के प्रयोग से नेत्र सम्बन्धि समस्त रोग दूर हो जाते है।

४४. नेत्राऽन्जन नं० ३ :– काले सिरस के बीज १ तोला, शीतल मिरच १ तोला, डली का सुरमा ५ तोला, समुद्र फेन १ तोला, छोटी इलायची १ तोला, हाथी दांत का बुरादा १ तोला पीपरमेन्ट १ मासा पीपरमेन्ट को छोड़ कर ऊपर की सब दवाओं को कूट पीस कपड़ छन करलो और खरल में डाल कर नीबू के रस मे खूब घोटो और फिर सुखा कर पीपरमेन्ट मिला शीशीओं में भरलो। इसके प्रयोग से भी नेत्रों के समस्त रोग दूर हो जाते है।

—— o:——

४ कर्ण रोग चिकित्सा

—— o:——

सुश्रुत आदि आयुर्वेद शास्त्र में कर्ण शूल, कर्णनाद, बाधिर्य कर्ण श्राव, कर्ण कण्डु और कर्ण कृमि आदि २८ रोग वर्णन किये है जिनके सब भेद इस छोटी सी पुस्तक मे लिख कर नहीं बताये जा सकते। इस कर्ण रोग की शांति पर हमारे प्रसिद्ध २ वैद्य तथा डाक्टरों ने अनेकों औषधियां शास्त्रों के आधार पर निर्माण कर स्वानुभव की है अत उनमे से कुछ मुख्य २ उपयोगी औषधियां अपने पाठकों के हितार्थ वर्णन की जाती है पाठक अपनी रुचि अनुसार बनाकर बिना किसी वैद्य तथा डाक्टर की सहायता के अपने परिवार के कर्ण रोगों की चिकित्सा बड़ी सुगमता से स्वयं कर सकते है और साथ ही गरीबों को देकर उपकार भी कर सकते है।

कर्ण रोग पर सुगम चिकित्सा

१. तुलसी के पत्तों का रस कान में डालने से कान की पीड़ा शान्त होती है।

२. तुलसी के पत्ते और एरंड की कौंपल को बराबर ले पीस नमक मिला गुनगुना कर लेप करने से कान के पीछे की सूजन मिटती है।

३. सुहागा और सिरका मिला गर्म कर कान में डालने से कान के कीड़े मरते हैं।

४. कान या नाक का बहाव बन्द करने के लिये चूने को पानी में मिला कर उसमें बराबर का दूध मिला पिचकारी देनी चाहिये।

५. कान के कीड़े मारने के लिये एलुवा को पानी में पीस कर कान में डालना चाहिये।

६. गुवार पाठा के रस को गरम कर कान में डालने से कर्ण पीड़ा मिटती है।

७. सहिजना के ताजा पत्तों का रस निकाल कर कान मे डालने से कान की पीड़ा शान्त होती है।

८. मेथी दाने को दूध मे पीस छान गुनगुना कर कान मे डालने से उसका बहना बन्द होता है।

९. स्त्री का दूध कान में डालने से कान की पीप बन्द होती है।

१०. भांग के स्वरस को कान में डालने से कान के कीड़े तथा पीड़ा बन्द होती है।

११. समुद्र भांग का चूर्ण कान में बुरकाने से उसका बहना बन्द होता है।

१२. फिटकरी का बीसवां भाग हल्दी को बारीक पीस कान में बुरकाने से कान का बहना बन्द होता है।

१३. सूरज मुखी के पत्तों का रस कान मे डालने से कर्ण पीड़ा शान्त होती है।

१४. अलसी के तेल को कुछ गरम कर कान मे डाले तो कान की पीड़ा मिटे।

१५. अलसी को प्याज के रस मे पका के कान मे डालने से कान के भीतर की सूजन मिटती है।

१६. नीम के तेल मे मधु मिला उसकी बत्ती (रूई) भिगो कर कान में रखने से कान का बहना बन्द होता है।

१७. नीम के पत्तों का बफारा देने से कान का मैल निकल कर पीड़ा मिट जाती है।

१८ कर्ण नाद तथा कानों के सन सनाहट मे कान मे कड़वा तेल छोडना चाहिये।

१९. सज्जी खार के चूर्ण को बिजौर के रस मे मिलाकर कान मे डाले तो कर्ण स्राव, पीडा तथा दाह दूर होती है।

२० हरताल व गौ मूत्र को अथवा साल की छाल के चूर्ण को कपास के रस मे या शहद में मिला कर डाले तो कर्ण स्राव दूर होवे।

२१. जो आक का पत्ता अपने आप पक कर पीला हो गया हो उस पर घी लगा अग्नि मे गरम कर और रस निचोड़ कान मे डालें तो कर्ण रोग नाश हो।

२२. सज्जी खार, सूखी मूली, हींग, छोटी पीपल, सोंठ व सौंफ के कल्क से सिद्ध तेल को कान में डालने से कर्ण नाद, बाधिर्य तथा स्राव को नष्ट करता है।

२३. आपा मार्ग (औंगा) क्षार के जल में आपा मार्ग के कल्क से सिद्ध तेल को कान में डालने से कर्णनाद व बधिरता दूर होती है।

२४. हिंग्वादि तेलः—हींग, धनिया, सोंठ इनका कल्क करके उस कल्क से चौगुना सरसों का तेल ले और उसमें कल्क को मिला देवे और कल्क का उत्तम पाक होने के लिये तेल में चौगुना जल डाले फिर सबको मिला पाक करे। जब तेल मात्र शेष रह जावे तब उतार कर छान लेवे फिर इसको कान में डाले तो कान के समस्त रोग दूर होवें।

२५. आक के अंकुर अर्थात आगे की कोमल २ पत्तियां इनको नीबू के रस में खरल कर उसमें थोड़ा सा तिल का तेल और सैंधा नमक डाल गोला बनावे फिर थूहर की गीली लकड़ी को भीतर से पोली करके उसमे उस गोले को रख उसके चारों तरफ थूहड़ के पत्ते लपेट बांध देवे फिर उसके ऊपर गीली मिट्टी लपेट पुट पाक की विधि से हल्की अग्नि में पाक करे। पाक हो जाने पर उस गोले को बाहर निकाल पत्ता आदि अलग करे, फिर उस थूहड़ को लकड़ी सहित निचोड़ कर रस निकाल ले। इसको अग्नि पर सुखोष्ण करके कान में डाले तो कान से जो दारुण पीड़ा होती है वह भी बन्द हो जाती है।

२६. हींग अथवा मद्य (शराब) इनमें से कोई सा एक कान मे डाले तो कान के कीड़े नष्ट होते है।

कर्ण रोग पर इंगलिश पेटेन्ट मेडीशन्श

२७. बोरिक एसिड (Boric Acid) ६ ग्रेन, टिंक्चर ओपियम (Tincture opium) १ ड्राम, ग्लिसरीन ८ ड्राम। सबको मिला कर घोट ले और शीशी में भर कर रक्खे। यह

एक अच्छी प्रसिद्ध दवा है इसका नाम इयरड्रोप्स (Ear Drops) रखा गया है।

२८. लिनी मेन्ट केन्फर ५ ड्राम, आइल मेथा पिपरेटा १० वून्द। वोरिक एसिड १ ड्राम। टिंचर आयोडीन १ ड्राम। इन सव को एक वरतन में मिलावो और दो चार वून्द कान में डालो।

५—दन्त रोग चिकित्सा

१. फुलाये हुए सुहागा में मिश्री मिला कर मंजन करने से दांत दृढ़ होते है।

२. तुलसी के पत्तो और काली मिरच की गोली वना दांतों के नीचे रखने से दन्त पीड़ा मिटती है।

३ जाल की लकड़ी की दांतुन करने से दांत साफ और दृढ़ होते है। तथा पाचन शक्ति वढ़ती है।

४. मीठे तेल में नमक मिला मंजन करे तो दांत साफ तथा दृढ़ हो जावें।

५. कीड़े खाये हुये दातों की पीड़ा मिटाने के लिये मोम में सुहागा मिला कर गोली वना कर दांत की खोखल मे रखना चाहिये।

६ जामून की छाल के काथ से कुल्ली करने से दांत दृढ़ होते है।

७. फिटकरी का मंजन करने से सड़े दाँतों की पीड़ा मिटती है।

८. वड़ का दूध लगाने से दाढ़ की पीड़ा मिटती है।

९ वड़ की छाल के काथ से कुल्ला करने पर दाँत और मसूड़ों का रोग मिटता है।

१० मेंहदी के पत्तों के काथ से कुल्ले करने से मसूड़ों का रोग मिटता है।

११. मुख के छाला मिटाने के लिए मुलहटी को मुख में रख कर चूशना चाहिये।

१२. मोरसली की दातुन तथा छाल के काथ से कुल्ला करने से मसूड़े तथा दांत मजबूत रहते हैं।

१३. सिरके में नमक तथा फिटकरी मिला कुल्ला करने से मसूड़ों में रुधिर आना वन्द होता है।

१४. खैर को चूसने से मसूड़ों की कष्ट साध्य पीड़ा शान्त होती है।

१५. तीन चार रत्ती जायफल गुड़ में मिला कर देने से मुख का सूखना वन्द होता है।

१६. नक छींकनी को पीस कर गरम कर गालों पर लेप करने से दांत और दाढ़ की पीड़ा मिटती है।

१७. नीम की छाल के काथ से कुल्ले करने से या नीम का तेल लगाने से मसूड़ों की असाध्य पीड़ा मिटती है।

१८. अफीम और नौसादर को पीस कर दांतों के छिद्र में रखे तो दाँत पीड़ा मिटती है।

१९. अकरकरा को चबाते रहने से मुंह से पानी पड़ने की पीड़ा शान्त होती है।

२०. अकरकरा और कपूर बराबर लो पीस मंजन करने से सब प्रकार की दन्त पीड़ा मिटती है।

२१. आंवला और मुलहठी के काथ में शहद मिला कुल्ला तथा गरारा करने से कण्ठ और गले के छाले मिटते हैं।

२२. नौसादर की ज्वार जितनी मात्रा रूई में लपेट दांतों के नीचे दबाने से दन्त पीड़ा शान्त होती है।

२३ नौसादर को सिरके में पीस कर गरारा करने से कण्ठ में चिपकी जोंक निकल जाती है।

२४. दांतो को सुदृढ़ रखने के लिये दन्त मंजन तथा दन्त धावन करना आवश्यकीय है।

२५. देशी दन्त मंजन नं० १.—अनार छिल्का जला हुआ, सैंधा नमक, फिटकरी फूली हुई। सुहागा फूला हुआ, जीरा सफेद भुना हुआ, सुपारी जली हुई, दाल चीनी, घीया माटा, गेरू मिट्टी, रीठा, सौंठ, बादाम छिल्का जला हुआ। इन सब चीजों को समान भाग ले कूट कपड़छन करलो और रोज एसेन्स सुगन्धि के लिये मिला कर बोतल तथा शीशीयों में भरलो।

२६ देशी दन्त मंजन नं० २ :—नवीन फली बबूल १ तोला आक की जड़ की बकली १ तोला, मस्तंगी रूमी १ तोला। मस्तंगी पीस कर खालिस सिरका दो तोला में चीनी के प्याले मे रख कर पकावे जब खुश्क हो जावे तब सब दवाइयों का चूर्ण डाल मंजन बनाओ। यह दन्त मंजन दांतों के अनेकों रोगों का नाश करने मे परमोत्तम जानना चाहिये।

विलायती दन्त मंजन

२७ दन्त मन्जन नं० १:—सूखी साबुन की बुकनी ३ तोला सुहागा चौकिया २ तोला, पीपरमेन्ट १ तोला, अजवायन का सत्व ८ माशा, आयल आफ वींटर ग्रे न ८ माशा, सेलखड़ी १ सेर विधि —सेलखड़ी सुहागा और साबुन को खूब बारीक पीस कर कपड़े मे छान ले, बाद मे बाकी की सब चीजों को अच्छी तरह मिलाले और काम मे लेवे।

२८ दन्त मन्जन नं० २—साफ की हुई खरिया मिट्टी १०। हिस्सा, कार्बोनेट ओफ मैग्नीशिया ४॥ हिस्सा, दूध की चीनी (Milk Sugar) ४। हिस्सा। सबको बारीक पीस कर कपड़छन करलो। फिर इसमें नीचे लिखी दवाये एक २ कर मिलादो।

मात्रा ५ से ऊपर लिखे चूर्ण में १ औंस नीचे लिखी दवायें मिलाना चाहिये।

लौंग का तेल ६॥ हिस्सा, एनीस आयल (Anise oil) ६॥ हिस्सा, यूकलिप्टोल (Eucalyhtol) ४ हिस्सा, रूमी मस्तंगी १ भाग, पुरानी सुपारी १ भाग, कत्था १ भाग, अकरकरा ½ भाग, कपूर ¼ भाग, दालचीनी १ भाग, सेलखड़ी १० भाग। सब को कूट पीस कपड़छन करलो। दांतों की बीमारी के लिये यह एक अच्छा दन्त मन्जन है।

२९. कार्बोलिक टूथ पौडर—शोधी हुई खरिया मिट्टी ३००० भाग, लेक्टोज (Lactose) २००० भाग, क्रीम आफ टारटर १३०० भाग, कृत्रिम गुलाब का इत्र (Artificialoil of Rose) २ भाग, आयल आफ जिरेनियम १५ भाग, कार्बोलिक एसिड (Crystals) ८० भाग। सबको अच्छी तरह बारीक करके मिला लो। अगर रंग देना हो तो थोड़ा सा कार्माइन (Carmine) लाल रंग अमोनिया के पानी के साथ घोल कर मिला दो।

३०. गीला दन्त मन्जन—(Tooth Paste) साफ शहद १० तोला, बारीक पिसी हुई सेलखड़ी १० तोला, बच (Orris root) १ तोला गुलाब की पत्ती २ माशा, लौंग का तेल १० बून्द, इलायची का तेल ६ बूंद, चन्दन का तेल ५ बूंद। सब को मिलाकर घोटलो।

३१. रोज टूथ पौडर—कपड़छन की हुई खरिया मिट्टी ५ औंस, पिसा हुआ समुद्र फेन ३ औंस, कार्बोनेट आफ सोडा ३ औंस। विधि:—सब को अच्छी तरह खरल करके आधा तोला गुलाबी रंग मिला कर सब खरल करो। फिर १० बूंद इत्र गुलाब मिला कर एक २ तोला की डब्बी में भर कर लेबिल लगादो।

६ मुख रोग चिकित्सा

मुख रोग के विषय मे आयुर्वेद शास्त्र 'सुश्रुत' 'शारङ्गधर' आदि में कितने ही भेद वर्णन किये हैं इस मुख रोग के पैदा होने के सात अङ्ग होते है। १ मसूड़ा २ दाँत ३ जिह्वा ४ तालु ५ ओष्ट ६ कण्ठ ७ कण्ठ स्थान से लेकर समस्त मुख रोग गिने जाते है। इन सात अङ्गो के भी कितने भेद वर्णन किये गये हैं। यथा —ओष्ट के ८, मसूड़ों के १६, दांतों के ८, जिह्वा के ५, तालु के ९, कण्ठ के १८ और तीन सर्व मुख में ऐसे ६७ भेद वर्णन हैं। इन सब की व्याख्या यहा पर नहीं की जा सकती।' यह मुख रोग विशेष कर वातादिक वस्तु उड़द आदि तथा दूध, दही, मांस भक्षण तथा मीठी नरम खुराक खाने से उत्पन्न होते है। इस मुख रोग की शान्ति के लिये सुप्रसिद्ध वैद्य तथा डाक्टरों ने शास्त्र के आधार पर अनेको औषधियां निर्माण की हैं जिनमे कुछ मुख्य मुख्य औषधियो के प्रयोग अपने पाठकों के हितार्थ लिख कर प्रकाशित करता हूँ, पाठक अपनी अपनी रुचि अनुसार बनाकर प्रयोग मे लेवें।

मुख रोग पर सुगम चिकित्सा

१. होठों के सर्व रोगों पर गाय के घृत को सौ बार धोकर और उसमें कपूर मिला कर लेप करना चाहिये।

२. मसूड़े के सब रोगों पर सरसों के तेल में मधु मिला कर कुल्ले करना चाहिये।

३. जीभ के सब रोगों पर रुधिर निकालने से बड़ा लाभ होता है।

४. मेंहदी के क्वाथ मे तथा पानी मे भिगो कर कुल्ले करने से मुख पाक मिटता है।

५. काग या तालु की छत लटक गई हो तो लाल मिरच को कुछ देर तक मुख में रख कर मुंह का पानी झार देने से ठीक होती है।

६. औटते हुए तीन पाव पानी में १॥ तोला लाल मिरच डाल कर ठंडा करके छान कुल्ले करने से तीव्र मुख पाक मिटता है।

७. ताजा जायफल के रस को पानी में मिला कुल्ला करने से मुख पाक मिटता है।

८. गुलाव के पत्ते चवाने से मुख पाक मिटता है।

९. आल के वीजों की मींगी को पीस लेप करने से जीभ और होठों के रोग मिटते हैं।

१०. गले के छाले मिटाने के लिये शहतूत का रस पिलाना चाहिये।

११. दही में पानी मिला गरारा करने से जीभ की दाह मिटती है।

१२ आम के सूखे पत्ते चिलम में धर कर पीने से गले के रोग मिटते हैं।

१३. कड़वे तेल मे थोड़ा नमक मिला मसूड़े पर मलने से मसूड़े की पीड़ा शान्त होती है।

१४. फिटकरी फुलाकर उसमे थोड़ा नमक मिला दन्त मंजन करने से दांत की पीड़ा दूर होती है।

१५. पीपल को बारीक पीस शहद मिला कर जीभ पर मले फिर लार टपकावे तो जीभ के छाला आदि मिट जावें।

१६. अरणा के पत्तों को औटा कर कुल्ला करने से मसूड़ों की पीड़ा मिटती है।

१७ गले सम्बन्धि रोग मिटाने के लिये कांदे को सिरके के साथ पीस कर चाटना चाहिये।

१८ सिरके मे नमक तथा फिटकरी मिला कर कुल्ला करने से मसूड़ों मे रुधिर का आना वन्द होता है।

१९ वबूल की छाल के चूर्ण को भुरकाने से होठ के छाले मिटते हैं।

२०. कंठ की शोथ मिटाने के लिये शहतूत के पत्ते, जड़ और कोमल डडियो को औटा कर गरारा करना चाहिये।

७—नाशा (नाक) रोग चिकित्सा

वैद्यक शास्त्रों मे नासा रोग के वहुत से भेद तथा लक्षण लिखे है। यथा—१ पीनस (नाक टपकना) २ पूति नाश (नाक मे बुरी गन्ध आना) ३ नासा पाक (नाक मे फुन्शियां होना), ४ पूय शोणित (नाक से मवाद या रुधिर निकलना), ५ (वहुत छींके आना) ६ (छींक बिल्कुल न आना), ७ नाक का चलना ८ प्रतिनाह (नाक मे श्वास न आना) ९ प्रतिश्राव (कफ का बहन) १० नासा शोष (नाक का सूखना), ११ पांच प्रतिश्याय (पांच प्रकार के जुकाम), १२ सप्त नासा अर्बुद (नाक मे सात प्रकार की गोल २ गांठे होती हैं) १३ चार नासार्श (नाक मे चार प्रकार के बवासीर होते है। १४ चार नासा शोप (चार प्रकार की नाक मे सूजन और चार नासा रक्त पित्त। इस प्रकार नासा रोग के लग भग ३४ भेद होते है। इन सब रोगों पर सैकड़ो औषधियां शास्त्र मे वर्णन है, किन्तु मैं पाठकों के लिये बहुत ही सुगम तथा अनुभूत औषधियों के कुछ प्रयोग

पाठकों के हितार्थ वर्णन करता हूं पाठक अपनी २ पहुँच के अनुसार इनको बनाकर अपनी तथा अपने परिवार के नाक सम्बन्धि रोगों का इलाज बिना किसी वैद्य तथा डाक्टर के स्वयं करें।

नासा रोग पर सुगम चिकित्सा

१. गाय के दूध में शक्कर मिला नस्य देने से नकसीर बन्द होती है।

२. दूध में घी मिलाकर पीने या सूंघने से नकसीर बन्द होती है।

३. पूति नास (नाक की पीप युक्त) मिटाने के लिये तुलसी के सूखे पत्तों के चूर्ण की नस्य देनी चाहिये।

४. तुलसी के चूर्ण को सूंघने से पीनस रोग मिटता है।

५. अनार के लाल पुष्पों का रस नाक में टपकाने से या सूंघने से नकसीर बन्द होती है।

६. कांदे का रस निकाल कर सूंघने से नकसीर बन्द हो।

७. हरी दूब का ताजा रस निकाल कर सूंघने से नकसीर बन्द हो।

८. सेर जल को औटावो जब वह पाव भर रह जावे तब उसको पीकर रात्रि के समय सो जावो। ऐसे नित्य कई रोज जल पीने से पीनस रोग नष्ट हो जाता है।

९. आंवलों को पानी में भीगो नरम होने पर उनकी टिकी बना के तालु पर बांधने से नकसीर बन्द होवे, या सूखे आंवलों को घी में सेक कर जल में पीस मस्तक पर लगाने से तत्काल रक्त बन्द होता है।

१०. मोम का धूंआ नाक में सूंघने से छींकों का आना बन्द होता है।

१२. कटेरी को पानी में पीस कर तालु पर लगाने से अथवा पत्ते या जड़ का रस निकाल कर कान में टपकाने से नकसीर वन्द होती है।

१३ चीते की जड़, चव्य, अजवायन, छोटी कटेरी, कञ्जा, लवण व आक के कल्क तथा गौ मूत्र से सिद्ध तेल नासार्श को नष्ट करता है।

१४. छोटी पीपल, सहिजने के बीज, वायविडंग व काली मिरच का नस्य प्रतिस्याय को नष्ट करता है।

१५ जो सोते समय यथैष्ठ जल पीता है उसका पीनस रोग नाश हो जाता है।

१६ भोजन करने पर जो उबाले हुए उड़द गरमागरम खाता है वह सब दोषों से उत्पन्न पुराने प्रतिश्याय को जीतता है।

१७. छोटी कटेरी, दन्ती, वच, सहिजना, तुलसी, त्रिकुटा व सेंधा नमक से सिद्ध तेल नासिका की दुर्गन्ध को दूर करता है।

१८ चौलाई और नीम के पत्तो कनपटी पर लेप करने से नकसीर वन्द होती है।

नासिका रोग पर इङ्गलिश पेटेन्ट औषधि

१९. नोज ड्राप्स (Nose drops) :—एफीड्राइन हाइड्रोक्लोराइड (Ephedrine Hydrochloride) ५ भाग, क्लोरोब्यूटेनल (Chlorobutanal) ३ भाग, व्हाइट मिनरल आयल (Medium white mineral oil) ९९.२ भाग। तेल को थोड़ा गरम करके उसमें क्लोरोब्यूटेनल घोल दें, फिर जरा से अल्कोहोल में एफीड्राइन हाइड्रो क्लोराइड को घुला कर उसे भी तेल में मिलादे और सबको अच्छी तरह हिला कर काम में लेवें।

२०. नाक के कीड़े की दवा—टरपन टायन आयल १ औंस, कार्बोलिक एसिड ५ बूंद दोनों को शीशी में मिलाकर रखें। प्रथम नाक को साफ कर दवा टपकावे तो नाक के कीड़े नाश हो जाते हैं।

---

८ हिक्का (हिचकी) रोग चिकित्सा

यह रोग विशेष कर रूखी तथा भारी, वात कारक, गरम तथा बासी वस्तु का भक्षण करना। मुख तथा नासिका आदि में धूली या धूंआ का जाना, अधिक परिश्रम, मार्ग गमन तथा मल मूत्रादिकों के वेगों को रोकने से होता है। इस रोग के आरम्भ में कण्ठ तथा हृदय भारी हो जाता है, मुख कसैला जान पड़ता है, कुक्षि (कोंख) में आफरा होने लगता है बस इन लक्षणों से जान लेना चाहिये। कि हिक्का (हिचकी) रोग की सवारी आने वाली है। इस रोग पर बहुत सी औषधियां आयुर्वेद शास्त्र में वर्णन हैं उनमें से कुछ मुख्य २ सुगम औषधियों के योग लिखे जाते हैं। पाठक इनको बनाकर अपनी तथा अपने परिवार की चिकित्सा बिना किसी वैद्य तथा डाक्टर की सहायता के स्वयं कर सकते हैं।

हिक्का रोग पर सुगम चिकित्सा

१. गरम दूध पीने से हिचकी बन्द होती है।

२. पीपल के चूर्ण में शक्कर मिला फंकी देने से हिचकी रोग बन्द होता है।

३. उड़द, हल्दी और मक्का की नाल के चूर्ण का धूम पान करने से हिचकी नाश होती है।

४ केवल उड़दों को चिलम या हुक्के में धर कर पीने से भी लाभ होता है।

५. पौदीना को बूरा के साथ चाबने से भी हिचकी मिट जाती है।

६ जीरे को सिरके मे औटा कर पिलाने से तृषा और हिचकी मिटती है।

७ गन्ने का रस पीने से हिचकी मिटती है।

८ जिसको भोजन के समय हिचकी चलती हो उसको अजमोद चूस २ कर पीक निगल जाना चाहिये।

९. नारियल की दाढ़ी की भस्म को पानी में घोल कर पिलाने से हिचकी मिटती है।

१०. दालचीनी के सेवन से हिचकी मिटती है।

११. सोंठ और नीम गिलोय के चूर्ण को सूंघने से हिचकी बन्द होती है।

१२. कुछ गरम २ घृत पीने से हिचकी बन्द होती है।

१३. चनों की भूसी को तमाखू की भांति चिलम में धर कर पीना चाहिये।

१४. चन्दन और धनियाँ के सूंघने से छींके बन्द होती हैं।

१५. लाल चन्दन को सैंधा नमक के साथ स्त्री के दूध मे घिस कर नस्य देने से हिचकी बन्द होती है।

१६. आम के पत्तों की धूम पीने से हिचकी मिटती है।

१७ सोंठ और पीपल के चूर्ण को मधु के साथ चाटने से हिचकी बन्द होती है।

१८ हींग और उड़द के चूर्ण का धूम पिलाने से सब प्रकार की हिचकी बन्द होती है।

१६. मुलैठी के चूर्ण को मधु के साथ चबाने से हिचकी बन्द होती है।

२०. लाख को पीस दूध के साथ नस्य देने से हिचकी रोग नाश होता है।

२१. सोंठ तथा हरड़ के कल्क को सिद्ध कर ऊपर से गरम पानी पिलाने से हिचकी बन्द होती है।

२२. दो माशा हींग और चार नग बादाम की मींगी को पीस कर पिलाने से हिचकी मिटती है।

२३. काकड़ा सींगी, त्रिफला, त्रिकुटा, भट कटैय्या, भारंगी, पाहकर मूल, पांचों लवण समान भाग ले चूर्ण बना गरम जल के साथ पीने से हिचकी श्वांश, डकार और खांसी रोग दूर होता है।

२४. कुलथी, दसमूल, भारंगी प्रत्येक ४ सेर जल ३ द्रोण (३८ सेर ३२ तोला) मिला कर पकाना चाहिये, चौथाई जल शेष रहने पर उतार छान गुड़ ३॥ सेर मिला कर अवलेह बना लेना चाहिये, अवलेह सिद्ध हो जाने पर शहद ३० तोला, बसंलोचन २५ तोला, छोटी पीपल ८ तोला, दालचीनी, तेजपात, इलायची प्रत्येक ८ तोला मिला कर अग्नि बलानुसार सेवन करना चाहिये। इससे हिचकी, खांसी तथा श्वांस रोग नाश हो जाते हैं।

---

९ कास (खांसी) रोग चिकित्सा

यह खांसी रोग भी प्रायः हिचकी आदि रोगों के समान ही पैदा होता है, विशेष कर यह रोग गांजा, भंग, चरस, जर्दा तथा तम्बाकू आदि मादक पदार्थ खाने पीने से तथा मल मूत्रादि का वेग रोकने अथवा चिकनी वस्तु या घी तथा सूखी आदि सर्द

वस्तुओं के भक्षण पर पानी पी लेने से यह खांसी रोग उत्पन्न होता है। शास्त्र में इसके अनेकों भेद तथा उपाय वर्णन किये गये हैं, तिन में से कुछ मुख्य-मुख्य औषधियों के प्रयोग लिखे जाते हैं। इनके द्वारा पाठक अपनी तथा अपने परिवार की खांसी आदि की चिकित्सा विना किसी वैद्य तथा डाक्टर की सहायता के बड़ी सुगमता पूर्वक स्वयं कर सकते हैं।

खांसी रोग पर सुगम चिकित्सा

१. अड़ूसा के पत्ते और जड़ को सोंठ के साथ औटा कर पिलाने से सब प्रकार की खासी शान्त होती है।

२. अड़ूसा के पत्तों के स्वरस में मधु मिलाकर पिलाने से सूखी खांसी मिटनी है।

३ अड़ूसा और काली मिरच के क्वाथ को छान ठंडा कर पीने से भी सूखी खांसी मिटती है।

४. अड़ूसा का अवलेह बना कर चाटने से पुरानी खांसी मिटती है। इसका अवलेह बनाने की विधि राजयक्ष्मा रोग चिकित्सा में देखो।

५. अड़ूसा के पत्तों के स्वरस मे मिश्री मिला पिलाने से सूखी खांसी मिटती है।

६. सोंठ को अग्नि पर सेक उसमे बराबर का गुड़ मिला छोटे बेर के समान गोलियां बना तीन २ घन्टे के अन्तर से एक एक गोली का रस चूसने से खांसी मिटती है।

७. नौसादर को अड़ूसे के क्वाथ पर बुरका कर पीने से कूकर खांसी नाश होती है।

८. गुड़ ८ तोला, यवाक्षार ६ माशा, काली मिर्च १ तोला, पीपल ६ माशा, अनार छिल्का ४ तोला। इनको मर्दन पीस छान

कर गुड़ में गोलियां छोटे बेर के समान बना चूसा करे तो सब प्रकार की खांसी नाश हो जाती है।

९. दो तोला गुड़ तथा एक तोला पीपल को पीस कर गुड़ में मिला बड़े बेर के समान गोलियां बना कर खाने से जीर्ण ज्वर मन्दाग्नि, अरुचि हृदय के रोग, कृमि, पांडु तथा कास (खांसी) श्वांस आदि सब रोग नाश होते हैं। यह गुड़ योग वैद्यक ग्रन्थों में बहुत ही प्रसिद्ध है।

१० सैंधा नमक दो माशा को मधु के साथ पहिले दिन सोते समय चाटे फिर प्रति दिन आधा-आधा माशा बढ़ाते ६ माशा तक बढ़ा लेवे। इसके ऊपर पानी न पीवे यदि तृषा लगे तो थोड़ा गुनगुना पानी पीना चाहिये। इस नमक के प्रयोग से श्वास और खांसी नाश होती है।

११. मिश्री ८ तोला, बन्सलोचन ४ तोला, पीपल २ तोला, इलायची १ तोला, दालचीनी ६ मासा इनका चूर्ण बना घृत तथा शहद युक्त तीन चार माशा रोज खाय तो कास (खांसी), श्वास, क्षय, अंगदाह, मन्दाग्नि, जीभ का जकड़ना, पसली की पीड़ा, अरुचि तथा ज्वरादि सब विकार नाश हो जायं।

१२. पुरानी खांसी को दूर करने के लिये आंवला और मिश्री की फक्की देनी चाहिये।

१३. भारंगी सोंठ, पीपल के चूर्ण में गुड़ मिला कर खावे अथवा सोंठ, मिरच, पीपल के चूर्ण में शहद और घी मिला कर खावे तो खांसी दूर होवे।

१४ कौड़ी की भस्म को पान में रख कर खाने से सूखी खांसी मिटती है।

१५ नारङ्गी मीठी और करेल (बेर) को औटा कर पिलाने से खांसी मिटती है।

१६. खांसी वाले को खोपरे का दूध पिलाना चाहिये। और खोपरा खिलाना भी चाहिये किन्तु इसके ऊपर पानी न पीवे। फेफड़े के रोगों में यह प्रयोग बहुत अच्छा है। यन्त्र के द्वारा दबा कर तेल निकाले हुए से खोपरे का जल के साथ निकाला हुआ दूध अच्छा होता है। इस दूध के सेवन से कफ तथा क्षय के रोगियों को बहुत लाभ होता है और शरीर पुष्ट हो जाता है। खोपरे का दूध इस प्रकार निकालना चाहिये कि इसको महीन कूट कर थोड़े जल के साथ पीस कर निचोड़ने से एक दूध जैसा पदार्थ निकलता है, इसका स्वाद भी दूध से मिलता जुलता सा ही होता है और यह दूध के स्थान पर काम आ सकता है। इस दूध को आध पाव से लेकर पाव भर तक दिन में दो तीन बार पिलाने से शरीर की निर्बलता मिटती है। कफ तथा क्षय रोग के आरम्भ में इसका पिलाना बहुत आवश्यकीय है। इसकी अधिक मात्रा लेने से यह विरेचन का काम भी करता है।

१७. तुलसी के पत्तों से सूखी खांसी मिटती है।

१८. अडूसा और तुलसी के पत्तों का रस पिलाने से भी खांसी मिटती है।

१९. तर खांसी मिटाने के लिये ६ माशा तुलसी के पत्तों का रस चार मासा बड़ी इलायची का चूर्ण मधु मिला चाटने से शीघ्र ही सारा कफ निकल कर खांसी मिट जाती है।

२०. अदरक के रस में शहद मिला कर चाटने से खांसी मिटती है।

२१. खांसी मिटाने के लिये अदरक के छोटे २ टुकड़े कर ऊपर से नमक डाल कर भूनले और एक २ टुकड़ा मुख में रख रस चूसता रहे तो खांसी नाश हो।

२२. अनार की कलियों का दो या ढाई रत्ती चूर्ण खांसी के लिये लाभदायक है।

२३. कुत्ता खांसी और जुकाम की खांसी मिटाने के लिये मकई (मक्का की राख) दो रत्ती मात्रा दिन में दो तीन वार देना चाहिये।

२४. कासारि अवलेह :—अदरक का रस १॥ तोला, मुलैटी २ माशा, जूफा २ माशा, पीपल छोटी ४ रत्ती, शहद ६ माशा। मुलैठी, जूफा और पीपल को पीस छान कर अदरक के रस और शहद के साथ एक सप्ताह तक नित्य चाटे तो कठिन से कठिन खांसी नाश हो जाती है।

२५. कर्पूराद्य चूर्ण :—कपूर, दालचीनी, कंकोल, जायफल, तेजपात, लौंग प्रत्येक एक २ तोला, बालछड़ २ तोला, गोल मिरच २ तोला, पीपल ४ तोला, सोंठ ५ तोला, मिश्री २० तोला। सब को एकत्र पीस कपड़े से छान लो। यह चूर्ण हृदय को हितकारी रोचक, क्षय, खांसी, स्वरभंग, क्षीणता, श्वांस, गोला, बवासीर, वमन और कंठ के रोगों को नाश करता है।

२६. त्रिकुटा १॥ तोला, त्रिफला १॥ तोला, दोनों इलायची ५ तोला, कपूर शुद्ध २॥ तोला, कत्था दो तोला, जायफल २॥ तोला, काकड़ा सींगी २॥ तोला, पीपरामूल २॥ तोला, लौंग २॥ तोला, अदरख का रस दो सेर। इन सब चीजों को कूट पीस कपड़ छन कर अदरख के रस सहित कड़ाई में डाल लोहे के सार से खूब घोटे। जब घुटते २ गोली बांधने लायक हो जावे तब छः २ रत्ती प्रमाण की गोलियां बना ले। और १ गोली पान में रख कर खावे तो खांसी रोग दूर होवे। यदि खांसी सूखी हो तो मिश्री तथा शहद में मिला कर देना चाहिये।

१० श्वांस रोग चिकित्सा

यह श्वॉस रोग भी प्राय खांसी तथा हिचकी रोग की भॉति ही पैदा होता है। जब खांसी पुरानी हो जाती है और कफ खुश्क हो जाता है तो श्वांस रोग प्रगट हो जाता है इसकी चिकित्सा पर कुछ सुगम उपाय वर्णन किये जाते हैं। पाठक इसको बना कर प्रयोग मे लेवें। श्वांस रोग के पैदा होने से पहिले हृदय मे पीडा, शूल, आफरा, मल मूत्रऽवरोध मुखनीरस (फीका) और कनपटियों में पीड़ा हो जाती है शरीर में ऐसे लक्षण जाव पड़े तब समझ लेना चाहिये कि श्वांस रोग की सवारी आने वाली है।

श्वांस रोग पर सुगम चिकित्सा

१. श्वास रोग को मिटाने के पहले दिन सेंधा नमक पीस कर शहद के साथ चाटे ऐसे निन्य प्रति आधा २ माशा बढ़ाते हुए छ. माशा तक बढा लेवे परन्तु इसके ऊपर पानी न पीवे यदि प्यास अधिक लगे तो कुछ गुनगुना पानी पीना चाहिये।

२ श्वांस रोग वाले को लहसुन का रस गरम कर पिलाना चाहिये।

३. खांसी तथा श्वांस पर चिरायते का क्वाथ पिलाना चाहिये।

४ भार्गी और सौंफ का क्वाथ पिलाने से श्वांस मिटता है।

५. बेरी के पत्तो के कल्क मे सेंधा नमक मिला उसको घृत में तल कर खाने से स्वर भंग, खांसी तथा श्वास नाश होते है।

६ पोहकर मूल का चूर्ण मधु के साथ चाटने से श्वांस, कास तथा हिचकी मिटती है।

७ मुलैठी का क्वाथ पिलाने से श्वास नालिका साफ होती है।

८. कास युक्त श्वांस मिटाने के लिये साठे की जड़ का क्वाथ पिलाना चाहिये।

९. अदरक की चासनी में तेजपात और पीपल का चूर्ण मिला कर चाटने से श्वांस और श्वांस की नालिका रोग मिटता है।

१०. श्वांस रोगी तम्बाकू पीना तथा खाना छोड़ दे।

११. गज पीपली के चूर्ण को पान में धर कर खाने से श्वांस रोग मिटता है।

१२ दो माशा माल कॉगनी और इलायची निगलने से कफ कांस मिटता है।

१३. श्वांस रोग मिटाने के लिये १ तोला सुहागा को ४ तोला मधु में मिला कर उसमें से सोते समय तीन अंगुली भर कर चाटना चाहिये।

१४. श्वांस की नली के कफ को मिटाने के लिये सेके हुये चने रात को सोते समय खाकर ऊपर से गरम दूध पीना चाहिये।

१५. आक या धतूरे के १०० पत्ते और काला नमक पाव भर लेकर एक हांडी में धर कर फूंक देवे, भस्म हो जाने पर अदरक के रस के साथ रत्ती या दो रत्ती खाय तो खांसी और श्वांस रोग नाश हो जाता है।

१६. आक की चोफुली और काली मिरच बराबर ले और इन दोनों के बराबर बबूल के अन्दर की छाल के काढ़े किये हुए क्वाथ में गोलियां बना कर खाने से खांसी तथा श्वांस रोग नाश होता है।

१७. आक का एक पान और २७ काली मिरच को पीस कर काली मिरच के बराबर गोली बनाले। इसमें से ७ गोली जवान को और ८ गोली बालक को देने से श्वास मिटता है।

१८ पीपल वृक्ष के सूखे फलों को पीस कर १४ दिन तक जल की फंकी के साथ देने से श्वास रोग मिटता है।

१६. तीन या चार महीना लगातार दिन में दो वार इसब गोल १ तोला रोज खाय तो हर प्रकार का श्वांस रोग नाश होवे।

२०. तीव्र श्वांस रोग में २ रत्ती कपूर और २ रत्ती हींग मिला गोली बनाकर श्वांस के वेग समय दूसरे तीसरे घन्टा देना चाहिए और साथ ही रोगी की छाती पर तारपीन के तेल की मालिश कर सेक करने से कठिन श्वांस रोग मिटता है।

२१. गिलोय का रस ६ मासा, इलायची दो मासा, वंसलोचन १ मासा तीनों को बारीक पीस मधु के साथ चाटने से श्वांस रोग नाश होता है।

२२. धतूरे के सूखे पत्तों को चिलम में रख धूम पान करने से ऐसा तेज श्वांस रोग मिटता है कि जिसमें वांइटे आते हों।

२३. शहद तथा मिश्री के साथ काली मिरच चूर्ण दो तीन मासा खाय तो निसन्देह श्वांस रोग मिटता है।

२४. मिश्री ८ तोला, वंसलोचन ४ तोला, पीपल २ तोला, छोटी इलायची १ तोला, दालचीनी आधा तोला। इन का चूर्ण कर तीन या चार मासा घृत तथा शहद के साथ चाटे तो कास (खांसी) और श्वांस रोग दूर होवे यह योग वैद्यक ग्रन्थों मे सितोपलादि चटनी के नाम से प्रसिद्ध है।

२५ गुड़ तथा कड़ुवा तेल मिला कर चाटने से २१ दिन मे श्वांस निर्मूल हो जाता है। दोनों समान भाग लेकर ४ तोला तक चाट सकते हो।

२६. कायफल, नागर मोथा, कुटकी, सोंठ, काकड़ा सींगी और पोहकर मूल इनके चूर्ण को अदरक के रस अथवा शहत के साथ चाटने से कास (खांसी) और श्वास रोग नाश हो जाता है।

२७. अधपका धतूरे का डोडा लेवे और उसमे गोद कर पांचों नमक भर दे फिर कुलडी मे बन्द कर कपड़ मिट्टी कर फूंक डाले

भस्म होने पर निकाल ले इसकी दो माशा भस्म को दो मा. शहद के साथ चाटे तो श्वांस दूर होवे।

२८. कफ केशरीः—काकड़ा सींगी एक छटांक, सेंधा नमक १ तोला इन दोनों को मिट्टी के पात्रों में एक सेर जल के साथ औटावे जब आध सेर पानी रह जाय तब छान कर बोतल में भरदें। सुहागा एक तोला को फुलाकर पीस डालो और बोतल में डालदो। इस बोतल के पानी को आधी छटांक पानी प्रात. तथा सायं भोजन पश्चात पीने से श्वांस रोग दमन होता है।

२६. वांसाऽवलेह एक तोला चाट कर ऊपर से गरम दूध पीवे तो श्वांस रोग नाश होता है। बनाने की विधि राजयक्ष्मा प्रकरण में देखो।

३०. श्वांस रोगी को दूध पीना हो तो मुलैटी तथा सोंठ का कूटा पीस कर चूर्ण ३ मासा डाल कर पीना चाहिये।

११ मस्तक (शिर) रोग चिकित्सा

१. सिर रोग पर तेल की मालिश करना बफारा लेना, नस्य सूंघना, छींक लेना, वमन करना तथा विरेचन (जुलाब) लेना लाभदायक है।

२. नजले की पीड़ा मिटाने के लिए मजीठ को माथे पर बांधना चाहिये।

३. काली मिरच को घी में घिस कर नाक में टपकाने से आधा शीशी मिटती है।

४. मस्तक रोग में मेंहदी के बीजों को मधु के साथ चाटने से बहुत लाभ होता है।

५. रसौत को मधु में मिला अंजन करने से मस्तक पीड़ा और नेत्र रोग मिटता है।

६ लहसुन की कुली को धो पीस कर कनपट्टियों पर लगाने से आधा शीशी को लाभ होता है।

७. सोठ को पानी के साथ पीस कर लेप करने से आधा शीशी मिटती है।

८ दस नग वड़ी हरड़ की छाल को कूट कर जल में भिगो तीन दिन तक धूप मे रख देवे, चौथे दिन उसको मल छान कर उसमें ११ नग वड़ी हरड़ की छाल डाल कर तीन दिन तक फिर धूप मे रखो फिर उसमे आध सेर बूरा मिला कर शरबत बनाके पीने से मस्तक पीडा और पित्त के सर्व विकार दूर होते हैं।

९. हींग का ललाट पर लेप करने से आधा शीशी मिटती है।

१० हींग का जल बना सूंघाने से भी आधा शीशी मिटती है।

११. हरड़ की गुठली को पानी मे पीस कर लेप करने से आधा शीशी मिटती है।

१२. सौंठ के कल्क को बकरी के दूध में मिला कर नस्य देने से अनेक प्रकार से पैदा हुई मस्तक शूल मिटती है।

१३ नौसादर को ५ से १० रत्ती तक की मात्रा देने से आधा शीशी मिटती है।

१४. नौसादर की १ माशा मात्रा तीन २ घन्टों के अन्तर से तीन बार देने से मस्तक की स्नायु सम्बन्धी पीड़ा मिटे।

१५. नौसादर और हल्दी मिला सूंघने से मस्तक पीड़ा मिटती है।

१६. नीम के पत्तों का रस निकाल मीठा तेल में मिला नाक में टपकाने से मस्तर के कीड़े मर जाते हैं।

१७. आधा झाड़ा के बीजों को पीस के सूंघने से नाक में से पानी पड़े और मस्तक पीड़ा मिटे।

१८. रीठा की १॥ या दो रत्ती गिरी को सूंघने से सब प्रकार के मस्तक वेग मिटते हैं। जो मनुष्य अचेत हो जाता है ऐसी पीड़ा भी मिट जाती है।

१९ अफीम ४ रत्ती और दो लोंग पीस कर गरम कर के लेप करने से वादी और सर्दी की मस्तक पीड़ा मिटती है।

२० अकरकरा को पीस कर गर्म कर ललाट पर लेप करने से मस्तक पीड़ा मिटती है।

२१. त्रिफला और मिश्री को घी में मिलाकर खाने से मस्तक पीड़ा मिटती है।

२२. इलायची २ तोला, बन्सलोचन २ तोला, पीपल २ तोला शतावर ४ पैसा भर चोब चीनी ४ पैसा भर, केसर ६ माशा। इन सब को कूट कपड़ छान कर १० पुड़िया बना लेनी चाहिये। प्रतिदिन एक-एक पुड़िया शहद के साथ खाने से मस्तक की कमजोरी, चक्कर, भवल, शून्यता तथा भनभनाहट आदि सब आराम होते हैं।

२३. आध सेर गाय के दूध में ५ लाल मिरच हांडी में डाल या कलई की देगची में डाल ऊपर से कपड़ मिट्टी की खाप लगा देवे और चूल्हे पर चढ़ा कर मन्द-मन्द आंच से औटावे जब औट जावे तब उतार कर ढक्कन हटा उसके मुंह पर कपड़ा ढक कर उसकी गरम भाप कुछ देर लेकर फिर मिर्चें निकाल फेंक देवे और दूध पीकर सो जावे तो वेग का तीव्र सिर दर्द आराम हो जाता है परन्तु यह क्रिया रोजाना दिन में दो समय लगातार सात दिन तक सेवन करना चाहिये।

२४. घृत में केसर को घोट कर सूंघने से आधा सीसी मिटती है।

२५. सौ से हज़ार बार ठंडे जल से धोया हुआ घृत कई रोगों को मिटाता है यथा:—स्नायु पीड़ा, किसी अङ्ग की शून्यता निश्चेष्टपन, गठिया, जोड़ों का दर्द, शरीर के हाथ पैरों की दाह तथा नेत्र पीड़ा आदि कई रोगों में काम आता है।

२६. आपामार्ग (ओंगा) के बीज त्रिकुटा, हल्दी, क्षार, हींग वाय विडंग के कल्क तथा गोमूत्र से सिद्ध किया हुआ तेल मस्तक के कृमियों को नाश करता है।

२७. भुने तथा छिले चने ३ तोला लेकर महीन पीस कर ४ तोला बादाम के तेल में भून कर फिर निशास्ता ३ तोला, सफेद खसखस के बीज ३ तोला, मिश्री १६ माशा तथा बादाम के तेल में भुना हुआ चने का आटा सबको मिला कर गाय के दूध में डाल दो और मन्दाग्नि से पकाओ जब हरीरा सा बन जाय तब उतार लो। दूसरी कड़ाही में ३ तोला घृत डाल कर गरम करो जब घी औंट आवे तब उसमें हरीरा डाल कर चलाओ जब एक दिल हो जावे तब उतार लो इस हरीरा को गरमा गरम खाने से सब तरह का सिर दर्द आराम हो जाता है। और सिर में खूब ताकत आती है कमजोर दिमाग वालों को यह हरीरा बड़े काम की चीज है।

२८. षड्बिन्दु घृत.—महुआ, मुलैठी, वायविडंग भांगरा, सोंठ, इनको समान भाग लेकर सिल पर पानी के साथ पीस लो, फिर लुगदी से चौगुना घृत और घृत से चौगुना पानी लेकर सबको मिला कर पकाओ जब घृत मात्र रह जाय तब उतार कर छान लो। इसकी नस्य देने से सब तरह के सिर दर्द नाश होते हैं। इससे दांत मजबूत होते, बल बढ़ता तथा गरुड़ की सी दृष्टि हो जाती है। इसका नाम षड् बिन्दु घृत है।

२८. कुमारी तेलः—घी ग्वार का रस ६४ तोला, धतूरे का स्वरस १२८ तोला, गाय का दूध २५६ तोला, तिल का तेल ६४ तोला तय्यार रखो। मुलैठी, सुगन्ध बाला, मजीठ, नागर मोथा, नख कचूर, भांगरा इलैायची, हरड़, पद्माख, कूट, काला भांगरा अडूसा, तालीसपत्र, राल, तेजपात, वायविडंग, मोथा, असगन्ध अरण्ड, बड़, नारियल इनको एक एक तोला लेकर कल्क बना कर रख दो। अब लुगदि, तेल और ऊपर के स्वरस को मिला कर तेल पकालो और खूब अच्छी तरह छान कर किसी सुगन्धित किये हुए बरतन में भर दो और तीन दिन तक जमीन में गाड़ रखो। इस तेल की मालिस करने से और सिर में डालने से अर्दित, मन्या तस्म्भ, हनुग्रह, बहरापन, कान का दर्द ये सब रोग आराम होते हैं। यह तेलसूर्याऽवर्त पर खास उपयोगी है।

२९. कपूर या चन्दन सूंघने अथवा दोनों मिला कर सूंघने अथवा खीरा ककड़ी सूंघने से गर्मी का सिर दर्द आराम होता है।

३०. षट बिन्दु घृत.—मुलैठी, वायविडंग, भांगरा, सोंठ इनको ढाई २ तोला लेकर पानी के साथ पीसलो। फिर गर्म गाय का घी आध सेर, लुगदी और बकरी का दो सेर मठा मिला कर आग पर पकाओ जब घृत मात्र शेष रहे तब छान लो इस घी की नस्य देने से सब प्रकार के सिर रोग नाश होते हैं।

३१. आपा मार्ग तेल—आपामार्ग के बीज, त्रिकुटा, [illegible] नक छीकनी के पत्ते, हींग, वायविडंग इन सबको तीन २ तोला लो और पानी के साथ पीस कर लुगदी बनालो। फिर तिल का तेल १ सेर और गो मूत्र ४ सेर तथा ऊपर की लुगदी सब को मिला कर तेल पकालो। इस तेल की नास लेने से सिर के रोग नाश हो जाते हैं।

३३. धतूरे के बीज थोडे २ चबावे और थूकता रहे तो दस वर्ष का पुराना सिर दर्द भी अच्छा हो जावे।

३४. आवलों को तीन बार आक के दूध मे भिगोवे और सुखा कर बहुत बारीक पीस लेवे और इस मे से थोड़ा सा सूंघे तो कैसा ही पुराना सिर दर्द हो, जाता रहेगा। आधा शीशी को भी आराम हो जाता है, जो सिर का दर्द नजला व जुकाम से होता है वह तथा नाक के कीडे व बदबू भी दूर हो जाती है। दूसरी तरफ के नथने मे नस्य लेने से दाढ का दर्द भी अच्छा हो जाता है।

३५. आधा शीशी—एक छटांक बूरा या खांड का शरबत बना कर सूर्य निकलने से पहले पीना चाहिये। उसमें सुगन्धि के लिए थोडा गुलाब या केवड़ा भी मिला सकते हो। इस प्रयोग मे उसी समय दर्द जाता रहेगा। यदि पहले दिन न जाय तो थोड़े दिन पीना चाहिए।

३६. जमाल घोटे की मींगी घिस कर लगाने से आधा शीशी को आराम होता है।

१२ प्रतिश्याय (जुकाम) रोग चिकित्सा

यह जुकाम रोग सर्दी तथा गरमी दो प्रकार से होता है। शास्त्र मे इसके पांच भेद कहे है। १. वातज, २.पितज,३. कफज ४ त्रिदोषज और पांचवा रक्तज होता है। इसका मुख्य कारण यह है कि गर्मी मे आते ही पसीनों मे पानी पी लिया जावे अथवा सर्दी में कहीं मस्तक आदि को ठंड लग जावे तो जुकाम रोग हो जाता है। दूसरे इसीसे पीनक रोग (कफ के कोप से नाक में स्वांस न आकर रुक जावे और सूख कर धुआं निकलता रहे छींकने सुगन्ध तथा दुर्गन्ध का ज्ञान न रहे) के होने पर इसका यत्न न किया जावे तो इसके बढाव से उपरोक्त ५ प्रकार के

जुकाम हो जाते हैं। इसके लक्षण यह हैं कि छींकें न आवें मस्तक भारी हो जावे अथवा बहुत छींक आवे, रोमांच हो जावे, अङ्ग जकड़ जावें और बुखार हो जावे तो जान लो कि जुकाम रोग हो गया है। इसकी बहुत सी औषधियां शास्त्रों में वर्णन हैं उनमें से कुछ मुख्य २ औषधियों के प्रयोग लिखे जाते हैं कि जिनके द्वारा साधारण पढ़ा लिखा मनुष्य भी अपनी तथा अपने परिवार की चिकित्सा बिना किसी वैद्य तथा डाक्टर की सहायता के स्वयं कर सकते हैं।

जुकाम रोग पर सुगम चिकित्सा

१. जुकाम होने से तीन दिन तक कोई औषधी न लेवे अपितु प्राकृतिक उपचार करता रहे। जुकाम पर प्राकृतिक चिकित्सा:—

१. सूर्य निकलने से पहले ठंडे पानी में नहाना और सिर पर गरम पानी न डालना।

२. पानी को चार घड़ी धूप में और चार घड़ी ओस में रख कर पीना चाहिए।

३. पीली सरसों का तेल रूई से लगा कर दोनों नथनों से दिमाग को चढ़ावे तो १३ दिन चाहे कैसा ही नजला हो, आराम होगा।

४. दहने नथने को खूब साफ करके प्रातः काल ही इसी के द्वारा जल पीवे तो जुकाम दूर होवे।

जुकाम पर औषधी प्रयोग

१. निवाय (कुछ गरम) दूध पर काली मिरच और हल्दी का चूर्ण भुरक कर पीने से ज्वर सहित प्रतिश्याय मिटता है।

२. काली मिरच थोड़े पानी के साथ निगलने से [illegible] मिटता है।

३. पोस्त डोडा को बीजों सहित ६ तोला लेकर क्वाथ बना छटांक बूरे के साथ शरबत बना कर उसमें से ३ तोला मात्रा पानी के साथ देने से जुकाम और खांसी रोग मिटता है।

४. बन्द जुकाम बहाने के लिये नक छींकनी सूंघना चाहिये

५ तुलसी के पत्तों का रस पिलाने से जुकाम मिटता है।

६. दो मासा चूने की कली, दो मासा नौसादर और ३ मासा सौंठ तीनों को पीस पोटली बना सुंघाने से सब प्रकार के जुकाम नाश होते हैं।

७ हल्दी का धुंआ नाक में नली द्वारा चढ़ाने से जमा हुआ दुष्ट कफादि बिखर कर तुरन्त जुकाम मिट जाता है पर उसके ऊपर कुछ घन्टों पानी न पीना चाहिये।

८. स्याह जीरा को घृत में चुपड़े नली के द्वारा धुंआ सूंघने से जुकाम मिटता है।

९. तुलसी पत्र ७ नग, अदरक ६ मासा, काली मिरच ५ नग मुलैठी ६ मासा, मुनक्का २ नग। सबको कूट पीस पाव पानी में डाल कर उबाल लें, जब १॥ छटांक पानी रह जावे तब छान कर पिलादें। इससे जुकाम तथा सर्दी दूर होती है। यह हमारी देसी चाय है जो कभी २ सर्दी में पीने से बड़ी उपकारी है।

१०. अरहर, चना, बाजरा इनको दरदरा कूट कर और नमक मिला कर पोटली बनावे और इसको गरम करके सेके तो जुकाम में आराम हो।

जुकाम पर इंगलिश पेटेन्ट मेडीशन्स

११. जुकाम में सूंघने का अर्क.—(Smelling water)—स्प्रिट कार्बोलिक अर्क १॥ औंस, टरेबीन Terebene) ½ औंस यूकेलिप्टस आयल १ औंस, अमोनिया का पानी (Lqiuir ammonia) ४ औंस। सबको मिलाकर सूंघने वाली शीशी में भरलो और आवश्यकता पर सूंघो।

१२. जुकाम में सूंघने का नोन (Smelling Salt):— टिंक्चर आफ ओरिस रूट (Tincture of orrise root) ३ औंस। आयल आफ लेवेन्डर १ ड्राम। एक्स्ट्रैक्ट आफ वायलेट (Extract voilet) ½ औंस, स्पिरिट आफ आमोनिया ½ औंस। आमोनिया कार्बोनिट यथा आवश्यक। विधि:—ऊपर की चारों चीजों को मिला कर उसमें आमोनिया कार्बोनेट का चूर्ण इतना डाले कि जितने से सब तेल सूख लिया जावे। फिर उसे सूंघने की शीशी में भर देवे

१३. जुकाम में सूंघने का देशी चूर्ण.—चूना और नोसादर को मिला कर शीशी में भर लो। इसको सूंघने से जुकाम तथा शिर दर्द आराम हो जाता है।

१३ अतिसार (दस्त) रोग चिकित्सा

अतिसार रोग प्रायः मिथ्या आहार विहार करने से होता है। जो लोग आटे के छाने हुए (मैदा आदि) के पदार्थ विशेष खाते हैं अथवा अति चिकने, रूखे तथा अति गरम पदार्थ खाते पीते, अथवा भोजन पर भोजन करने तथा कोई विषादि के सेवन करने से अतिसार (दस्त) रोग उत्पन्न होता है। इस प्रकार कुपथ्य करने से मनुष्य के शरीर में जल की वृद्धि होकर पेट की अग्नि को शांत करता है, तब शरीर के भीतर रक्तादि रूप जल विष्ठा से मिल कर पतले मल रूप होकर अपानवायु के वेग से बारम्बार गुदा मार्ग से निकलने लगता है और इसी रोग को अतिसार कहते हैं। अतिसार होने पर हृदय, नाभि, कुक्षि, उदर और पेट में पीड़ा होने लगती है, शरीर दुर्बल हो जाता है, [illegible] और अफारा होने लगता है [illegible]

[illegible]

गये हैं और सैंकड़ों ही औषधियों के उपचार लिखे गये हैं तिनमें से कुछ मुख्य २ उपचार अपने पाठकों के हितार्थ लिखे जाते हे पाठक अपनी २ चिकित्सा विना किसी वैद्य तथा डाक्टर की सहायता से स्वयं करें।

अतिसार रोग पर सुगम चिकित्सा

१. अदरख या सोंठ को भिगो दोपहर बाद उसमें से एक दो गांठ को पीस कर दिन में तीन चार बार पिलाने से अतिसार शीघ्र बन्द होता है।

२. सोंठ, अजवायन तथा अजमोद को शामिल भिगो पीस कर पिलाने से तत्काल लाभ होता है।

३. बेलगिरी को गुड़ मे गोली बना खाने से रक्तातिसार बन्द होता है।

४. तिलों के कल्क में बराबर की मिश्री मिला बकरी के दूध में पिलाने से रक्तातिसार बन्द होता है।

५. पांच तोला अनार के छिल्के को सवासेर दूध में औटावे १५ छटांक शेष रहने पर दिन मे तीन चार बार पिलावे तो अतिसार रोग मिट जावे।

६. अतिसार नाशक—चूर्ण—सोंठ १ तोला, आम की गुठली १ तोला, नागर मोथा १ तोला, मिश्री ८ तोला। सब चीजों को कूट पीस चूर्ण बनालो। मात्रा ३ मासा से ६ मासा तक जल के साथ सायं प्रात. लेने से दस्त तथा खून आना बन्द हो जाता है।

७. आमातिसार नाशक चूर्ण.—आंवला १ तोला, धनियां १ तोला, सोंफ १ तोला, कोसकी १ तोला, गुलाब फूल १ तोल, छोटी इलायची १ तोला, इस्पघगोल भुस्सी ५ तोला, मिश्री ५ तोला। सब चीजों को कूट पीस छान कर मात्रा १ मासा से ३ मासा तक सेवन करें। अनुपान जल । समय तीन २ घन्टा

पश्चात सेवन करना चाहिए। इससे आंवमिले दस्त, पेशाब की जलन तथा ग्रीष्म ऋतु के विकार आदि नाश होते हैं।

८. जामून की गुठली और आम की गुठली के गिरी की चूर्ण की फक्की देने से अतिसार और आमातिसार नष्ट होता है।

९. जामून के छाल के क्वाथ में सोंठ और जायफल को घिस कर पिलाने से अतिसार और आमातिसार नाश होता है।

१०. चूने के पानी में गर्म दूध और गोंद मिला गुदा मे पिचकारी देने से अतिसार मिटता है।

११. चुनिया गोंद, दालचीनी और अफीम की गोली बना खिलावे तो तुरन्त अतिसार मिट जावे।

१२. ईसबगोल के बीजों को सेक कर ३ मासा से ६ मासा तक फक्की देने से अतिसार और आमातिसार मिटता है।

१३ एक कोंदे में आधी रत्ती अफीम रख उसको भूभल में सेक कर खिलाने से आमातिसार मिटता है।

१४. आठ मासा सोंफ को घी में सेक उसके चूर्ण में समान मिश्री मिला ठंडे जल के साथ खाने से कफातिसार और बेलगिरी के साथ इसके चूर्ण की फकी लेने से पित्तातिसार मिटाता है।

१५. तीक्ष्ण आमातिसार में बेलगिरी के चूर्ण की खूब अधिक मात्रा देने से रुधिर तुरन्त बन्द हो जाता है। आमातिसार में १। मासा से चार मासा तक दिन में तीन चार बार अथवा ६ बार देनी चाहिए।

१६. पुराने अतिसार और आमातिसार मिटाने के लिये बेलगिरी, आम की गुठली, कत्था, [illegible] की भुनी, [illegible]-गिरी और शक्कर मिला देना चाहिये।

१७. रक्तातिसार में [illegible] के [illegible] में [illegible] मिला [illegible] से महान लाभ होता है।

१८ चार से ६ मासा तक पोस्त के डोडे पीस पिलाने से अतिसार मिटता है।

१९. पुराना अतिसार तथा आमातिसार मिटाने के लिये अतिम के चूर्ण की फक्की देनी चाहिये।

२० जायफल, छुआरा और अफीम तीनों सम भाग ले नागर वेल के पान के रस में खरल करके १ रत्ती प्रमाण की गोली बनाकर एक गोली छाछ के साथ सात दिन तक खाने से महाभयङ्कर सब प्रकार के अतिसार नाश होते है।

२१. दूध, सौंफ और सौंठ तीनों को साथ औटा कर पिलाने से आमातिसार मिटता है।

२२. आक के फूल की चोकोर टाख, झाडी वेर की लाख और मुनक्का प्रत्येक एक २ छटांक ले सबको बारीक पीसले फिर उसमें तीन मासा अफीम मिलाकर चने प्रमाण गोली बनावे। और एक २ गोली तीन २ तथा दो २ घन्टा के अन्तर से देवे तो आंव, मरोड़ा तथा पेचिस आदि रोग शीघ्र ही बन्द हो जाते है।

२३. लघु गङ्गाधर चूर्ण —नागर मोथा, इन्द्र जौ, वेलगिरी; पठानी लोध, मोचरस और धाय के फूल इन सबको समान भाग ले चूर्ण कर छाछ मे गुड़ मिलाकर पीवे तो सम्पूर्ण अतिसार बन्द होवे।

२४. बृहत गङ्गाधर चूर्ण.—नागर मोथा, टेटू, सोंठ, धाय के फूल, लोध, नेत्रवाला, बेलगिरी, मोचरस, पाढ, इन्द्र, जौ कूड़ा की छाल, आम की गुठली, अतीस, लजालु इन १४ चीजों का चूर्ण कर चावलों के धोवन के जल मे शहद मिला कर पीवे तो सम्पूर्ण अतिसार बन्द होवे।

२५. सोंठ को घी मे भुना कूट पीस उसमे बराबर की मिश्री मिला ६ मासा की फकी लेवे तो आमातिसार मिटता है।

अतिसार रोग पर इङ्गलिश मेडीशन्स

२६. डिसेन्टरी सोल्यूशनः—एक्स्ट्रेक्ट बेल लिकविट २ ड्राम ४ मिनिम। एक्स्ट्रेक्ट हेमामिलाडिस ४० मिनिम। टिंचर क्लोरो-फार्म को० ४० मिनिम। एक्सट्रेक्ट मानसोनी ४ ड्राम। एक्वा डिस्टिल्ड ८ औंस। सब को मिला कर एकत्र करो। इससे शूल, मरोड़, पेचिस आदि नाश होते हैं।

२७. टेमीरिण्डस सीरपः इमली के फल का गूदा १ औंस। पानी १५ औंस। मिश्री या शक्कर ४ औंस। प्रथम इमली को पानी में घोल दे, फिर मिश्री मिला कर इतना उबाले कि एक उबाल आ जाय तब तुरन्त उतार लेवे और छानकर बोतल में भर कर कार्क लगा दे। मात्रा प्रति खुराक ½ औंस। इसके सेवन से बुखार पेचिस, हलक की सूजन, प्यास की शान्ति तथा हैजा आदि रोग शांत होते हैं।

२८. डायरिया क्योरः—यह एक योरोपियन महाशय की पेटेन्ट है। कच्चे कोमल बेल फल को अच्छी प्रकार से चूर्ण करो और कपड़े से छान लो। इस चूर्ण को एक पाव लेकर १० सेर जल में खूब औटावो, जब १ सेर रह जावे तब उतार कर छान लो। इसमें आध सेर मिश्री मिला कर शर्बत तैयार करो। और अच्छी तरह से छान कर शीशियों में भर दो, और प्रयोग में लावो।

२९. अतिसार गज केसरी—पारद शुद्ध ५ ग्रेन, गन्धक ५ ग्रेन। भांग के फूल ५ ग्रेन, जायफल १० ग्रेन, अफीम १५ ग्रेन नागर मोथा ५ ग्रेन, लौंग ५ ग्रेन। प्रथम पारद और गन्धक की कज्जली करो। बाद में सबको बारीक पीसकर [illegible] चूर्ण [illegible] साथ मिलाकर खरल करो और [illegible] के [illegible] की भावना दो।

इस प्रकार पोस्त के डोडेकी सात भावना दो और तीनबार आंवला के रस की भावना देवे। मात्रा २ रत्ती नींबू की सिकंजबीन के साथ पीना चाहिये।

---

१४. संग्रहणी रोग चिकित्सा

अतिसार रोग हो जाने के पश्चात ही चिकित्सा न होने पर संग्रहणी रोग हो जाता है। इसमें संग्रहणी नाम कला का है वह संग्रहणी कला अग्नि मंद कर खाये हुए आहार को कच्चा (विना पका हुआ) तथा पके हुए को पतला कभी गाढ़ा बाहिर निकालती रहती है। इसी का नाम संग्रहणी है।

संग्रहणी रोग पर सुगम चिकित्सा

१. खटी छाछ में सैंधा नमक डाल पीने से संग्रहणी मिटती है।

२. पित्त की संग्रहणी मिटाने के लिये गाय की छाछ में शक्कर मिला पिलाना चाहिये।

३. छाछ में सोंठ, मिर्च, पीपल और सैंधा नमक मिला पिलाने से कफ और वादी की संग्रहणी मिटती है।

४. अनार की छाल के क्वाथ में सोंठ और चन्दन का बुरादा भुरका के पिलाने से रुधिर युक्त संग्रहणी मिटती है।

५. मूसली का १ तोला चूर्ण छाछ में मिला पिलाने से संग्रहणी मिटती है।

६. अफीम और केसर को मधु (शहद) मे घिस कर एक चावल भर देने से सब प्रकार का अतिसार तथा संग्रहणी मिटती है।

७. दो मासा भांग को भून कर ३ मासा शहद के साथ चाटने से संग्रहणी दूर होती है।

८. कच्चे बील की गिरी और सौंठ को छाछ में मिला पिलाने से संग्रहणी मिटती है।

९. कतीरा गोंद ६ मासा रात को आध पाव पानी में भिगो प्रातःकाल मल के १ तोला शक्कर डाल कर पीने से संग्रहणी मिटती है।

१०. सनाय की पत्ती, हरड़े, बहेड़ा, आंवला तथा काला नमक समान भाग ले कूट पीस कपड़ छान कर नींबू के रस में घोट गोली बना कर सायं प्रातः सेवन करे तो सब प्रकार की संग्रहणी नाश होवे।

११. मरीच्यादि चूर्णः—काली मिर्च, चीते की छाल, सञ्चर नमक इनका चूर्ण कर छाछ मिला कर पीने से संग्रहणी, उदर विकार, मन्दाग्नि, गोला तथा बवासीर नष्ट होवे।

१२. अनार दाना, मिश्री दोनों आठ २ पल, पीपल, पीपरा मूल, अजमोद, काली मिरच, धनिया, जीरा, सोंठ प्रत्येक एक २ पल, बन्सलोचन १ तोला, दालचीनी, तेजपात, नाग केसर प्रत्येक आठ २ मासा लेकर चूर्ण करे। इसके सेवन से अतिसार संग्रहणी और खांसी दूर होवे।

१३. लवण भास्कर चूर्ण १ तोला को नित्य गौ की छाछ के साथ सेवन करे तो संग्रहणी दोष दूर होवे। इसके बनाने की विधि स्वादिष्ट चूर्ण चटनी नामक पुस्तक में देखो।

---

१५ उदर (पेट) रोग चिकित्सा

यह रोग मन्दाग्नि, अजीर्ण तथा [illegible] [illegible] [illegible] रोकने से होता है और त्रिदोष कुपित हो जाने से [illegible], रस तथा पसीना आदि बहने वाली नाड़ियां रुक जाती हैं और [illegible] [illegible] [illegible]

वायु को विगाड़ देती है तब पेट एक दम फूल जाता है और कब्जी होकर शूल होने लगती है इस रोग के ८ भेद आयुर्वेद शास्त्र में वर्णन किये हैं यथा —१ वातोदर २ पित्तोदर ३ कफोदर ४ त्रिदोषदर ५ जलोदर ६ प्लीहोदर ७ बद्ध गुदोदर ८ क्षतोदर। इस प्रकार आठ भेद जानना। इसकी चिकित्सा पर भिन्न २ अनेकों औषधियां भी वर्णन हैं जिनमें से कुछ मुख्योपयोगी औषधियों के प्रयोग पाठकों के हितार्थ प्रकाशित किये जाते हैं। पाठक बिना किसी वैद्य या डाक्टर की सहायता के अपने पेट सम्बन्धी अनेक रोगों की चिकित्सा स्वयं कर सकते हैं।

उदर रोग पर सुगम चिकित्सा

१. काला नमक के साथ अजमोद की फक्की देने से पेट की पीड़ा मिटती है।

२. अगर को पीस गरम कर लेप करने से पेट की पीड़ा मिटती है।

३. अरणी के पत्तों का शाक बना कर खाने से पेट की वादी मिटती है।

४. अजमोद को गुड़ के साथ औटा कर पिलाने से पेट शूल मिटता है।

५. अजमोद की गुड़ में गोली बना कर देने से पेट का अफरा मिटता है।

६. अजीर्ण और पेट शूल मिटाने को अंगूर का सिरका पिलाना चाहिये।

७. कांदे के रस में हींग और काला नमक डालकर पिलाने से पेट की शूल तथा अफरा मिटता है।

८. ग्वार पाठा की जड़ को औटा छान उस पर सेकी हुई हींग भुरका कर पीने से पेट की शूल मिटती है।

९. पेट का अफारा मिटाने के लिए रालुवे को पीस नाभि पर लेप करने से दस्त आकर आराम होता है।

१०. आमाशय की शूल मिटाने के लिए चम्पा के पुष्पों का क्वाथ पिलाना चाहिये।

११. पके हुए जामुन का सिरका पीने से शूल मिटता है।

१२. पीपल के चूर्ण में काला नमक मिला फक्की देने से पेट शूल मिटता है।

१३. लाल मिरच को गुड़ में गोली बना देने से पेट शूल मिटता है।

१४. अनारदाने का रस पीने पेट से का शूल मिटता है।

१५. आंतों का रोग मिटाने के लिए मसूर का सेवन करना चाहिये।

१६. सोंठ भुनी हींग तथा सैंधा नमक की फक्की गरम जल के साथ लेने से अजीर्ण मिटता है।

१७. हींग और सैंधा नमक को गौ मूत्र में औटा कर नाभि पर लेप करने से पीड़ा युक्त शूल मिटती है।

१८. शुद्ध हींग का घृत के साथ सेवन करने से मस्तक शूल मिटता है।

१९. गुड़ में हींग की गोली बना देने से अफारा मिटता है।

२०. पित्त पापड़ा के रस में दूध और शक्कर मिला कर पिलाने से पाकस्थली की दाह मिटती है। पित्त पापड़ा तथा वायविडंग औटा कर पिलाने से पेट के कीड़े मरते हैं।

२१. लवण भास्कर चूर्ण की ६ मासा से एक तोला तक फंकी देने से उदर शूलादि पेट के समस्त रोग नाश होते हैं।

२२. सोंठ, हरड़, पीपल, सांभर नमक को सम भाग ले [illegible] चूर्ण करे। इसके सेवन करने से उदर [illegible], पेट फूलना मन्दाग्नि, बवासीर आदि को दूर करता है।

२३. पीपल १ तोला, निसोथ ४ तोला, मिश्री ४ तोला इनका चूर्ण शहद के साथ सेवन करे तो अफारा रोग दूर हो जावे।

२४. एक पाव कागजी नीम्बू को लेकर रस निकाल किसी बोतल में भर दे और एक पाव द्रोण पुष्पी का रस उस में मिला दे। एक पिसी कौड़ी उसमें डालकर कार्क लगा बोतल को सुरक्षित धूप में रख दे। २१ दिन बाद छान कर काम में लेवे। यह औषधि ३ मासा की मात्रा में प्रातः सायं सेवन करने से आमाशय पीड़ा को दूर करता है। शूल के रोगियों को अवश्य सेवन करना चाहिये।

२५. उदरशूलांतक लेपः—एलवा, कूट, कुटकी मैनसल नौसादर, फिटकरी, चौकिया सुहागा, सैंधा नमक। सब चीजों को एक २ तोला ले कूट कपड़ छान,कर जल में पीस गरम कर पेट पर लेप कर दे। यह दवा एक समय लेप करने की है।

२६. एक बड़ी बोतल में गरम पानी भर कर उसका मुंह मजबूत काग से बन्द करके पेट पर फेरने से उदर शूल शांत हो जाता है। बोतल से सेकते समय पेट पर एक कपड़ा फैलाकर सेक करने से पेट के जलने का भय नहीं रहता। यह डाक्ट्री क्रिया है, इसे फोमेन्टेशन (Fomentation) कहते हैं।

२७. उदर शूलान्तक वटीः—सौंठ का चूर्ण ५ तोला, काला नमक २½ तोला, सुहागा फूला हुआ १¼ तोला, भुनी मुलतानी हींग ८ मासा। इन सब को तैयार कर ले। पहिले मुलतानी हींग को गाय के घी में भून लो और उसको सहिजने की जड़ के रस में खरल करो, इसके बाद उसमें आग पर फुलाया हुआ सुहागा डाल कर खरल करो, और शेष में काला नोन डाल कर खरल करो। जब मसाला घुटने २ गोली बनाने लायक हो जावे तब कुल मसाले की ४८ गोलियां बनालो और छाया में सुखावो।

प्रातः सायं एक २ गोली नित्य गरम जल के साथ २७ दिन तक खाने से शूल रोग शांत हो जाता है। नये पुराने दोनों रोगों पर चलती है इसको श्रीमान ईश्वर चन्द्र विद्यासागर बड़े प्रेम से बना कर रोगियों को बांटा करते थे।

२८. नमक सुलेमानीः—पेट के समस्त रोगों को नाश करने वाला बहुत ही प्रसिद्ध नमक है। इसके बनाने की क्रिया पेटेन्ट मेडीशन्स नामक पुस्तक में देखो।

---

१६ उदर तिल्ली चिकित्सा

यह तिल्ली पेट में होती है, इसका एक छोटा सा अवयव जो मांस की पोली गुठली के आकार का होता है और पसलियों के नीचे पेट की बांई ओर रहती है। ज्वर के कुछ अधिक काल ठहर जाने पर यह तिल्ली बढ़ जाती है और कभी २ छूने से पीड़ा भी होती है। इस रोग से मनुष्य दिनोत्तर दुबला होता जाता है, उसका मुख सूख जाता है और पेट निकल आता है। जब यह तिल्ली बढ़ जाती है तब मन्दाग्नि, ज्वर आदि अनेकों उपद्रव होने लगते हैं। इसकी अनेकों चिकित्सा हैं जिनमें से कुछ सुगम तथा उपयोगी प्रयोग पाठकों के हितार्थ वर्णन करता हूं कि जिनसे आप अपनी तथा अपने परिवार के पेट की तिल्ली की चिकित्सा बिना किसी वैद्य तथा डाक्टर की सहायता स्वयं करें।

तिल्ली रोग पर सुगम चिकित्सा

१. आक के पत्तों के बराबर सैंधा नमक ले दोनों को कूट हांडी में भर कर पका मिट्टी से मुंह बन्द कर जला कर भस्म कर लेवे। इसकी फक्की देकर ऊपर से मट्ठा पिलाने से तिल्ली नष्ट हो जाती है।

२. गाजर का अचार खिलाने से तिल्ली मिटती है।

३. गुवार पाठा के गिरी पर सोहागा बुरका कर खाने से तिल्ली कटती है।

४. नौसादर की १॥ मासा की मात्रा मूली के रस में मिला कर पिलाने से तिल्ली कटती है।

५. करणे का अचार बना कर खाने से तिल्ली कटती है।

६ एक भाग भुना हुआ सुहागा और तीन भाग राई ले दोनों को पीस प्रात सायं १ मासा की फक्की लेने से तिल्ली कटती है।

७. अजवायन जितनी खा सके उतनी दोनों समय खाने से तिल्ली मिटती है।

८. चूने को मधु के साथ लेप करने से तिल्ली मिटती है।

९. जामुन का १। तोला रस अथवा सिरका पीने से तिल्ली मिटती है।

१०. करेला के रस में राई और नमक डाल पीने से बढ़ी तिली मिटती है।

११. शंख का चूर्ण ४ तोला, सीप का चूर्ण ४ तोला, आंवला सारगंधक (शुद्ध) ४ तोला, मंडूर (शुद्ध) ४ तोला, भुना सुहागा ४ तोला, नौसादर ४ तोला, सांभर नमक ४ तोला, सौंठ का चूर्ण ४ तोला, पीपल का चूर्ण ४ तोला चीते का चूर्ण ४ तोला अजवायन का चूर्ण ४ तोला। इनसब चीजों को कूट छान कर जम्बीरी नींबू के १ सेर रस में मिला कर मजबूत काकदार बोतलों में भर दो और उनको जमीन में गाड़ दो। १४ दिन बाद निकाल कर काम में लो। इसमें ४ मासा दवा भोजन बाद दिन में दो या तीन समय खाने से तिल्ली, गोला, शूल, अजीर्ण आदि रोग नाश हो जाते हैं। यह बड़ी अच्छी चीज है। प्रत्येक गृहस्थ को अपने घर में बना कर रखना चाहिये।

१२. नौसादर, सुहागा, कलमी शोरा, काली मिरच सबको समान भाग ले घी गुवार के रस में मिला कर तिल्ली वाले को खिलावे। दूसरे दिन घी गुवार का गूदा ज्यादा लेवे और तीसरे दिन उससे भी ज्यादा लेवे। इस तरह सात दिन तक घी गुवार का गूदा बढ़ा २ कर लेवे। उससे तिल्ली अवश्य शान्त होगी।

तिल्ली रोग पर इंङ्गलिश मेडीशन्स

१३. लीवर सोल्यूशनः—एमोनिया क्लोराइड ८० ग्रेन, एसिड हाइड्रोक्लोर ८० मिनम, एक्सट्रेक्ट लाटेकर ४ ड्राम, लाइकर स्ट्रिकनाइन ४० मिनिम, टिंचर क्लोरो फार्म ४० मिनिम, डिस्टि-ल्ड वाटर ८ औंस। सब को मिला कर बोतल में भर दो और ½ औंस सेवन करे। इससे यकृत दोष आराम होता और इसके साथ होने वाले ज्वरादि भी शान्त होते हैं।

१४ स्पलीन क्योर.—टि० फेरीपर क्लोर ½ ड्राम, लीकर आर सेनिक १५ बूंद, कुनैन सल्फ १५ ग्रेन, मग्नेशिया सल्फ ४ ड्राम एक्स्ट्रेक्ट अर्गट लिक्वीडम २० बूंद, एमोनिया क्लोराइड १ ड्राम एक्वा क्लोरो फार्म ३ औंस। सबको विधि सहित मिला दो, यह ३२ खुराक दवा है। कुछ दिन खाने के बाद दिन में ३ बार एक एक मात्रा दवा खिलाओ। खाली पेट दवा न पीओ।

१५. ताप तिल्ली तथा ज्वरः—इसके खाने की विधि ज्वर रोग चिकित्सा में देखो।

१७ जलोदर (Dropsy) रोग चिकित्सा

यह जलोदर रोग बड़ा भयंकर होता है, इसमें [illegible]

(नाड़ियां दूषित हो जाती हैं, और चिकनाई से लिपटी हुई क्रम २ से बढ़ कर जलोदर (जलन्धर रोग को पैदा करती हैं, अर्थात उस शीतल जल से पैदा हुआ जलोदर नाभि के पास गोल और चिकना होकर पानी भरी मसक के समान बढ़ता जाय तब मनुष्य उससे बहुत दुखी हो और उसका शरीर कांपे और पेट बराबर बोले तो समझ लेना चाहिये कि हमको जलोदर रोग हो गया है। मैं इसकी कुछ सुगम तथा उपयोगी औषधियों को लिख रहा हूं। पाठक इनको सहज ही में बना कर काम में ले सकते हैं।

१. जलन्धर, जुकाम, पुरानी खांसी और ज्वर में कांदा का प्रयोग लाभकारी है।

२. जलन्धर वाले के पेट पर कौंच की जड़ का लेप करना तथा उसका टुकड़ा रखना और कलाई पर बांधना चाहिये।

३. आक के हरे २ पत्ते २० तोला १४ मासा और हल्दी इन दोनों को महीन पीस उड़द बराबर गोलियां बनालें और नित्य ४ गोली ताजा जल के साथ देवे या एक २ गोली नित्य बढ़ाता हुआ ७ गोली तक बढ़ा देने से जलोदर को अराम होता है।

४. आक के पत्तों को नमक के साथ कूट कर मिट्टी के बर्तन में कपड़ मिट्टी कर जलावे। उस भस्म की मट्ठे (छाछ) के साथ फक्की देने से जलोदर मिटता है।

५. दो तोला शहद में दुगना पानी मिला औटा कर पिलाने से जलोदर मिटता है।

६. मूली के पत्तों का रस पिलाने से जलोदर मिटता है।

७. गाय का गोबर और सैंधा नमक मिला कर लेप करने से जलोदर कम होना

८. सिरका पिलाने से जलन्धर मिटता है।

९. चार तोला चना पाव पानी में औटा कर आधा पानी रह जाने पर उसको गुनगुना सा पिलाने से जलन्धर मिटता है।

१०. करेला के दो तोला रस में थोड़ा शहद मिला पिलाने से दस्त होकर जलोदर मिटता है।

११. केरूंदा के पत्तों का रस पहिले दिन १ तोला पीछे एक एक तोला बढ़ाता हुआ १० तोला तक बढ़ा देवे। ऐसे प्रातःकाल नित्य एक महीना के लगभग पीने से जलोदर मिटता है।

१२. सनाय को आंवला के रस के साथ लेने से जलन्धर मिटता है।

---

१८. गठिया तथा संधिवात रोग चिकित्सा

यह रोग विशेष कर खट्टा, तीक्ष्ण, कषैला तथा गरम चीज खा पीकर एक दम स्नानादि कर लेने से वायु कुपित हो कर जोड़ों में प्रवेश कर जोड़ों को ढीला कर देती है, और जोड़ों के दर्द को ही संधिवात कहते हैं। गठिया रोग में शरीर का कोई एक अङ्ग अथवा सर्व शरीर शून्य हो जाता है और असह्य वेदना होती है, बस इसी का नाम वात रोग है। इस वात रोग के जितने भेद तथा लक्षण आयुर्वेद शास्त्रों में वर्णन किये गये हैं। जो सब के सब इस छोटी सी पुस्तक में लिख कर नहीं बतलाये जा सकते। अतः इस रोग पर मैं अत्यन्त सुगम चिकित्सा लिख देता हूं कि जिसके द्वारा हमारे साधारण पढ़े लिखे मनुष्य भी अपनी तथा अपने परिवार की चिकित्सा बिना किसी वैद्य तथा डाक्टर की सहायता के स्वयं कर सकते हैं।

संधिवात रोग पर सुगम चिकित्सा

१. अकरकरा को लौंग के साथ देने से शरीर की शून्यता मिटती है।

२. सिर में मीठा तेल मिला जोड़ों पर गठिया पर मलने से आराम होता है।

३. घुटने में तेल मर्दन करके ऊपर से सोंठ का महीन चूर्ण मसलो फिर ऊपर से तेल चुपड़ उसके ऊपर अरण्ड के पत्ते बांधने से घुटनों की पीड़ा मिटती है।

४. सहिजनों के पत्तों या बीजों को महीन पीस उसका गुनगुना लेप करने से घुटनों की पीड़ा मिटती है।

५ उड़दों का क्वाथ बना कर पिलाने से हड़फुटनी मिटती है।

६. तुलसी के पत्तों का रस और काली मिरच के चूर्ण को घी के साथ चाटने से वात रोग मिटता है।

७. मालकांगनी के तेल की १० से १५ बून्द तक देने से शरीर की शून्यता मिटती है और कुछ घण्टों पीछे खुलासा पसीना होकर शरीर हल्का हो जाता है। स्नायु सम्बन्धी और किसी अङ्ग के शून्यता और निश्चेष्टपन मिटाने के लिये यह तेल बड़ा उपकारी है।

८. जोड़ों की पीड़ा मिटाने के लिये अलूणी रोटी घृत डाल कर खानी चाहिये।

९ चिरायते को मधु में मिला गरम कर लेप करने से कुबड़ापन मिटता है।

१०. नीम की निबोली का तेल मर्दन करने से पक्षाघात मिटता है।

११. सौंठ और सैंधा नमक को पीसकर सूंघने से पक्षाघात मिटता है।

१२. कैर की लकड़ी को घिस गरम कर लेप करने से सूजन मिटती है।

१३. मेंहदी और एरण्ड के पत्ते पीस कर लेप करने से घुटनों का दर्द मिटता है।

१४ कांदे का रस और राई का तेल बराबर मिला मर्दन करने से गठिया की पीड़ा मिटती है।

१५. गिलोय का हिम या क्वाथ पीने से पुरानी गठिया की पीड़ा मिटती है

१६. गठिया, जोड़ों की सूजन और पक्षाघात सम्बन्धी रोग सर्दी से उत्पन्न होते हैं। इन रोगों में मालकांगनी को खाना और लगाना चाहिये। इसको इस प्रकार खावे कि पहले १ बीज दूसरे दिन दो बीज फिर नित्य एक २ बीज बढ़ाते जाना ऐसे १५ दिन में १५ बीज बढ़ाना चाहिये। इसके बीजों को जब से खाना शुरू करे तब से इसका तेल उस अङ्ग पर या उसके साथ वैसे ही दवाइयों को पीस कर लेप भी करना चाहिये।

१७. पुरानी गठिया और स्नायु सम्बन्धी रोगों पर कुचला, सोंठ और सांभर के सींग का लेप करने से आराम होता है।

१८. गठिया का तीव्र वेग मिटाने के लिये मेंहदी के ताजा पत्तों को महीन पीस रात्रि को सोते समय गाढ़ा लेप करना चाहिये, जब तक गठिया न मिटे तब तक बराबर लेप करते रहना चाहिये।

१९. सैंधवादि तैल:—सैंधा नमक ८ तोला, सोंठ ३० तोला, चीते की छाल ८ तोला, पीपरामूल ८ तोला, भिलावा की मींगी २८ तोला, कांजी २१५ तोला, अरण्डी का तैल ३२० तोला, इन

सब चीजों को कढ़ाई में डाल तेल की विधि से पका कर तेल तैय्यार करे और इसकी मालिश करे तो वात पीड़ा दूर होवे।

२०. वात गजांकुश वटी.—शुद्ध गन्धक, शुद्ध कुचला, भुना सुहागा, भुनी हींग, हरड़ के छिलके, बहेड़ा का छिलका गुठली निकाललो, आंवले, काला नोन, सैंधा नोन, सौंठ, पीपरा मूल, चीते की छाल, पुराना गुड़। इन १३ चीजों को एक २ तोला लेकर खूब महीन पीस छान लो, फिर खरल में डाल नींबू का रस दे २ कर घोटो, घुट जाने पर डेढ़ २ मासा की गोलियां बनालो और छाया में सुखालो। इनके सेवन करने से दस्त साफ होता, और भूख खूब लगती, और नसों मे बल बढ़ता है। प्रातः नित्य एक गोली खानी चाहिये।

२१. धतूर तेल—काले धतूरे के पत्तों का रस १ सेर तैय्यार करो। सफेद चिरमिट्टी, बच्छनाग विष और काले धतूरे के बीज तीनों को मिला कर लुगदी तैय्यार करलो। अब लुगदी, धतूरे का रस और पाव भर तिल्ली के तेल को कढ़ाही में डाल मन्दाग्नि से पकाओ, तेल मात्र रहने पर उतार लो और दर्द स्थान पर मालिश करो। यह तेल वात नाशक है।

२२. वात रोगान्तक चूर्ण—सौंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, काला नोन, सफेद जीरा सबको एक २ तोला लेकर पीस छान लो। इसकी मात्रा ३ मासा से ६ मासा तक है। इससे वात रोग नाश होते तथा दस्त साफ होते हैं।

वातारि तेल.—कुचला २ तोला, अफीम छ मासा, काले धतूरे के पत्तों का रस ४ तोला, लहसुन का रस ४ तोला, चिरायते का रस ४ तोला, नींबू का रस ४ तोला, तम्बाकू के पत्तों का रस ४ तोला, दालचीनी ४ तोला, अजवायन ४ तोला, मेथी ४ तोला,

इन सब को कड़ाही में डाल और ऊपर से १ सेर कड़वा तेल डाल दो। फिर मन्दाग्नि से पकाओ, तेल मात्र रहने पर उतार लो और छान लो। इसकी मालिश से वात रोग और सब प्रकार के दर्द नाश होते हैं।

२४. समस्त वात रोगान्तक तेलः—सोंठ १० तोला, उत्तम सुरती १० तोला, छोटी पीपल ५ तोला, भांग ५ तोला, हींग १ तोला, अफीम १ तोला, भिलावा १ तोला, कुचला १ तोला, काली मिर्च १ तोला। इन सबको पीस कर १ सेर तिल्ली के तेल और १ सेर सरसों के तेल में मिला दो फिर कड़ाही में डाल मन्दाग्नि से पकाओ, जब तेल मात्र शेष रह जाय तब उतार कर छान लो। इसकी मालिश करने से वातज दर्द, कमर का दर्द, पीठ का दर्द, छाती का दर्द, पसली का दर्द, पैरों का दर्द, हाथ का दर्द, घुटने का दर्द, कुबड़ापन, लंगड़ापन, सूजन, शीतांग तथा सन्निपात आदि के रोग नाश हो जाते हैं।

२५. एरण्डपाक—यह पाक वात सम्बन्धी समस्त रोगों का नाश करता है। इसके बनाने की विधि बल पुरुषार्थ तथा धातु पुष्टि कर नामक पुस्तक में देखो।

२६. मेथी पाकः—मेथी दाना ३२ तोला, सोंठ ३२ तोला। इन दोनों को महीन कूट पीस कपड़ छान करलो, फिर इस चूर्ण को ३॥ सेर दूध में डाल कर पकाओ जब खोआ हो जावे तब उतार लो। फिर सोंठ काली मिरच, छोटी पीपल, पीपरा मूल, चीता, अजवायन, धनिया, सफेद जीरा, कलौंजी, सौंफ, जायफल, कचूर, दालचीनी, तेजपात, नाग केसर, नागर मोथा इन सब दवाइयों को चार २ तोला लेकर कूट पीस कपड़छान करलो और खोआ ६ छटांक घी में जरा भुन लो, फिर दो सेर बूरा की चाशनी

तैयार करो, उसमें मैथी आदि का खौआ और घी में भुना हुआ दवाओं का चूर्ण डाल कर मिला लो। जब जमने लायक चाशनी हो जावे तब उतार कर आधी आधी छटांक के लड्डू बनालो इसके सेवन करने से समस्त वात रोग आमवात, पाण्डु रोग, मृगी, उन्माद, प्रमेह, रक्तपित्त, अम्लपित्त, सिर दर्द, नाक के रोग, आखों के रोग और सूतिका के रोग फौरन आराम होते हैं।

२७. फिटकरी आध सेर को पीस कर १ सेर गौमूत्र में डाल पुराने घड़े में बन्द करके एक गढ्ढा खोद उसमें इस घड़े को दबादो और एक महीना पश्चात् निकाल लो। यह सब चीजें मल हम के समान हो जावेगी तब इसको डिब्बे में भरलो इसकी मालिश से गठिया, संधिवात तथा हर प्रकार के दर्द नाश हो जाते हैं। यह बड़ी ही उपयोगी तथा पेटेन्ट दवा है।

१६. अर्दित (लकवा) रोग चिकित्सा

इस अर्दित रोग को भाषा में लकवा कहते हैं, इसमें शरीर का कोई सा अङ्ग निश्चेष्ट हो जाता है और कभी २ सर्व शरीर भी शून्य हो जाता है। यह रोग भी वात रोगान्तगत एक भेद है, इस पर भी कुछ मुख्य २ औषधियों के प्रयोग लिखे जाते हैं। पाठक अपनी २ रुचि अनुसार बना कर स्वानुभव करें।

१. आमवारि गुटका:—सौंफ १ तोला, सुहागा १ तोला, लौंग १ तोला, काली मिरच १ तोला, निशोथ १ तोला, त्रिफला १ तोला, यवाक्षार १ तोला, छोटी पीपल १ तोला, धनियां २ तोला, सफेद जीरा २ तोला, अजवायन ८ तोला, सौंठ १६ तोला, इन सब चीजों को कूट पीस कपड़ छन करलो। कचूर ६ मासा, छोटी इलायची के बीज ६ मासा, तेजपात ६ मासा, दालचीनी ६ मासा इन को कूट पीस कपड़ छन करलो। अब १४४ तोला= १ सेर

१२ छटांक ४ तोला मिश्री और ५ तोला शहद भी तैयार रखो। पहिले मिश्री में पानी मिला कर आग पर चढ़ा चाशनी तैय्यार करो जब यह लड्डूओं के योग्य हो जावे तब नीचे उतार कर उसमें दोनों तरह के चूर्ण और शहद मिला कर दो २ तोला भर के लड्डू बांधलो और प्रतिदिन प्रात:काल एक २ लड्डू खाओ तो असाध्य आमवात नाश हो जाता है। आमवात पर यह एक अचूक राम बाण औषधि है।

२. अमृता गुग्गलः—३२ तोला गिलोय, १६ तोला शुद्ध गुग्गल १६ तोला हरड़े के छिल्के। इनको ३२ सेर पानी में पकाओ जब ८ सेर पानी रह जाय तब उतार कर रस निका लो, इस रसको उस समय तक फिर पकाओ कि जब तक गाढ़ा न हो जावे। गाढ़ा होने पर इसमें ३ तोला त्रिफला का चूर्ण मिला दो इसका नाम अमृता गूगल है। इसके सेवन से वातरक्त, कोढ़, बवासीर मन्दाग्नि, प्रमेह, आमवात, भगन्दर उरुस्तम्भ आदि रोग नाश हो जाते हैं।

३. दूसरा अमृता गूगलः—६४ तोला शहद, १६ तोला आंवला १६ तोला पुनर्नवा। इनको कूट कर ३२ सेर पानी में पकाओ जब ८ सेर पानी रह जाय तब मल छान कर रस निकाल लो, फिर उस रस को गाढ़ा होने तक पकाओ। गाढ़ा होने पर दन्ती चीते की जड़, पीपल, सौंठ, त्रिफला, गिलोय, दालचीनी, वायविडंग ये सब दो २ तोला और निशोथ १ तोला पीस कर मिला दो यह भी अमृता गूगल है, इसके सेवन से कुष्ट, बवासीर, मन्दाग्नि दुस्टव्रण, प्रमेह, आमवात, भगन्दर, नाड़ी वास, उरुस्तम्भ, सूजन तथा अन्यान्य सब वात रोग नाश होते हैं।

४. एक तोला लहसुन पानी के साथ सिल पर महीन पीस

कर और दो तोला तिल्ली के तेल में पका कर खाने से अर्दित या लकवा आराम होता है।

५. चार तोला सूखा हुआ लहसुन महीन पीस कर उसमें सैंधा नोन, संचर नोन, त्रिकुटा, हींग सब चार २ मासा पीस छान मिला दो। इसकी मात्रा १ मासा की है। प्रात. ही इस चूर्ण को खाने से लकवा, सर्वाङ्ग वात; कमर तथा पीठ की वात नाश होते हैं।

६. वच ३ तोला, स्याह जीरा १० मासा, कलौंजी १० मासा पौदीना १० मासा, काली मिरच १० मासा इन सबको पीस कर कपड़ छान करलो, फिर इस चूर्ण को २० तोला शहद में मिला लो। इसमे से ६ या ८ मासा तक दवा चाटने से लकवा, पक्षा-घात वायु नाश होती है।

७. काले धतूरे के पत्ते २८ मासा, सफेद कनेर की छाल २८ मासा, सफेद चिरमिटी २८ मासा। इनको सिल पर पीस कर लुगदी बनालो। इस लुगदी को पाव भर तिल्ली के तेल में ३ घन्टे तक खरल करो। फिर इसे कड़ाही में डाल कर मन्दाग्नि से पकाओ जब दवा जल जाय तब उतार कर तेल छान लो। इस तेल की मालिश से लकवा, पक्षाघात, आमवात, अर्द्धाङ्ग वात रोग मे निश्चय आराम होते हैं।

२० कुष्ट (कोढ़) रोग की चिकित्सा

जिस स्थान का चर्म अति चिकना या खर्दरा हो, विशेष पसीना निकले या निकले ही नहीं, रंग बदल जावे। दाद, खाज, झनझना, सूई चुभाने सदृश पीड़ा, बिना परिश्रम थकावट और भ्रम होवे, व्रण मे शूल उठे, व्रण शीघ्र हो २ कर बहुत काल तक रहे, व्रण भर जावे और उसके मिटाने पर भी खाल दरदरी ही बनी रहे पुन उसी स्थान पर दूसरा व्रण या घाव हो जावे,

रक्त लाल पड जावे तो जान लो इस जगह कुष्ट होगा। इस कुष्ट रोग पर बहुत सी औषधियां आयुर्वेदिक शास्त्र में वर्णन किये जाते हैं इनके द्वारा साधारण पढ़े लिखे मनुष्य भी इस कुष्ट रोग की चिकित्सा बिना किसी वैद्य तथा डाक्टर की सहायता के स्वयं कर सकते हैं।

कुष्ट रोग पर सुगम चिकित्सा

१. बाबची ५ तोला, गूग्गल ५ तोला, दारू हल्दी की जड़ ५ तोला, कलोंजी ५ तोला और गंधक २।। तोला, नारियल के तेल की दो बोतल। इन सब चीजों को दरगच कर तेल में डाल बोतल में भर कर कार्क लगा सात दिन तक धूप में रखे और उसको दिन में दो तीन दफा हिलादे। बाद में इस तेल की मालिश करने से कुष्टादि त्वचा के सब रोग नाश हो जाते हैं।

२. माल कांगनी को २१ बार गौमूत्र में भिगो उसका तेल लगाने से श्वेत कुष्ट मिटता है।

३. बबूल की छाल का हिमक्वाथ ३ तोला नित्य पिलाने से कुष्ट मिटता है।

४. बाबची एक भाग, नमक १।। भाग ले कूट पीस नित्य फक्की लेने से श्वेत कुष्ट मिट जाता है। इसके सेवन काल में चने की रोटी के सिवाय कुछ भी न खाना चाहिये।

५. हल्दी की गुड़ में गोली बना कर गौमूत्र के साथ लेने से कुष्ट मिटता है।

६. मेंहदी के ७।। तोला पत्तों को रात भर पानी में भिगो प्रातःकाल मल छान उसमें थोड़ा सा बूरा मिला ४० दिन तक पीने से कुष्ट नाश होता है।

७. सिरस के बीजों का तेल लगाने से कुष्ट नाश होता है।

८. सनाय को आंवलो के रस के साथ लेने से कोढ़ मिटता है।

९. नीम गिलोय का रस पिलाने से कफ पित्त का कुष्ट मिटता है।

१०. नीम, के पत्तों को पीस उनकी छोटी २ टिकियां बना कर मन्द आंच से घी में तलते २ जब वे जल जायें तब निकाल कर शेष घी मे बराबर का मोम डाल कर पिघला पानी भरे हुए बरतन मे डाल दे, जब वह घी जम जावे तब उसको पानी पर से उतार लेवे। शीत-काल में हाथ पैर फटे तब इसको लगाओ। फौरन आराम आवेगा।

११. नीम के पत्तों को लगातार पीने से कुष्ट मिटता है।

१२. नीम के अन्दर से जो रस निकलता है उसका सेवन करने से रुधिर शुद्ध हो कुष्ट मिटता है।

१३ केला खार और हल्दी का लेप करने से श्वेत कुष्ट मिटता है।

१४. कनेर की जड़ का तेल बना कर लगाने से कुष्ट मिटता है।

१५. जो मनुष्य हरड़ नीम की पत्ती और आंवला एक मास तक खाता है उसके समस्त कुष्ट नाश होते है।

१६. अमल तास की पत्ती, मकोय की पत्ती तथा कनेर की पत्ती मठ्ठा से पीस लेप करने से कुष्ट मिटता है।

१७ मरिच्यादि तेल.—काली मिरच, हरताल, निशोथ, लाल चन्दन, नागर मोथा, मैनशिल, हल्दी, दारु हल्दी, देव-दारु, इन्द्रायण की जड़, कनेर की जड़, कूठ, आक का दूध, गौ के गोबर का रस, ये सब चीजें एक २ कर्ष लेवे तथा शुद्ध वत्सनाग विष आधा पल लेवे, सबको एकत्र पीस कल्क करके सरसों के १ प्रस्थ तेल मे मिला दे तथा तेल से दुगना गोमूत्र

और पानी डाल कर औटावे जब तेल मात्र शेष रहे तो उतार कर कपड़े से छान लेवे। इसकी मालिश करने से सिध्मकुष्ट पुण्डरीक नामक कुष्ट, विचर्चिका, खुजली, चित्रकुष्ट, कंडु, रक्त कुष्ट और फोड़ा ये सब रोग दूर होते हैं।

१८. पंचतिक्त घृत गुग्गलः—नीम की छाल, गिलोय, अडूसे की छाल, परवल के पत्ते, और कण्टकारी प्रत्येक आध २ पाव, शुद्ध गूग्गल पोटली में बंधा हुआ पांच तोला। सबको १५ सेर पानी में डाल कर औटावो जब ४ सेर पानी रह जाय तब उतार कर छानलो और गूग्गल की पोटली को अलग रखलो फिर पाठ, बायविडंग, देवदारू, गज पीपल, यवाक्षार, सज्जीक्षार सोंठ, हल्दी, सोवा, चव्य, कूट, काली मिरच, इन्द्र जौ, जीरा, चीता, कुटकी, शुद्ध भिलावा, बच पीपरा मूल, मञ्जीठ, अन्तीस, त्रिफला, अजमोद प्रत्येक छः २ तोला लेकर पानी के साथ पीस लुगदी और ऊपर की लुगदी सबको मिलाकर मन्दाग्नि से पकाओ और घी मात्र रहने पर उतार लो। इसमें छः मासा घी रोज खाने से कोढ़, भगंदर, नासूर और विष दोष आराम होते हैं।

---

२१ अर्श (बवासीर) रोग चिकित्सा

आयुर्वेद शास्त्रों में अर्श (बवासीर) के ६ भेद वर्णन किये हैं। १ वातार्श, २ पित्तार्श, ३ कफार्श, ४ सन्निपातार्श, ५ रक्तार्श ६ संसगार्श इत्यादि। इस अर्श रोग को कहीं मूल व्याधि भी कहते हैं। इस छः प्रकार की अर्श के भी पुनः दो भेद हैं। पहला सहज कहिये देह के साथ उत्पन्न हो और दूसरा उत्तर प्रगटे अर्थात जन्म होने के पश्चात मिथ्या अहार विहार करके

वातादि कुपित हो दोष उत्पन्न करे। यह भी आद्र (गीली) और शुष्क (सूखी) इन भेदों से दो प्रकार की होती हैं, लौकिक में इनको खूनी और वादी इन दो नाम से पुकारते हैं। यह रोग विशेष कर गर्म, चिकनी तथा मीठी वस्तुओं को अधिक सेवन करने से होता है। इससे वात, पित्त तथा कफादिक दोष कुपित होकर त्वचा, मास और मेदा को बिगाड़ देते हैं तब गुदा की नलियों में मांस के अंकुर उत्पन्न होते हैं जिनको मस्सा कहते हैं और फिर इसी से बवासीर हो जाती है। बवासीर रोग उत्पन्न होने से पहिले निम्नलिखित लक्षण प्रकट होने लगते हैं।

पूर्ण रूप से अन्न परिपक्व नहीं होता है, अन्न कूख में रहता और बद्ध कोष्ठ रहता है, मन्दाग्नि हो जाती है, डकारें अधिक आने लगती हैं, शरीर कृस हो जाता है, उदर फूल जाता है और अङ्ग में पीड़ा (हड़फूठन) रहती है। जब इस प्रकार के लक्षण जान पड़ें तब समझ लेना चाहिये कि बवासीर रोग होने वाला है। अब इसकी चिकित्सा निमित्त कुछ उपयोगी औषधियों के प्रयोग लिखे जाते हैं कि जिनके द्वारा सुबोध पाठक बिना किसी वैद्य डाक्टर की सहायता के इस रोग की चिकित्सा स्वयं कर सकें।

बवासीर रोग पर सुगम चिकित्सा

१. छः मासा नाग केसर का चूर्ण, नौ मासा मक्खन और छः मासा मिश्री मिला कर ७ दिन चाटने से तथा गुदा पर लगाने से रक्तार्श का खून बन्द होता है।

२. बवासीर का खून बन्द करने के लिये गाय के दूध में नींबू का रस डाल कर तीन दिन तक पीना चाहिये।

३. दो तोला मक्खन में १ तोला तिल पीस कर खावे तो ८ दिन में रक्तार्श बन्द हो।

४. आंवला १५ मासा मेंहदी के पत्ते १५ मासा दोनों को पाव पानी में रात भर भिगो प्रातः पीने से बवासीर नाश होती है।

५. इमली के पत्तों का रस पिलाने से रक्तार्श मिटती है।

६. अडूसों के पत्तों को पीस लवण मिला बांधने से बवासीर तथा भगंदर की सूजन मिटती है।

७. अलसी की भस्म भुरकाने से गुदा का घाव भरता है।

८. गांठ और भस्मों के फूल जाने पर चूना, सज्जी, मोरथोथा और सुहागा को पानी में पीस कर उन पर लेप करने से बैठ जाते हैं।

९. स्याह जीरे की पुलटीश बांधने से बहार लटकने वाले मस्से बैठ जाते हैं।

१०. कलौंजी की भस्म को मलने से मस्से मिटते हैं।

११. कुचले की धूनी देने से मस्से का खून बन्द होता है और पीड़ा मिटती है।

१२. रसौत की ५ रत्ती से १५ रत्ती तक मात्रा देने से रक्तार्श मिटता है।

१३. हल्दी के चूर्ण को थूहर के दूध की कई वार भावना देकर उनको बांधने से अर्श और भगंदर मिटते हैं।

१४. माजूफल और अनार के छिल्के को भुरकाने से कांच का निकलना बन्द होता है।

१५. दही का लगातार सेवन करने से मस्से का खून वन्द हो जाता है।

१६. हरड़े के क्वाथ की पिचकारी देने से अर्श मिटता है।

१७. खैर, मोम और अफीम मिला पीस कर लेप करने से कांच का निकलना बन्द होता है और लटके हुए मस्से सिमट जाती हैं।

१८. धनिये को दूध और मिश्री के साथ औटा कर पीने से अर्श मिटता है।

१९. वायविडंग, आंवला, बड़ी हरड़ का छिल्का प्रत्येक ४ तोला, निशोथ १२ तोला। सबको कूट पीस छान कर २४ तोला गुड़ मिला १० गोली बनावे। प्रतिदिन एक गोली सेवन करने से अर्श मिटता है।

२० सोंठ १५ तोला, काली मिरच ४ तोला, छोटी पीपल ८ तोला, चव्य ४ तोला, तालीस पत्र ४ तोला, नाग केसर २ तोला, पीपरा मूल ८ तोला, तेजपात ६ मासा, खस ३ मासा, गुड़ १॥ सेर। सबको कूट पीस एक में मिला कर एक २ तोला की गोलियां बनाना चाहिये। इसे भोजन के पश्चात् या प्रथम सेवन कर ऊपर से दूध या जल पीना चाहिये। इससे बवासीर नष्ट होता है।

२१. बवासीर की गोली:—नींबोली की गिरी २ तोला, भैंसा गूगल २ तोला, बकायन की गिरी २ तोला, कच्ची इमली की गिरी २ तोला, मिश्री ३२ तोला। सबको कूट पीस कर बेर के समान गोली बनावे। और एक गोली प्रातः तथा सायं पानी के साथ उतार जाय। यह सब प्रकार की बवासीर को लाभकारी है।

२२. बादी बवासीर की दवा.—एक बड़ी मूली को खोखली कर उसमें गूगल भर दे फिर उसी मूली के छिल्कों से उसका मुंह बन्द करके उसे जमीन में गाड़ देवे और उसके पत्ते तोड़ देवे। पानी से उसे रोज सींचता रहे जब उसमें दुबारा पत्ते निकल आवें तब मूली को निकाल गूगल सहित खरल में डाल

घोट लेवे और सायं प्रातः दो आना भर दवा को शहद के साथ नित्य सेवन करे।

३२. बवासीर परवटी:—नींबौली की गिरी १ छटांक, रसौत शुद्ध १ छटांक, बंसलोचन १ छटांक, शहद १ छटांक, गुलाब के फूल १ छटांक, गूग्गल शुद्ध १ छटांक, । सबको बारीक पीस कर गूग्गल मिला कर खूब कूटे, फिर छोटे बेर के बराबर गोली बनाले। प्रातः सायं एक २ गोली बकरी के कच्चे दूध के साथ खावे तो खूनी और बादी दोनों प्रकार की बवासीर नाश होवे।

२२—भगन्दर रोग चिकित्सा

यह भगन्दर रोग बड़ा भयंकर होता है, यह कड़वे कषैले, रूखे तथा गरम पदार्थों के खाने से अथवा पूर्व जन्मार्जित पाप के प्रताप से अथवा वात तथा पित्तादि दोषों के कुपित होने से होता है। इस रोग में गुदा के आस पास चारों ओर दो २ अंगुल के फासले पर फुंसी या गांठ होवे और यह पके फूटे तथा दर्द करे और पीप सदैव वहती ही रहे उसे भगंदर रोग कहते हैं। इस भगंदर रोग की चिकित्सा पर शास्त्रों में सैंकड़ों औषधियां वर्णन की हैं जिनमें से कुछ मुख्य २ उपयोगी औषधियां पाठकों के हितार्थ वर्णन की जाती हैं । पाठक इनको बनाकर बिना किसी वैद्य तथा डाक्टर की सहायता के स्वानुभव करें।

भगन्दर रोग पर सुगम चिकित्सा

१. अफीम ६ मासा, एलवा ६ मासा, मुनक्का ३ मासा। इन को पानी में पीस टिकिया बना बांधने से गांठ बैठ जाती है।

२. पुनर्नवा, गिलोय, सोंठ, मुलैठी, वेरी के पत्ते समान भाग लेकर महीन पीस गरम करके बांधने से भगन्दर की गांठ व फुन्सी बैठ जाती है।

३. भगंदर रोगी को श्रम, मैथुन, घोड़े पर चढ़ना आदि मना है यदि कोई भगंदर रोग इन में से कुपथ्य कर बैठता है तब उस जगह सूराख होकर उसमें स कभी विष्टा और कभी मूत्र भी निकल आते है।

४. गूग्गल, त्रिफला और पीपल का १ टंक चूर्ण जल के साथ सेवन करने से भगंदर, शोथ, गुल्म, अर्श सब रोग नाश होते हैं।

५ तिल, नीम की छाल और महुआ इन सबको ठंडे जल के साथ पीस लेप करने से भगंदर मिटता है।

६. भगंदर की गांठ व फुन्सी को पकने न देना चाहिये, प्रथम ही ऐसी दवा लगावे कि फुन्सी बैठ जावे।

७. रसौंत, दोनों हल्दी, निशोथ, मंजीठ, नीम के पत्ते, तेज बल और दात्यूणी को महीन पीस के लेप करने से भगंदर मिटता है।

८. त्रिफला १३ भाग, गूग्गल ५ भाग, छोटी पीपल १ भाग को गोली बनाकर सेवन करने से भगंदर नाश होता है।

९. अड़्सा के पत्तों की टिकिया बना उस पर सैंधा नमक बुरका के बाधे तो भगंदर नाश होवे।

१०. पुराना गुड़, नीला थोथा, गंदा बिरोजा और सरेश समान भाग लेकर थोड़े से पानी मे घोट कर मलहम बनालो और उसे कपड़े परलगा कर भगंदर में घाव पर रखदो, दो चार दफा में ही भगंदर ठीक हो जायेगा।

११. थूहर का दूध, आक का दूध और दारू हल्दी इन तीनों को पीसकर बत्ती बनालो और व्राण की नाड़ी के भीतर रखो। इससे भगंदर की सूजन, शूल और पीप का आना बन्द हो जाता है। सारे शरीर में स्थित नासूर को भी यह बत्ती ठीक करती है।

२३ अपस्मार (मृगी) रोग चिकित्सा

यह रोग अति चिन्ता शोक तथा क्रोधादिक के करने से होता है इसके आरम्भ में शरीर में एक दम अन्धकार सा जान पड़ता है, नेत्र घूम जाते हैं, रोगी शरीर पटके तथा हाथ पैर और अङ्ग फेंकता हुआ मूर्छित होकर जमीन पर गिर पड़े तो जान लो कि मृगी आगई है। इसके कितने ही इलाज वर्णन किये गये हैं, तिन में से कुछ सुगम उपाय पाठकों के हितार्थ लिखे जाते हैं जिससे प्रत्येक पाठक आरम्भ में होने वाले रोग की चिकित्सा स्वयं कर सकें।

१. आकड़े के फूल की ताजी चोफुली और काली मिरच बराबर ले ढाई २ रत्ती की गोलियां बना कर दिन में चार या छः बार लेने से मृगी, श्वांस और बांइटे मिटते हैं। २ ब्राह्मी, शखाहुली और अकरकरा तीनों का क्वाथ करके पिलाने से मृगी मिटती है।

२. ढाक की जड़ को वेग के समय नाक में टपकाने से मृगी दूर होती है।

३ कायफल, नक छींकनी और कटेरी के सूखे फल छः २ मासा और ४ तोला तम्बाकू को महीन पीस कर दो मासा नित्य सूंघने से अपस्मार (मृगी) मिटती है।

४. बच के चूर्ण को शहद के साथ चाटने से पुरानी मृगी मिटती है।

५. पीपल को पानी में घिस कर अंजन करने से मूर्छा मिटती है।

६. पौदीने के ताजा पत्ते सूंघने से मूर्छा दूर होती है।

८ गोरखमुंडी को नींबू के रस के साथ लेने से मृगी मिटती है।

९. अरीठा की मींगी और काली मिरच बराबर ले चूर्ण बना कर २॥ मासा से ३॥ मासा तक फक्की देने से मृगी नाश होती है।

१०. जिस बच्चे को मृगी का दौरा हो उसकी दोनों भौंवों के बीच में बकरी की मींगनी जला कर या मूंग गरम करके दाग दे। ऐसा करने से फिर कभी मृगी नहीं आयेगी।

११. गधे के दांये पैर की नाखून की अंगूठी पहनाना मृगी के रोगी को सैंकड़ों औषधियों से बढ़कर है।

१२. आक का दूध ४० दिन तक तलवों से मले और उस पर काली मिरच बारीक पीस कर छिड़के और आक का पत्ता ऊपर से बांधे। इस अवधि में पांव बिल्कुल न धोवे, तो फिर दौरा न होगा।

१३. सिरस के बीज खूब बारीक पीसो और रोगी को सूंघाओ फौरन छींक आयेगी और आराम होगा।

१४. घी से चतुर्थांश मुलैठी का कल्क तथा १८ गुणा कुम्हड़े का रस मिला कर सिद्ध किया गया घृत मृगी को नाश करता है।

---

२४ भग्न (टूटी हड्डी, दर्द चोट) चिकित्सा

१. सैंधा नमक और बूरा बराबर लेकर फकी लेवे तो चोट की पीड़ा मिटती है।

२. सहिजने के पत्तों को बराबर तेल के साथ पीस कर चोट या मोच की पीड़ा पर लेप कर धूप में बैठने से उस जगह की पीड़ा मिटती है।

३. चोट पर बड़ले का दूध लगाने से आराम होता है।

४. तिलों की खल को पानी में पीस गरम कर के बांधने से चोट मोच की पीड़ा मिटती है ।

५. नख टूट जाने की पीड़ा मिटाने के लिए अनार के पत्तों को पीस कर बांधना चाहिये ।

६. गुवार और तिल को कूट कर जल में रांध चोट की सूजन पर बांधने से आराम होता है ।

७. पीपल वृक्ष के २१ पत्ते पीस गुड़ में गोलियां बना कर ७ दिन खिलाने से चोट की पीड़ा मिटती है ।

८. हल्दी का चूर्ण एक तोला, सफेद कनेर १ तोला, मीठा तेल ४ तोला, गौमूत्र ५ तोला । इन सब को कड़ाही में डाल औटावे जब तेल मात्र शेष रहे तब छान कर शीशी में भरले और दर्द स्थान पर लगावे तो चोट का दर्द आराम होता है ।

९. चोट की पीड़ा मिटाने के लिये गेहूं को जलाकर उसकी १॥ तोला भस्म में बराबर गुड़ और घृत मिला कर ३ दिन चाटना चाहिये ।

१०. चोट की पीड़ा तथा सूजन उतारने के लिये नारियल की गिरी में चौथाई भाग पीसी हुई हल्दी मिला गर्म पोटली बांध कर सेकना और फिर उसी को बांधना चाहिये ।

११. आमा गूग्गलः—बबूल की फली, त्रिफला, त्रिकुटा इन सबको समान भाग ले पीस छान लो फिर सारे चूर्ण की बराबर शुद्ध गूग्गल मिला कर रखो । इसमें से तीन या छः माशा रोज खाने से सन्धि तथा चोट ठीक हो जाती है ।

१२. थोड़े भुने गेहूँ का आटा शहद के साथ खिलाने से अस्थि भंग रोग दूर होता है ।

१३. एक मासा फिटकरी पीस ४ तोला, घी में भून लो, जब फिटकरी नीचे जम जावे तब ऊपर का घी नितार लो। इस नितरे हुए घी में शक्कर मिलाकर हलवा बना लो। इस हलवा को खाने से चोट आराम होती है। इसके साथ यह भी क्रिया करो कि इस हलवे में से कुछ लेकर एक गोली बना लो और उसमें वह घी के नीचे जमी हुई फिटकरी रख कर चोट पर ३ दिन तक लगाओ। इस उपाय से चोट और जमा हुआ खून पिघल कर आराम हो जाता है। यह दवा ममियाई से भी उत्तम है।

१४. शिंगरफ १ भाग और फिटकरी दो भाग। दोनों को कूट पीस तवे पर मिला कर डालो, तवे के नीचे मन्दाग्नि जलाओ, जब नीचे की दवा का हिस्सा भुन कर खिल जावे तब उस टिकिया को उलट दो ताकि इस तरफ से भी दवा सिख जावे फिर इसको पीस कर रख लो और सेवन करो। इसकी मात्रा १ रत्ती से २ रत्ती तक की है।

२५ दाद खुजली रोग चिकित्सा

१. नींबू के रस में सुहागा घिस कर लगाने से दाद मिट जाता है।

२. तुलसी के रस का मर्दन करने से दाद और त्वचा के अन्य रोग मिटते हैं।

३. कैथ के पत्ते और दही पीस कर लेप करने से दाद मिटता है।

४. कनेर की जड़ की छाल में तेल बना लगाने से कई प्रकार के दाद मिटते हैं।

५. पारस पीपली के फल के रस का लेप करने से दाद मिटता है।

६. इमली के बीजों को नींबू के रस में पीस कर लेप करने से दाद मिटता है।

७. अलसी के तेल की मर्दन करने से शरीर के फोड़े फुन्सी मिटते हैं।

८. त्वचा सम्बन्धी रोगों पर कांदे का लेप करने से दाद खुजली मिटती है।

९. दूब, छोटी हरड़े, सैंधा नमक, पंवाड़ के बीज, बन तुलसी ये पांच चीज समान भाग ले छाछ में पीस कर लेप करे तो दाद खुजली दूर होवे।

१०. बिना बुझा चूना आध पाव, गन्धक १ छटांक। इनको मिट्टी के बर्तन में एक सेर पानी डाल कर पकाओ जब आधा पानी रह जाय तब छान कर बोतल में भरलो। फिर खाज को नमक के पानी से धोकर पीछे दवा लगा दो।

११. राल १ छटांक, आंवलासार गन्धक १ छटांक। चौकिया सुहागा १ छटांक। सबको बारीक पीस कर इतना पानी डालो कि गढ़ा शरबत समान हो जाय, फिर बेर बराबर गोलियां बना लो और नींबू के रस में घोल कर लगाओ यदि नीबू न मिले तो नमक के पानी से धोकर पीछे दवा लगाओ तो खाज दूर हो।

१२. मोजदार संग, गंधक, नौसादर, सुहागा, माजूफल, काली मिरच, सफेद कत्था, अफीम, चीनिया गोंद। इन सबको कूट छान पानी के साथ पीस कर गोलियां बनालो। लगाने के समय गोली को नींबू के रस में घिस कर लगाओ, इससे दाद अवश्य नाश होगा।

१२. सिंदूर, गन्धक, हल्दी, सुहागा, काली मिरच इनको समान भाग लेकर और घी में मिला कर दिन में चार पांच दफा लगाने से दाद चला जाता है।

१३. शुद्ध आंवला सार गन्धक, आमा हल्दी और बावची दस २ मासा, शाहतरा २० मासा लेकर जौ कूट करो और इसके तीन भाग करलो, एक भाग रात को पानी में भिगोदो सवेरे ही उसका पानी छान कर पीवो। कपड़े में जो छानस या फोग रहे उसे कड़वे तेल में पीस कर बदन पर मलो और गरम पानी से नहा डालो। इससे खुजली आराम होती है।

१४ फिटकरी की भस्म ६ मासा लेकर १ छटांक तेल में मिलालो फिर उस तेल में एक कपड़ा भिगो कर उसकी मोटी बत्ती बनावो और लोहे की शलाका में बांध कर जलाओ। जलते समय इस बत्ती में से जो तेल टपके उसको एक पात्र में ग्रहण करता जावे जब तेल की कुछ बूंदे इकठ्ठी हो जावे तब उन्हें फिर इसी बत्ती पर डाल देवे। तेल गिरना बन्द होने पर जली हुई बत्ती को पीस कर और उसमें ४ मासा तूतीया की भस्म मिला कर तिल के तेल के साथ शरीर पर मालिश करने से सब प्रकार की खुजली मिट जाती।

१५. एक तोला गुड़ और १॥ मासा हरड़ का चूर्ण दोनों को मिला कर गरम जल के साथ खावे तो गर्मी, सर्दी तथा दाह वाली खुजली शीघ्र ही नाश होवे।

१६. जीरा ५ तोला, सिंदूर २॥ तोला। दोनों को पीस लो। फिर ४० तोला कड़वा तेल और दो सेर पानी एक जगह मिला कर उसमें ऊपर वाली दोनों चीजें मिला कर पकावे जब पकते २ सब पानी जल जाये तब तेल को छान कर रखलो। इस तेल की मालिश करने से खुजली बहुत शीघ्र नाश होती है।

१७. चार रत्ती शुद्ध गंधक को तिल के तेल ६ मासा में मिला प्रतिदिन सायं प्रातः पीने से खुजली नाश होती है। पथ्य में दूध भात खाना चाहिये।

१८. लाल कनेर की कली १०० नग, काली मिर्च सौ नग। दोनों को एक जगह पीस कर मिलालो। फिर ४० तोला तेल में यह पिठ्ठी तथा दो सेर पानी डाल कर पकाओ, जब पानी जल कर तेल मात्र रह जाये तो तेल को छान लो। इसकी मालिश से खुजली नाश होती है।

---

२६ मूत्र कृच्छ तथा मूत्राघात चिकित्सा

मूत्र कृच्छ तथा मूत्राघात रोग में केवल इतना ही अन्तर होता है कि मूत्र कृच्छ में पेशाब की रुकावट तो थोड़ी देर रहती है परन्तु मूत्र त्याग काल में पीड़ा अधिक होती है और मूत्राघात में मूत्र की रुकावट बहुत देर तक रहती है परन्तु मूत्र त्याग करते समय पीड़ा अधिक नहीं होती है। यह रोग विशेष कर तीक्ष्ण, रूखा कच्चा अन्न, अधिक मांस भक्षण करने से, अजीर्ण होने से अधिक परिश्रम करने से, अधिक मदिरा पीने से, नियम विरुद्ध स्त्री के प्रसंग करने से तथा दिन में या रजस्वला स्त्री से प्रसंग करने से होता है। मल मूत्र तथा वीर्य्य के वेग को रोकने से मूत्रघात होता है, लौकिक भाषा में इसे सुजाक भी कहते हैं। इसकी सैंकड़ों औषधियां शास्त्र में वर्णन हैं किन्तु मैं तो उनमें से कुछ मुख्य २ तथा सुगम औषधियों के प्रयोग पाठकों के हितार्थ लिखता हूं। पाठक इनको सहजतया बना कर बिना किसी वैद्य तथा डाक्टर की सहायता के इस रोग का इलाज बड़ी सुगमता से स्वयं कर सकते हैं।

मूत्र कृच्छ्र तथा मूत्राघात पर सुगम चिकित्सा

१. एक तोला अरीठा को रात भर पानी में भिगो कर उसका नितरा हुआ पानी पिलाने से मूत्र कृच्छ मिटता है।

२. अकरकरा और त्रिफला को बूरे के साथ फंकी देने से मूत्र की रुकावट मिटती है।

३. आंवलों को पीस पेड़ू पर लेप करने से मूत्राशय की पीड़ा मिटती है।

४. आंवलों को घोट छान तथा शक्कर मिला पिलाने से मूत्र के साथ रुधिर का आना बन्द होता है।

५. आंवलों की ताजा छाल के रस में मधु मिला पीलाने से मूत्र कृच्छ मिटता है।

६ दूध या दूध की लस्सी में ३० या ४० बून्द चन्दन की डाल कर पिलाने से पुराना मूत्र कृच्छ मिट जाता है।

७. इसबगोल का शर्बत पिलाने से मूत्र की दाह मिटे और मूत्र उतरे।

८. पक्का केला खाने से मूत्रातिसार मिटता है।

९. मूत्र कृच्छ किसी दूसरी औषधियों से न मिटे तो चूने के पानी मे तिलों का तेल शक्कर मिला पिलाने से मिट जाता है।

१० गर्म दूध में गुड़ मिला पिलाने से सब प्रकार के मूत्र कृच्छ मिटते हैं।

११. मूली का रस चिनग और कष्ट से मूत्र उतरने को मिटाता है।

१२. मूली के सूखे बीजों के चूर्ण की फंकी लेने से चिनग और मूत्र कष्ट होना बन्द होता है।

१३. तीन मासा यवाखार दही में मिला खाने से मूत्र कृच्छ मिटता है।

१४. यवाक्षार में बराबर की मिश्री मिला खाने से सब प्रकार का मूत्र कृच्छ मिटता है।

१५. गोखरू के क्वाथ में यवाक्षार मिला पिलाने से मलाऽवरोध मूत्र कृच्छ मिटता है।

१६. एक मासा कलमी शोरा और एक मासा राई को पीस उसमें बराबर की मिश्री मिलादो। इसको दो दिन प्रातः काल देने से मूत्र की रुकावट मिटती है।

१७ कपूर को महीन पीस अत्यन्त बारीक वस्त्र पर लेप कर के उसकी बत्ती बना इन्द्री के छिद्र में डालने से मूत्राघात दूर होता है।

१८. दो टके भर गोखरू के चूर्ण को आठ गुणा पानी में औटा कर आधा रह जाने पर छान लो, फिर इस पानी में ७ टका भर गूलर डाल कर पुनः औटाओ और इसी में सोंठ, काली मिरच, नागर मोथा, हरड़े की छाल, बहेड़े की छाल और आंवला ये सब एक २ टका भर ले, महीन चूर्ण कर डाल दो। इन सब पदार्थों को परस्पर मिला कर दृढ़ हो जाने पर उतार कर घृत के चिकने पात्र में रखदो इसमें से ६ मासा जल के साथ नित्य खाने से मूत्र कृच्छ्र मूत्रा घात, प्रमेह, प्रदर वात्त रक्त और शुक्र दोषादि नाश हो जाते हैं।

१६. पांच टंक दाख और १० टंक मिश्री को १० टंक दही के साथ पिलाने से मूत्र कृच्छ मिटता है।

२०. त्रिफला के क्वाथ में दूध और गुड़ डाल कर पिलावे तो मूत्राघात रोग दूर होवे।

२१. धनियां और गोखरू के क्वाथ में घृत पका कर पिलाने से मूत्राघात मिटता है।

२२. कलमी शोरा में कपड़ा भिगो कर नाभि के नीचे रखने से बन्द हुआ मूत्र उतरता है।

२३. राल ६ मासा, मिश्री ६ मासा। दोनों को पीस फंकी देवे तो मूत्र शीघ्र उतरे।

२४. रेवत चीनी २ टंक प्रातः ही जल से देवे तो मूत्राघात तथा पथरी दूर होवे।

२५ धान्य गोक्षुरक घृतः—धनिया १ सेर, गोखरू एक सेर को १६ सेर पानी मे औटावे, जब ४ सेर पानी रह जाय तब मल छान कर रखलो। फिर धनिया आध पाव, गोखरू आध पाव को पानी के साथ सिल पर पीस लो। अब गाय का घी १ सेर, ऊपर का काढ़ा और लुगदी मिला कर छान लो। इस घी की मात्रा ६ मासा है। इसके सेवन करने से मूत्रा घात रोग नाश होता है।

२६. कलमी शोरा, रेवत चीनी, सफेद जीरा और यवाक्षार बराबर २ लेकर पीस छान लो। इसमे से ३ मासा चूर्ण गाय के दूध की लस्सी के साथ फांकने से पेशाब खुलकर आता है।

---

२७ पत्थरी रोग चिकित्सा

यह पत्थरी रोग पूर्व जन्म या इस जन्म में गुरु की स्त्री से सम्भोग करने से, मूत्राशय में रहता हुआ वायु मूत्राशय के वीर्य्य मूत्र, पित्त और कफ को सुखा कर क्रम २ से पत्थरी को पैदा करता है जैसे गाय के हृदय। (पित्ते) में गोरोचन बढ़ जाता है। वैसे ही मनुष्य के अण्डकोष और मल द्वार के बीच में पत्थरी जम जाती है और बढ़ जाती है। यह तीनों दोषों के कोप से होती है, नाभि, मूत्र नस (सीवन) मूत्राशय मस्तक में वेदना हो, मूत्र की धारा एक सी बंधी हुई न हो किन्तु टूटती हुई गिरे, मूत्र मार्ग रुक जावे। पथरी से मूत्र खुल जाने पर सुख से

पीला मूत्र उतरे और उसी पत्थरी के रुक जाने पर अत्यन्त पीड़ा पूर्वक लाल मूत्र उतरे तो समझ लेना चाहिये । की पत्थरी का प्रवेश हो चुका है । जब यह पत्थरी रोग बढ़ जाता है तब पेशाब करते समय इन्द्री और नाभि में पीड़ा के मारे चिल्ला उठता है, दस्त हो जाता है और कम्पित हो जाता है मूत्र एक बून्द बड़ी कठिनता से उतरता है और पत्थरी का आकार भी बहुत बढ़ जाता है। इस पथरी रोग की चिकित्सा पर कुछ सुगम उपाय लिख कर बतलाता हूँ पाठक इनका प्रयोग करते हुए अपने तथा अपने परीवार की चिकित्सा स्वयं करें ।

पत्थरी रोग पर सुगम चिकित्सा

१. पालक का ताजा रस पिलाने से मूत्र की पत्थरी मिटती है।

२. तीन मासा अजमोद की फंकी दे कर ऊपर से मूली के पत्तों का रस एक तोला पिलाने से पत्थरी गल जाती है। पत्थरी वालों को ८ या १० दिन अवश्य पीना चाहिये ।

३. नींम के पत्तों का २ मासा खार खाने से पत्थरी गल जाती है ।

४. बिजौरा के रस में सैंधा नमक मिला पिलाने से पत्थरी गल जाती है ।

५. पेठे के रस में सेकी हुई हींग और यवाक्षार डाल कर पिलावे तो पत्थरी नाश होती है ।

६. सहिजने की जड़ का गुनगुना क्वाथ पिलाने से पत्थरी गल जाती है ।

७. दो टंक तिल्ली का क्षार और मधु दूध में मिला कर १५ दिन तक पिलाने से पत्थरी झर कर निकल पड़ेगी ।

८. ५ के जामुन खाने से पत्थरी मिट जाती है ।

९. भोजन के पश्चात् पेशाव करने से रोग नहीं होता है।

१०. तिलों की कोंपलों को छांय में सुखा कर उनकी भस्म बना ७ या १० मासा तक रोज खाने से पथरी गल जाती है।

---

२८ उपदंश (गर्मी) रोग चिकित्सा

यह उपदंश रोग प्रायः करके वैश्या, रजस्वला स्त्री तथा पशु आदि के साथ मैथुन करने से होता है, हस्त मैथुन से भी यह रोग हो जाता है। गर्मी रोग वाले स्त्री तथा पुरुष जहां पेशाब करें वहां पेशाव न करना चाहिये क्योंकि इससे भी गर्मी का रोग हो जाता है। गर्मी रोग वाले को ज्वर हो जाता है, भूख नहीं लगती है, मुख काला पड़ जाता है। शरीर की कान्ति बदल जाती है, टट्टी पेशाव दुख से उतरते हैं। ये लक्षण उपदंश के आरम्भ में दिखाई देते हैं। बहुत से युवक स्त्री पुरुष मारे शर्म के इस रोग को छिपाने की चेष्टा किया करते हैं और कोई २ मूर्ख अताई पुरुषों द्वारा चिकित्सा कराते हैं कि जिससे वह रोग बढ जाता है क्योंकि उनकी वह दवा इस रोग पर लगती नहीं। इस प्रकार वह रोग सारे शरीर में फैल जाता है। सारे बदन पर पीली पीली फुन्सियां पैदा हो जाती हैं, इन्द्री पर घाव हो जाते हैं, शरीर पर कोढ़ सदृश चाटे पड़ जाती हैं और पेड़ू में एक वंद निकल आती है जो बहुत पीड़ा देती है। अतः इस रोग को कभी छुपाना ठीक नहीं, फौरन किसी सुवैद्य तथा डाक्टर से इसकी चिकित्सा करवानी चाहिये। अब मैं इस रोग पर कुछ जड़ी बूटियों के रूप में बहुत ही सुगम चिकित्सा लिखता हूं पाठक उनके द्वारा अपने रोग की चिकित्सा बिना किसी वैद्य तथा डाक्टर की सहायता के स्वयं करें।

उपदंश (गर्मी) रोग की सुगम चिकित्सा

१. बड़ले के पत्तों को जला कर उनकी भस्म पान में रख कर खाने से उपदंश मिटता है।

२. सुपारी का चूर्ण भुरकाने से उपदंश मिटता है।

३. अनार के छिल्के का चूर्ण भुरकाने से उपदंश की टांकी (घाव) मिटता है।

४. चौलाई को गरम जल में भिगो मल छान कर पिलाने से मूत्र की नली की दाह और पीड़ा मिटती है।

५. आक की जड़ की छाल का चूर्ण देने से उपदंश से सब शरीर में पैदा हुए व्रण मिटते हैं।

६. दस तोला इन्द्रायण (तसतूंबे) को दो सेर जल में औटावो, आध सेर रहने पर मल छान कर उसमें आध सेर एरंड का तेल डाल कर फिर औटावे जब केवल तेल शेष रह जावे तब उतार कर शीशी में भर रखे। इसमें से १$\frac{1}{2}$ तोला तेल गौ के दूध में मिला पिलाने से उपदंश आदि रोग मिटते हैं।

७. इन्द्री के मूत्र की नाली या योनि के छाला या फोड़े मिटाने के लिए सोहागा के जल का प्रयोग करना चाहिये।

८. मिट्टी के कुंजे में फिटकरी १ तोला डाल कर अग्नि पर रक्खे, पकते समय १ मासा अफीम पीस कर डाल दे और हिलाता रहे खील हो जाने पर उतार कर पीस लेवे और ४ रत्ती से १ मासा तक नित्य सेवन करे इसके ऊपर दूध की लस्सी लाभ दायक है।

९. त्रिफला को कड़ाही में डाल कर भस्म करे। भस्म तैयार होने पर उसे शहद में मिला कर उपदंश के घावों पर लगावे तो रोग अच्छा हो जायेगा।

१०. उपदंश रोगी को दिन में सोना, मूत्र वेग को रोकना, भारी अन्न खाना, मैथुन, तेल, गुड़, खटाई, मिर्च, मेहनत करना मठा, बैंगन, उड़द, नमक खाना और मदिरा पीना ये सब कुपथ्य है।

---

२६ अंडवृद्धि रोग चिकित्सा

१. अंडवृद्धि मिटाने के लिये गाय के घृत में सैंधा नमक मिलाकर पीना तथा अंड पर लेप करना चाहिये।

२. कपास की मींगी और सोंठ को जल के साथ पीस कर लेप करने से अंड वृद्धि मिटती है।

३. अमलताश १॥ तोला गिरी को १० तोला पानी में औटा कर २॥ तोला शेष रहने पर उसमें तीन तोला घी मिला कर खड़ा होकर कुछ गरम २ पीने से अंड वृद्धि मिटती है।

४ हल्दी और ऊंट के मैंगनों को औटा कर उस क्वाथ को गाडा कर लेप करने से अंड कोप की शोथ मिटती है।

५ जवा हरड़े और सैंधा नमक को एरंड के तेल में और गौ मूत्र में पका कर गर्म जल के साथ उसकी फंकी लेने से अंड वृद्धि मिटती है।

६. दारू हल्दी की जड़ के क्वाथ में गौ मूत्र मिला कर पिलाने से अंड वृद्धि मिटती है।

७. फोतों में पानी उतर आवे तब मोम १ पाव, अमियां हल्दी १ पाव, समुद्र नमक १ तोला। सबको मिला कर कटोरी सी तरह बनालो फिर उसको फोतों पर बांधो, दूसरे दिन फिर कूट कर जरा गरम करके बांधो। इस प्रकार तीन दिन करे तो अवश्य आराम होता है।

---

३० विशूचिका (हैजा) रोग चिकित्सा

यह रोग बड़ा भयङ्कर होता है, इस रोग की यदि शीघ्राति-शीघ्र कोई चिकित्सा न की जावे तो बचना ईश्वराधीन ही होता है। जिस मनुष्य की मन्दाग्नि से आमा जीर्ण हो और उसी पर कोई गरिष्ट भोजन कर लिया जावे तथा गर्मी के दिनों में बहुत से मनुष्य एक स्थान पर एकत्रित हो जावे तो विशूचिका (हैजा) रोग हो जाता है। विशूचिका होने से पूर्व अजीर्ण अङ्ग में वायु प्रवेश होकर सूई छेदन जैसी पीड़ा करे मूर्छा हो जावे अतिसार (दस्त) और वमन होवे, प्यास अधिक लगे, पेट में शूल चले भ्रम होवे पैर ऐंठने लगें, जमुहाई आवे, पग फूटन होवे, दाह कांपे और मस्तक में पीड़ा होवे। इतने लक्षण युक्त हो तो जान लेना चाहिये कि विशूचिका (हैजा) हो गया है। इस विशूचिका रोग को हैजा और अङ्गरेजी में कालेरा (Cholera) कहते हैं। इस रोग पर वैद्य तथा डाक्टरों ने कितने ही उपाय ढूंढ कर निकाले हैं तिन में से कुछ मुख्य २ तथा सुगम उपाय पाठकों के हितार्थ लिखे जाते हैं कि जिससे प्रत्येक पाठक रोग के आरम्भ में ही इस रोग की चिकित्सा विना किसी वैद्य तथा डाक्टर की सहायता के स्वयं कर सके।

विशूचिका रोग पर सुगम चिकित्सा

१. जावित्री को सेक के खिलाने से विशूचिका की दस्त मिटती है।

२. विशूचिका की तृषा (प्यास) मिटाने के लिये नारियल का जल पिलाना चाहिये।

३. आकड़े की जड़ को बराबर अदरक के रस में खरल कर चने प्रमाण की गोलियां बना कर देने से असाध्य विशूचिका नाश होती है।

४. इमली को नींबू के रस में मसल छान कर चटाने से विशूचिका की शोथ (सूजन) मिटती है।

५. लाल मिरच, हींग और वच की गोलियां बना विशूचिका में देनी चाहिये।

६. विशूचिका या ऐसे शीघ्र फैलने वाले रोगों के उपद्रवों से बचने के लिए कांदे को पास में रखना चाहिये। कांदा दूसरे पदार्थों के दुर्गन्ध को मिटाता है और हवा को शुद्ध करके विषैले कीड़ों को मारता है। इसलिये इसको घर के दरवाजा पर लटकाना चाहिये।

७. चार मासा लौंग, १ मासा अफीम १० मासा जायफल इन सबको। चूर्ण कर ४ मासा नित्य ऊष्ण जल के साथ देवे तो तत्काल विशूचिका दूर होवे।

८. जायफल को तेल में घिस कर मर्दन करने से हैजे के बांयटे मिटते हैं।

९. जायफल को ठंडे पानी मे पीस कर पिलाने से हैजे के रोगी की तृषा मिटती है।

१०. आंधा भाड़ा की जड़ को पीस कर पिलाने से हैजा मिटता है।

११. जायफल ६ मासा, अफीम ६ मासा, लौंग ६ मासा, केसर ६ मासा, कपूर ६ मासा। इन पांचों चीजों को खरल में घोट कर दो २ रत्ती की गोलियां बना लेवें। हैजे के रोगी को एक २ गोली प्रति घन्टे जब तक कै और दस्त बन्द न हों बराबर देता रहे। पेशाब लाने के लिये जरा सा कपूर मूत्र स्थान पर रखे रहे। अथवा आधी छटांक टेसू के फूल और कलमी शोरा को पानी मे पीस कर पेडू पर लेप करे।

विशूचिका रोग पर इङ्गलिश मेडीशन्श

१२. एन्टी कालरा नामक दवाः—कैपसीकम एक ग्रेन, स्टीफाटिज १ ग्रेन, पीपर निगरम एक ग्रेन, कैम्फर एक ग्रेन, सबको मिलाकर एक गोली बनावे इस मात्रा से जितनी चाहो गोली बना सकते हो।

१३. कालरा मिक्श्चरः—लेमनजूस ५ ड्राम, प्याज का जूस पांच ड्राम, आइल मेंथा पिपरेंटे चार ड्राम, केम्फर स्प्रिट २ ड्राम, टिक्चर के पसीकम २ ड्राम, टिंक्चर ओपियम १ ड्राम, । सबको मिलाकर एकत्र करो। मात्रा २ बून्द तक। इससे अतिसार, हैजा शूल, संग्रहणी, वायु का शूल या अनेक प्रकार के वायु के रोग ऐंठन आदि अच्छे होते हैं।

१४. कालरा मिकश्चरः—लेमन जूस ५ ड्राम, ओनियन जूस पांच ड्राम, आयल मेंथा पिपरेटा, ५ ड्राम, कैम्फर स्प्रिट २ ड्राम, टिंक्चर कैपसीकस २ ड्राम, टिंक्चर ओनियम १ ड्राम, । सबको मिलाकर एक शीशी में वन्द कर दो। मात्रा २ बून्द से १५ बून्द तक। इससे विशूचिका (हैजा), अतिसार, शूल संग्रहणी तथा ऐंठन आदि रोगों में लाभ होता है।

---

२८ छर्दी (उल्टी) रोग चिकित्सा

१. काले रङ्ग के फालसे के रस में गुलाव जल और दूगना बूरा मिला शर्बत बनाकर पिलाने से वादी की उल्टी, रुधिर विकार आदि मिटते हैं।

२. नारङ्गी के छिल्के का चूर्ण चाटने से वमन होती है।

३. अदरक का रस तथा तुलसी के रस को शहद और मोर पङ्ख के चंदवे की भस्म के साथ देने से वमन वन्द होती है।

४. पित्त की वमन वाले को इमली का पानी पिलाना चाहिये।

५. अत्तीस और नाग केसर के चूर्ण की फंकी देने से वमन बन्द होती है।

६. अंगूर के सिरके में नमक डाल कर पिलाने से वमन होती है तथा बन्द भी होती है।

७. गर्भवती स्त्री को वमन बन्द करने के लिये धनिया का कल्क और मिश्री को चावलों के पानी में मिला कर पिलाना चाहिए।

८ अडूसे के पत्तों के रस में मधु मिला कर चाटने से रुधिर की वमन बन्द होती है।

९. अनार के रस में कपूर मिला कुछ गर्म कर पिलाने से वमन बन्द होती है।

१०. सुपारी और हल्दी के चूर्ण मे शक्कर मिला कर फंकी देने से वमन मिटती है।

११. मुनक्का, काली मिरच तथा अदरख के रस को थोड़ा शहद मे मिला चाटने से वमन बन्द होती है।

१२. किसी अन्य औषधि से वमन न रुके तो वड़ की जटा के अंकुरों को घोट छान पिलाने से वमन बन्द होती है।

१३. मिश्री की चाशनी में बेर की मींगी और लौंग मिला देने से खाली होकड़ और जी मचलाना बन्द होता है।

१४. सफेद दूब का रस पिलाने से वमन बन्द होती है।

५. पीले बुखार की काली वमन चूना के पानी को दूध में मिला पिलाने से वमन बन्द होती है।

१६. पीपल की सूखी छाल को जला कर जल में बुझा देना चाहिये। यह जल पीने मात्र से वमन बन्द होती है।

१७. पिस्ते के खाने से जी मचलना तथ वमन बन्द होती है।

२६ पुस्तवाय (हाथ पाँव पसीजना) रोग

१. धतूरे के बीजों की आधी रत्ती से १ रत्ती तक मात्रा ७ दिन लेने से हाथ पैर आदि में पसीना आना रुक जाता है।

२. बेरी के पत्तों को पीस कर मलने से पुस्तवाय मिटता है।

३. बैंगन और पोस्त के डोडों के क्वाथ में हाथ पैरों को भिगो ने से पुस्तवाय मिटता है।

४. समन्दर फल और सोंठ को पीस कर मर्दन करने से बहुत पसीना आना बन्द हो जाता है।

५. बबूल के पत्तों को हाथ पैरों पर मसलने से पुस्तवाय मिटता है।

६. मूंग जलाकर पीसो और रोगी के हाथ पैरों पर मलो। पसीना आना बन्द हो जायगा।

७. फिटकरी पानी में घोल कर मलने से पसीने बन्द हो जाते हैं।

८. पोहकरमूल पीस कर हथेली और तलवों पर मलने से पसीना बन्द हो जाता है।

९. हरड़, बहेड़ा, आंवला, चीता, नागर मोथा इनको और गूग्गल को बराबर लेकर पीस छान लो। इस चूर्ण के लेपन से हाथ पैरों का पसीना बन्द हो जाता है। इसे पञ्चतिक्त गूग्गल कहते हैं।

३० मुखादि झांई रोग चिकित्सा

१. शहद को नमक और सिरके में मिलाकर मलने से झांई मिटती है।

२. मसूर को नींबू के रस के साथ पीस लेप करने से मुख की झांई मिटती है।

३. हल्दी और तिलों को पीस कर मुख पर मलने से मुख की झांई मिटती है।

४. कलौंजी को सिरके में पीस कर रात के समय मुख पर लेप करके प्रातः काल धो डालने से मुहासे (जवानी की फुन्सियां) मिटती हैं।

५. लाल चन्दन, मजीठ, लोध, कूट, फूल प्रियंगु और वड़ के अंकुर और मसूर। ये सात चीजें समान भाग ले पानी में पीस लेप करे तो मुख की झांई रोग दूर होवे।

६ वड़ के पीले पत्ते, चमेली लाल चन्दन, कूट, दारु हल्दी और लोध इन सब का चूर्ण कर पानी में पीस मुख पर लेप करे तो मुख पर हुई जवानी की फून्सीयां दूर होवे।

७ वच, लोध, सफेद सरसों, सैंधा नमक इन चारों को जल में पीस कर लेप करे तो मुख की झांई रोग दूर होवे।

३१ स्नायु (नाहरवा) रोग चिकित्सा

यह रोग ऐसे प्रान्तों में अधिक होता है। जहां लोग तालाब तथा बावड़ी आदि का कच्चा पानी पीते हैं। इसमें प्रथम एक बहुत छोटी जहरीली फुन्सी उठती है जिसके वेग से ज्वर तथा वमन तक हो जाते हैं धीरे २ वह फुन्सी एक फफोले के आकार की हो जाती है और जब वह फूटती है तब उसमें से एक धागा जैसा तन्तु निकल आता है बस इसी को चारु तथा नाहरवा कहते हैं। अब इस रोग की शान्ति के लिये कुछ सुगम उपाय लिखे जाते हैं।

१. छः तोला सोंठ के आटे में हींग मिला पुल्टिश बांधने से नारु निकल आता है।

२. जिसके नहरुवा बहुत निकलते हों उसको २॥ रत्ती से ७॥ रत्ती तक हींग की गोली बना कर जल के साथ खिलाने से नारु नहीं निकलता।

३. नारू की सूजन मिटाने के लिये लाख और देशी साबुन पीस गर्म कर लगाना चाहिये।

४. तीन मासा भुने हुये सुहागे को गुलाब में उतनी ही भुनी हींग मिला पीस कर चूर्ण बना ७ दिन दोनों समय लेने से नारू मिटता है।

५. चूना और बिड़ नमक पीस कर पानी के साथ लगाने से नारू मिटता है।

६. कलौंजी को दही में पीसकर लेप करने से नारू मिटता है।

७. जमालघोटे को पानी में पीस कर नारु पर लगाने से नारू गल जाता है।

८. तेल और पानी को ओटा कर धार देने से नारू बिना कष्ट निकल जाता है।

९. एलवा का लेप करने से नारू मिटता है।

१०. बबूल के बीज पीस कर लेप करने से नारू ठीक हो जाता है।

११. पहले तीन दिन घी पीकर फिर तीन दिन निगुण्डी का रस पीने से स्नायु (नाहरवा) की घोर पीड़ा शान्त होती है।

१२. राल २० मासा, साबुन ४ मासा, अफीम, १२ मासा इन को कूट पीस कर ७ तोला तिल्ली के तेल में पका कर मलहम की तरह पत्ते पर फैला कर बांधे और सवेरे शाम मलहम बदल देवे तो तीन दिन में नाहरवा अच्छा हो जाता है।

१३ प्याज की एक गांठ, लहसुन की एक गांठ, थोथा साबुन एक भिलावा और दस मासा राई इनको कूट छान कर टिकिया बनालो और २४ घन्टे तक इसको नारू पर बांधो तो तीन दिन में तमाम नारू निकल आवेगा।

१४. अतीस, नागर मोथा, भारङ्गी, सौंठ, पीपल और

बहेडा का चूर्ण गुनगुने पानी के साथ पीने से नाहरवा शीघ्र आराम होता है।

१५. समुद्र फेन की भस्म बना सिरके में मिलाकर लगाने से नारू ठीक होता है।

३२ विरेचन (जुलाब) की दवा

१. पंचसकार चूर्ण.—सौंफ, सनाय, हरड़, सोंठ, सैंधा नमक सबको समान भाग लेकर कूट पीस कपड़ छन करलो। इसकी ६ मासा से ६ मासा तक जल के साथ फक्की लेने से दस्त साफ होता है।

२. सनाय २॥ तोला, गुलाब, के फूल एक तोला, छोटी इलायची एक तोला। सब चीजों को कूट पीस कपड़छन कर लो। रात के समय ३ मासा चूर्ण को आध सेर दूध में डाल कर औटावो जब औट जावे तब नीचे उतार उसमें २॥ तोला मीठा और एक तोला घी मिला कर पीकर सो जावे, सवेरे एक या दो दस्त होकर पेट बिल्कुल साफ हो जावेगा। यह दस्त लाने वाला एक बहुत उत्तम तथा अचूक योग है। पाठक अवश्य प्रयोग करें।

३. जुलाब की गोली:—पुराना धनिया १ तोला, सौंफ एक तोला, घी मे भुना शुद्ध जमालघोटा तीन मासा. सब को एक साथ पीस कर शहद के साथ चने बराबर गोलियां बनालो। बलाबल देख कर एक गोली से चार गोली तक दी जा सकती हैं। प्यास लगने पर सौंफ का अर्क पीना चाहिये।

जुल्लाब पर इङ्गलिश मेडीशन्स

४. पिलकालो सिथ ६४ ग्रेन, एक्स्ट्रेक्ट हाइसायमश ८ ग्रेन, एक्स्ट्रेक्ट वेलाडोला ४ ग्रेन, पालोफिलीन २॥ ग्रेन।

सब को खरल कर के १६ गोली बनावे और सोते समय एक या दो गोली तक खाया करे यह अच्छा जुल्लाब है।

५ दस्तावर चाकलेट (Laxative Choclate :—रेड़ी का तेल शुद्ध १०० ग्रेन, साफ चीनी २०० ग्रेन। चाकलेट १०० ग्रेन, टिंक्चर आफ वनीला (Tincture of vanilla) आवश्यकतानुसार। टिक्चर और चीनी तथा तेल और चाकलेट को अलग २ मिला कर छान डालो और गरम रहते सांचे में डाल कर टिकिया बनालो। यह भी जुल्लाब लाने वाली बड़ी प्रसिद्ध दवा है।

३३. बिच्छू दंश चिकित्सा

१ कांदे को काट कर उस के कटे हुये भाग पर बुझाया हुआ चूना लगा कर बिच्छू के दंश पर रगड़ने से उसका जहर उतर जाता है।

२. कांदे को पीस कर डंक स्थान पर लेप करने से जहर उतर जाता है।

३. कपूर को सिरके में घिस कर लगाने से बिच्छू का जहर उतर जाता है।

४. कौंच के बीज़ों को घिस कर लेप करने से जहर उतर जाता है।

५. आम के फूलों को हाथ में मल कर बिच्छू के काटे स्थान पर खाली हाथ फेरने से रोता हुआ मनुष्य भी हंसने लगता है।

६. मूली के टुकड़ों को नोन लगाकर दंश पर लगाने से बिच्छू का जहर उतर जाता है।

७. शहद के खाने और डंक पर मसलने से जहर उतर जाता है।

८. जमाल गोटा का लेप करने से बिच्छू का विष शान्त होता है।

९. जल में नमक मिलाकर दंश स्थान पर मसलने से जहर शान्त होता है।

१०. गुड़ खाने से विच्छू का जहर उतर जाता है।

११. लहसुन और नोन पीस कर विच्छू के दंश पर लगाने से विष शांत होता है।

१२. हींग और हरताल को नींबू के रस में पीस कर लेप करने से विष शान्त होता है।

१३ नौसादर, सुहागा और चूना समान भाग लेकर हथेली में मल कर सूंघने से जहर उतर जाता है।

१४ जो कमोंदी के पत्तों को मुख में चबाकर कान में फूंकता है वह विच्छू के विष को शीघ्र नाश करता है।

१५ नीलाथोथा को और सहिंजने के बीजों को पानी में घिस कर काटे स्थान पर लगावे। और साथ ही सफेद फिटकरी को फुलाकर पानी में घिसले और आंखों में चार २ बून्द डाले। इस प्रयोग से विच्छू का विष उतर जाता है।

१६. विच्छू की पेटेन्ट दवाः—नौसादर ४० ग्रेन, पोटाशियम परमेगनेट २० ग्रेन दोनों को मिला कर खरल करो और दर्द स्थान पर दवा रख कर ऊपर से १ बून्द पानी डाल दे। यह बड़ी पेटेन्ट दवा है। इससे विच्छू का दर्द अवश्य आराम होगा।

३४—सर्प दंश चिकित्सा

१. जहरी सर्पों के काटे हुये मनुष्य को खोपरे का तेल सेवन कराना चाहिये। ताजा खोपरे में से निकाले हुए तेल की मात्रा २० या ३० बून्द तक दिन में तीन वेर देना चाहिये। खोपरे के तेल निकाल ने की विधि यह है। पके खोपरे की गिरी को कूट पानी में औटा कर तेल निकाल लेना चाहिये।

२. विषैले जीवों के काटने से जो विष चढ़ता है उसको उतारने के लिये करणो नींबू का अर्क पिलाना चाहिये।

३. कांदा खाने से सांप का जहर उतर जाता है।

४. चौलाई के पंचांग का रस पिलाने से सर्प का विप उतर जाता है।

५. कुचला की जड़ के प्रयोग से सर्प का विप उतरता है। सांप के काटने से जो अचेत हो जावे तथा चलने फिरने की शक्ति न रहे तो उस दशा में कुचला को गरम पानी में पीस कर उसके मुंह में डालने से और थोड़ा उसकी गर्दन और शरीर पर मालिश करने से सचेत हो जाता है।

६. कुचला और काली मिरच को साथ पीस कर खाने से सर्प का जहर उतर जाता है।

७. कुचला की जड़ का हिम काथ पिलाने से सब प्रकार का विष उतरता है। इसकी जड़ में विष नष्ट करने की बड़ी भारी शक्ति है। जब सांप और न्यौला की लड़ाई होती है और सर्प न्यौला को काटता है तब न्यौला कुचला की जड़ को खाया करता है।

८. तुलसी के पत्ते, मञ्जरी और कोमल जड़ी का रस पिलाने से सांप का विष उतरता है।

९. सांप, बिच्छू, भौंरा, छिपकली, छिछून्दर, चूहा, मधु-मक्खी आदि विषैले जन्तुओं के दंश पर काली तुलसी की जड़ पीस कर लगाने से विप नाश हो जाता है। इसका रस रोगी की आंख, कान और नाक में टपकाना चाहिये। यह दवा बड़े बड़े महात्माओं ने अनुभव की है।

१०. काले सर्प के काटे मनुष्य को ७ शुद्ध जमाल घोटा और कम जहर वाले सर्प के काटे मनुष्य को दो या तीन शुद्ध जमाल घोटा खिलाने से और रत्ती भर का आंखों में अंजन करने से विप उतर जाता है।

११. सांप के काटे पर केले के पेड़ के छिल्के का रस दो तोला और १२ काली मिरच का चूर्ण मिला पिलाने से शर्तिया और आश्चर्यजनक लाभ होता है। यदि पहली मात्रा से आराम न हो तो दूसरी मात्रा १ घन्टे बाद और फिर दो घन्टे बाद देने से सांप का विष उतर जायगा। केला के छिल्के को बारीक पीस कर काटे स्थान पर थोड़ा घाव करके बांधना भी चाहिये।

१२ कसौंदी के पत्ते गीले २ दो तोला और सूखे हों तो ६ मासा से १ तोला और १२ काली मिरच दोनों को थोड़े से घृत मे पीस कर पिलादो और कसौंदी के पत्तों को पीसकर काटे स्थान पर थोडा घाव करके बांध दो। इससे चाहे जैसा विषधर सांप हो; विष फौरन उतर जायगा। कसौंदी का रस यदि सर्प पर डाल दिया जाय तो उसका शरीर फट जायगा। इसके सूंघने मात्र से सांप मर जाता है, कसौंदी बड़ा विष नाशक चीज़ है। इस पर एक दोहा है —

पात कसौंदी विष हरे, जड़ से सांप डरात।
फल से बाघ डरात हैं, फूल रतौंधी जात॥

१३ सांप ने जहां काटा हो उस जगह को चाकू से थोड़ा खुर्च कर भिलावे के मुँह को [उसकी टोपी को] चाकू से थोड़ी काटकर चिमटे से पकड़ कर आग पर गरम करो जब उसमें से तेल या झाग थोड़ा २ सा निकलने लगे तब जहां पर सांप ने काटा हो वहां पर चिपका दो; वह चिपक जावेगा और सर्प का विष, चूस कर स्वयं गिर पड़ेगा। यदि एक भिलावा से पूरा लाभ न हो तो तीन और चिपका दो। जब उस स्थान पर विष बिल्कुल न रहेगा तब भिलावा चिपकाने पर स्वयं ही उतर जायगा। ऐसी दशा में तीन भिलावा काम मे लाने चाहिये।

१४ सांप ने जहां काटा हो वहां पर एक मुर्गी को लेकर उसको गुदा के आस पास के पंख नोच कर सांप के काटे

स्थान पर चिपका दो, मुर्गी ऐसे स्थान पर चिपक कर विष खैंचने लगेगी और जब वह विष खैंच लेगी तब स्वयं ही मर कर गिर पड़ेगी । इस प्रकार एक दो या तीन मुर्गियों को चिपकाते रहो जब तक उस स्थान पर विष रहेगा तब तक मुर्गी चिपकती ही रहेगी और जब उस स्थान पर विष न रहेगा तब मुर्गी भी न चिपकेगी। यह विष खैंचने की एक अपूर्व तथा अचूक प्रयोग है।

१५ अरीठा की ४॥ मासा गिरी को पाव पानी में मथकर झाग पैदा होने पर छान कर पिलाने से सांप का विष उतर जाता है। यदि आदमी अचेत हो तो इसके पानी की दो बून्द नाक में टपकाने से तुरन्त बोल उठेगा।

१६ सात मासा फिटकरी को जल में पीस कर पिलाने से सर्प का विष उतर जाता है।

१७. अज्झा झारा (औंगा का कोई सा अङ्ग) (पत्ते, डंडी जड़) पानी में पीस कर काटे स्थान पर लगावे और उस समय तक पिलाया भी जावे कि जब तक उसका स्वाद कड़वा जान पड़े। जब कड़वा लगेगा तब विष भी उतर जावेगा।

१८. ाटी की जड़ ६ मासा को ११ काली मिरचों में मिला कर और पानी में घोट कर पिलादे। जो इतने से आराम न हो तो आध घण्टे पीछे फिर पिलावे, ऐसा ४ या ५ वेर देने से आराम होगा।

१९. रीठा को घोट कर पिलादे अथवा कमल गट्टे की मींगी पीस कर आंख में आंजे।

२० जहां सांप का बहुत भय हो वहां अपने चारों ओर कारबोलिक पौडर (Carbolic Powder) की लकीर करादो सांप लकीर लांघ कर कभी नहीं जावेगा।

———

१—मन्दाग्नि रोग।

यह रोग सब रोगों का मूल कारण है, अङ्गरेजी में इस रोग को (Constipation) कहते हैं। प्रत्येक मनुष्य के पेट में एक अग्नि होती है जिसको जठराग्नि कहते हैं, यह पेट में खाये अन्न को पाचन करती है और फिर उस अन्न से रस, मांस रुधिर, मज्जा, अस्थि तथा शुक्रादि सप्त धातुओं का विकाश होता है। अन्न का खोखला भाग मल मूत्रादि द्वारा वाहिर निकल जाता है और असली भाग शरीर में प्रवेश हो सप्त धातुओं के वनने का कारण वनता है। जव मनुष्य की जठराग्नि प्रदीप्त होती है तव पेट की समस्त क्रियाये भी ठीक रहती हैं, और जहां कहीं जठराग्नि मे तनिक भी खरावी हुई कि समस्त पेट का कार्य-क्रम ढीला (Disorder) हो जाता है। अत. स्वाथ्य की दृष्टि से अपने पेट की इस अग्नि पर सदैव ध्यान रखना चाहिये। इस पेट की अग्नि के चार भेद होते हैं। १ मन्दाग्नि, २ तीक्ष्णाग्नि, ३ विपमाग्नि ४ समाग्नि। अव ये चारों खराव कैसे होती हैं सो सुनिये.—१ कफाधिकता से मन्दाग्नि होती है, २, पित्ताधिक्ता से तीक्ष्णाग्नि होती है, ३ वाताधिकता से विपमाग्नि होती है, ४ पित्त तथा कफ की सामान्यता रहने पर समाग्नि उत्पन्न होती है। जव मनुष्य को थोड़ा हल्का भोजन भी न पचे और मस्तक तथा पेट पर भार सा वना रहे तथा हाथ पैर टूटते जान पड़े तो समझ लेना चाहिये कि हमको मन्दाग्नि रोग हो गया है। यह रोग आरम्भ में मिथ्याहार विहार करने से होता है। एक अन्न पचा नहीं और दूसरा खा लिया तथा पेट को थोड़ी देर भी अवकाश न दिया जाय वस इसी से मन्दाग्नि हो जाती है अतः इस पेट को अवकाश देते रहना ही प्राकृतिक चिकित्सा है। पेट को अवकाश देने के लिये कम से कम दो

उपवास अवश्य करना चाहिये और अपने नित्य प्रति के भोजन का कन्या (Judge) करके खाना चाहिये। अतः भोजन करते समय अपने मनीराम (Concious) की साक्षी अवश्क ले लेना चाहिये। इसके विपरीत भोजन करने की चेष्टा कदापि न करना चाहिये। इस प्रकार अभ्यस्त जीवन बनाने पर अपनी जठराग्नि कदापि मन्द नहीं हो सकती है। अब इस रोग की चिकित्सा पर मुख्य २ तथा पेटेन्ट ओषधियों के प्रयोग दिये जाते है, पाठक इनको सहज में ही बना अपनी तथा अपने परिवार की चिकित्सा बिना किसी वैद्य तथा डाक्टर की सहायता के स्वयं ही कर सकते हैं।

मन्दाग्नि रोग पर देशी सुगम चिकित्सा

१. भात की गरम २ मांड में थोड़ी भुनी हींग तथा काला नमक डाल कर पीने से अग्नि प्रदीप्त होती है।

२. मांड में आठ गुण होते हैं, यह भूख को बढ़ाता मूत्राशय को शुद्ध करता, बल तथा रक्त को बढ़ाता, ज्वर तथा कफ, पित्त और वायु को शुद्ध करता है।

३ भुनी हींग १ भाग, दूधिया बच २ भाग, छोटी पीपल ३ भाग, सौंठ ४ भाग, अजवायन पांच भाग, बड़ी हरड़ का छिल्का ६ भाग, चीते की जड़ ७ भाग और कूट ८ भाग,। सब को कूट कपड़ छन करना चाहिये। इसे दही या गरम जल के साथ लेने से अग्नि मन्द दूर होता है।

४. छोटी पीपल, अदरख, देवदारु, चीते की जड़ चव्य, बेल का गूदा, अजमोद, बड़ी हरड़ का छिल्का, सौंठ, अजवायन, धनिया, कालि मिरच, सफेद जीरा तथा भुनी हींग। ये सब चीजें समान भाग ले और इन सब से आठगुणा जल लेकर मिट्टी के

वरतन में ७ दिन वन्द रखना चाहिये, फिर इसमें सरसों के तेल का छौंक लगाना चाहिये। यह शार्दुल कांजी अग्नि तथा वल को वढ़ाती है इसको भोजन पश्चात जितनी रुचि हो उतना पीना चाहिये।

५. लवण भास्कर चूर्ण—पीपल, पीपरामूल, धनिया, काला जीरा, सैंधा नोन, विड़ नोन, तमाल पत्र, तालिस पत्र, नागकेसर ये जव चीजे आठ २ तोला लेवे और काला नोन २० तोला, काली मिर्च, जीरा, सोंठ ये सव चार २ तोला लेवे। दाल चीनी इलायची दो २ तोला लेवे समुद्र नोन ४० तोला, अनार दाना २० तोला और अमलवेत ८ तोला लेवे सव चीजों को कूट पीस छान वोतल में भर दो। आयुर्वेद सम्वन्धी यह चूर्ण वड़ा ही उपयोगी तथा अमृत समान गुण करता है। इसके सेवन करने से कफ के रोग, वातगुल्म, वात शूल, मन्दाग्नि ववासीर, संग्रहणी दोष, कुष्ट, भगन्दर हृदरोग आम दोप, विविध उदर रोग, तिल्ली, पथरी, श्वास तथा खांसी आदि समस्त रोग नाश होते हैं।

६. गंधक वटी—छोटी पीपल, अजमोद, स्याह जीरा, सफेद जीरा, सैंधा नमक, सोंठ और शुद्ध गन्धक। ये सव चीजें समान भाग ले कूट पीस कपड़ छन करलो और नींवू के रस में घोट कर छोटी २ गोलियां वनालो! नींवू में घोटते समय थोड़ा हींग भी भून कर मिला देना चाहिये। भोजन पश्चात् एक दो गोली खाकर पानी पीवो। हाजमा के लिये यह एक वहुत ही स्वादिष्ट तथा पेटेन्ट वटी है।

७. अर्कवटी—काली मिरच, नौसादर, सैंधा नमक समान भाग ले कूट पीस कपड़ छन करलो और इस चूर्ण को आक के फूल की चौकोर दाख निकाल इसके साथ खूब वारीक पीस कर लुगदी वनालो और चने प्रमाण गोली वना कर भोजन के

पश्चात सेवन करो। यह गोली भी बहुत स्वादिष्ट, प्रसिद्ध तथा उपयोगी चीज़ है।

८. मन्दाग्नि नाशक चूर्णः—भुना जीरा २॥ तोला, काली मिरच २ तोला, काला नमक १५ तोला, भुनी हींग ५ मासा पीपरामेंन्ट ३ मासा, टाटरी २ तोला। इन सब का चूर्ण बना कूट पीस कपड़ छन करलो और सेवन करो यह चूर्ण भी बहुत ही स्वादिष्ट तथा लाभदायक है।

मन्दाग्नि रोग पर इङ्गलिश मेडीसन्स

९. हाजमा की दवा (Digestive powder):—सोडा वाई कार्व ६३ भाग, सोडियम क्लोरेट चार भाग, कैल्मियम कारबोनेट २ भाग, पेपसीन ५ भाग, अमोनिया कार्बोनेट (Ammonia carbonate) १ भाग। सबको एकत्र करके मिलालो हाज़मे की पेटेन्ट दवा है।

१०. अग्निमन्द वटी (Indigestion Tablets):—कैपसिकम (Capsicum) चूर्ण किया हुआ २० ग्रेन इपिकाकुआन्हा की जड़ (Ipecacuanha roots) चूर्ण की हुई १२ ग्रेन सोडा बाईकार्व २४० ग्रेन, स्ट्रिकनाइन सल्फेट २ ग्रेन, एक्स्ट्रेक्ट आफ जेन्टियाना (Extract of Gentiana) ६० ग्रेन एक्स्ट्रेक्ट आफ रूबार्व (Extract of Rhubarbe) ३० ग्रेन। सबको मिला कर गोलियां बना लो, अवस्थानुसार ४ ग्रेन से १२ ग्रेन तक मात्रा ली जा सकती है।

११. मन्दाग्नि की दवाः—हाइड्रोक्लोरिक एसिड डाइल्यूट १० भाग, अलोज २ भाग, पानी १०० भाग टिंचर कैपसीकम ११ भाग हंकल ६० भाग। सबको मिला कर तैयार करो। यह दवा मेदा सम्बन्धी समस्त विकारों को नाश करती है।

१२. कान्स्टीपेशन क्योर (Constipation Cure).–एलाइन ४ ग्रेन, एक्स्ट्रेक्ट वेला डोना ६ ग्रेन, स्ट्रीकनाइन सल्फ (Strychnine Sulph) ¼ ग्रेन, पल्व एपीकाक ⅙ ग्रेन, शूगर आफ मिल्क २० ग्रेन। इन सबको मिला कर २० गोली बनालो और भोजन के बाद १ गोली खावे।

१३. पेट दरद की दवा.—स्प्रिट अमोनिया ओटोमेटिक आधा औंस, टिंचर सिनकौना कम्पाउन्ड आधा औंस, टिंचर कैप्सीकम १ ड्राम। सब को मिला कर एकत्र करो। मात्रा ५ से २५ बून्द तक पानी के साथ मिला कर पीना चाहिए।

२ व्रण (फोड़ा, फुन्शी) रोग चिकित्सा

१. नीम की छाल की भस्म को बहुत पकने वाले फौड़ा पर लगाने से आराम होता है।

२. कोल को महीन पीस कर घाव पर भुरका ने से रुधिर बन्द होता है।

३. बिगड़े घावों पर नीम का तेल लगाने से आराम होता है।

४. पुराने घाव व फोड़ों पर बेर की छाल का चूर्ण भुरकाने से ठीक होते हैं। पीपदार फोड़े और अदीठ को जल्दी मिटाने के लिये बोरड़ी के कोमल पत्ते और टहनियों को पीस कर गर्म कर लेप करने से आराम होता है।

५. बेर के पत्ते और नीम के पत्ते पीस कर बांधने से नासूर मिटता है।

६. खरैंटी की जड़ को कबूतर की बींट के साथ पीस कर लेप करने से फुन्शियां मिटती हैं।

७. खरैंटी के पत्तों को तेल चुपड़ अग्नि में तपा कर बांधने से फोड़े जल्दी पक जाते हैं।

८. भोज पत्र की छाल के क्वाथ से धोने से जहरी छाला तथा घाव शुद्ध होकर मिट जाते हैं।

९. भरे निगले फोड़ों पर चूने का पानी लगाने से आराम होता है। इस में कपड़े को भिगो कर उन फोड़ों पर लगातार धरा रखना चाहिये। बहुत श्राव, खुजली और दाह वाले बहुत से त्वचा के रोग में केवल चूनेका पानी या तेल मिला चूने के पानी से कपड़ा भिगो रखने से उस त्वचा को बहुत फायदा होता है।

१०. स्त्री के स्तन की बीटली के घाव पर या बीटल तड़क गई हो उस पर चूने का पानी लगा ने से आराम होता है।

११. चूना और घी मिला कर उठते हुए फोड़े पर लगाने से वह नहीं बढ़ता है।

१२. पीप या घाव भरने के लिये चूना और साबुन महीन पीस कर लगाना चाहिये।

१३. जिस दिन फोड़ा उठे उसी दिन चूने को तेल में मिला लगाने से बैठ जाता है।

१४ मेंहदी के पत्ते पीसकर लगाने से फोड़े ठीक हो जाते हैं।

१५ किसी फोड़े को पकाने के लिये गुवार पाठा के गिर को पका कर वांधना चाहिये।

१६. बिगड़े हुए फोड़े पर गाजर का पुल्टिश वांधना ठीक है।

१७ आक के सू . पत्तों का चूर्ण भुरकाने से घाव भर जाता है।

१८. अलसी का पुल्टिश वांधने से फोड़े शीघ्र पकते हैं।

१९. एरंड काकड़ी के दूधिया रस का लेप करने से गांठ बिखर जाती है।

२०. नीला थोथा को पीस कर घाव पर भुरकाने से रुधिर का वहना वन्द होता है।

२१. रसौत का लेप करने से भरा निगला फोड़ा अच्छा हो जाता है।

२२. सुहागा के जल में कपड़ा भिगो कर घाव पर बांधने से रुधिर बहना बन्द होता है।

२३. चौलाई के पत्तों की पुल्टिस बांधने से फोड़े जल्दी पकते हैं।

२४ सांटी के जड़ की पुल्टिस बांधने से फोड़े जल्दी फूट जाते हैं।

२५. एक तोला कत्था, आधा तोला कपूर और तीन मासा सिन्दूर तीनों को पीस छान कर सौ वार धुले हुए छटांक घी में मिला कर खूब मथो और उस जगह लगादो। इसके लगाने से फौरन ठंडक होती जाती है।

२६. नीम के पत्तों को घी में भून लो फिर इस घी में मोम पिघला दो। पहिले घाव को नीम के औटाये पानी से धोवो और पीछे यह मरहम लगावो।

२७ भुनी फिटकरी छान कर घाव पर डालने से घाव से सड़ा मांसा निकल जाता है।

२८. एक तोला सोडा लेकर दो तोला जल में घोल दो और जली हुई जगह पर उसका लेप करदो। इसमें जले स्थान पर फफोला नहीं पड़ते और सूजन तथा जलन आराम हो जाती है।

२९. जले स्थान पर आलू का लेप करना उत्तम है।

३०. कपूर मिला सौ वार का धोया हुआ घी तलवार आदि के घावों पर लगा पट्टी बांध देने से घाव पकता नहीं और वेदना भी नहीं होती।

३१. अष्टगन्ध, कुटकी, लोध, कायफल, मुलैठी मंजीठ, धाय के फूल इनको सिल पर पानी के साथ पीस लो। इसको लेप करने से व्रण अच्छी तरह भर जाता है।

३२. शहद और शराब को मिला कर लेप करने से घाव भर जाता है।

३३. तिल, सैंधा नोन, मुलैठी, नीम के पत्ते, हल्दी दारु हल्दी और निसोथ इनको पीस और घी में मिला कर लेप करने से घाव शुद्ध हो जाते हैं।

३४. सांप की कांचली की राख बड़ के दूध में मिला लो. फिर उसमें राई का फाया भिगो कर नासूर पर रक्खो और दस दिन बाद उठालो लाभ होगा।

३५. शिंगरफ. सफेद कत्था, रीठा, कबीला, सब चिजें छः २ मासा, मोम १ मासा और नीला थोथा एक रत्ती। इन सब को कूट पीस कपड़ छन करलो और सौ बार धुले हुए घी में मिला कर फोड़े को लगाओ। इस मलहम को फोड़े के फूट कर बह जाने के बाद लगाने से घाव भर जाता है।

३६. भुनी फिटकरी २ मासा, सिन्दूर २ मासा, मुरदासंग ४ मासा, तूतिया २ रत्ती, मोम २० मासा और घी ३॥ तोला तैयार रक्खो। पहले घी और मोम को आग पर गलावो और नीचे उतार कर इसमें फिटकरी आदि पीस कर मिला दो। इस मलहम से सब तरह के घाव अच्छे हो जाते हैं।

३७. तूतिया १ मासा, मुर्दासंग २ मासा, सफेद कत्था ४ मासा, राल ८ मासा, कमीला १६ मासा, मोम काफूरी ११ मासा और गाय का घी ३२ मासा, मोम और घी छोड़कर सब दवाओं को कूट पीस छान लो, फिर घी को १०० बार धोकर पानी से धो लो। अब मोम और घी आग पर पतला कर मिला दो और पीसी हुई दवाईयां भी मिलादो। इनको हाथ से मथो बस मलहम तैयार है। फोड़ों के जख्म भरने को यह मलहम बहुत अच्छी है।

३८ शुद्ध गूगल, त्रिफला, और त्रिकुटा इनको समान भाग लेकर पीस छान लो, फिर इस चूर्ण को घी में मिला कर तीन २ मासा की गोलियां बनालो। इन गोलियों को खाने से दुष्ट नाड़ी

व्रण, शूल, उदाव्रत, भगन्दर, गुल्म तथा बवासीर नाश हो जाते हैं। इस गूग्गल को गिलोय के स्वरस या काढ़े के साथ खाना चाहिये।

३६. व्रण शोधन लेपः—आमिया हल्दी, कामनियां सिन्दूर, खुरासिनी अजवायन, आवला सार गंधक, लूणिया गंधक, मंहदी, पपड़िया कत्था, मैनसिल, मुरदासन, कमैला, नीला थोथा, राल, हरताल, सुहागा, चित्रक, पीली कौड़ी, सुपारी, मिश्री और पारा इन सब को समान भाग ले कूट छान शत धौत (सौ बार, धुला हुआ घृत के साथ मिला कर मलहम बनाले। फिर इसका व्रण पर लेप करे तो सब प्रकार के व्रण (फोड़ा) ठीक हो जाते हैं।

४०. कत्था सफेद ५ तोला, राल ५ तोला, फिटकरी ½ तोला नीला थोथा १¼ तोला, तिल्ली का तेल ५ तोला, और पानी ५ तोला। पहिले तेल और पानी को मिलाओ और खूब फंटो, फिर सब दवाइयों का चूर्ण कर उसमें मिला आग पर अच्छी तरह मिला लो। जब मिल जावें तब उतार लो। इस महलम को फोड़ां पर लगाने से सब प्रकार के फोड़े ठीक हो जाते हैं।

४१. बालकों की फुन्सियों पर:—फ्रेंच चाल्क को लेकर कूट पीस लो फिर उसमें थोड़ा सा गुलाबी रंग और थोड़ी सी बोरिक एसिड डाल कर किसी चिनी की डिबिया में भर कर रख लो। यह चीज बाजारों में बहुत बिका करती हैं।

घाव भरने का प्रसिद्ध योग

४२. अङ्गरेजी आयडो फार्मः—बाई कार्बोनेट आफ पोटाश शुद्ध (Carbonate of potash pure) दस भाग, अल्कोहोल (६०^0 फी सदी का) १५ भाग, भपके का पानी १२० भाग, आयोडीन सूखा (Iodine crystals) १० भाग।

बनाने की विधिः—एक लम्बी गरदन की बोतल लो उसमें अमोनिया डालकर और ऊपर बाई कार्बोनेट आफ पोटाश; पानी

तथा अल्कोहोल भी छोड़ दे और बोतल में ऐसा कार्क लगादे कि जिसके अन्दर से एक कांच की नली (Tube) निकली हो। अब बोतल को गरम पानी में छोड़ कर धीरे २ (१७५^0F) की गरमी से गरम करे, जब दवा का रङ्ग बदल जाय तब उस में २५ भाग आयोडीन और मिला दे, इसके बाद एक बार फिर दवा का रङ्ग बदल जाने पर एक भाग आयोडीन छोड़ दे, यदि आयोडीन ज्यादा जान पड़े तो सावधानता के साथ उसमें जरा सा पोटाश घोलदें, इससे उसका रङ्ग बदल जावेगा। अब एक चीनी मिट्टी के प्याले में दवा उड़ेल कर और उसे ढांक कर २४ घन्टे तक अलग रखा रहने दे, फिर उसे फिल्टर कागज में डाल कर पानी अलग करे और आयडो फार्म को एक दो बार साफ ठंडे पानी में मिला कर थिरालो। इस प्रकार सोखता कागज पर फैला कर सुखा ले फिर उसे शीशीयों में भर कर अच्छी तरह कार्क लगादे। यह आयडो फार्म समस्त घावों पर भरने के लिए एक परमोत्तम औषधि है। इसका प्रयोग प्रायः समस्त शफ़ाखानों में डाक्टर लोग किया करते हैं।

४३. स्वदेशी आयडो फार्मः—कोड़िया लोबान के छोटे २ टुकड़ों को ७ दिन तक गाय की छाछ में भिगो, फिर उन्हें निकाल कर सुखाले और पुराने कपड़े में लपेट कर इस प्रकार जलावे कि उन्हें हवा न लगे। जब ये बिल्कुल जल जाय तब गरम २ निकाल कर छाछ में डाल कर बुझा देवे। अन्त में जला कपड़ा अलग करके लोबान निकाल लें और सुखा कर अच्छी तरह पीस डाले और शीशी में भर कर रख लेवे। यह देशी आयडोफार्म भी हर प्रकार के घावों पर छिड़कने से हफ्ते भरके अन्दर भर देता है।

३—बल वृद्धि तथा पुष्टिकारक योग

आज कल प्रथम तो भोगों की अधिकता और तिस पर विषय

विकारादिकों का अधिक सेवन करने से हमारे कितने ही युवकों को अल्पाऽवस्था में ही धातु विकार स्वपन दोष, प्रमेह तथा क्षयादि रोग) आ दवाते हैं। मैंने बहुत से विद्यार्थियों को यह कहते तथा चिल्लाते देखा है कि क्या करें साहब ! हमारी स्मरण शक्ति ऐसी कमजोर हो गई है कि किसी विषय को भली भांति याद ही नहीं कर पाते और जो कठिनता से याद भी कर लिया जावे तो थोड़ी ही देर में विस्मृति को प्राप्त हो जाता है। इनमे से कितनों की तो ऐसी दुर्दशा हो जाती है कि अल्पाऽवस्था में ही अत्यन्त निर्वल, निस्तेज, स्मरण शक्ति का नाश, कम अकल, तथा कितने ही शारीरिक रोगों से आक्रान्त हो राज रोग टी०वी० (क्षयादि) के शिकार हो जाते हैं। इनमें से वहुत से युवक ऐसे भी पाये जाते हैं कि जो अपनी शारीरिक चर्या अहार विहार तथा ब्रह्मचर्य पर तो ध्यान नहीं देते किन्तु अपने २ धातु सम्वन्धी रोगों कि चिकित्सा वैद्य तथा डाक्टर द्वारा कराते रहते हैं और इनसे इस सम्वन्ध की कितनी ही किमती २ दवाइयां भी लेते रहते हैं किन्तु इस प्रकार करने से इनको कोई लाभ नहीं होता, जैसे छिद्र युक्त घड़े में कितना ही पानी डाला जाय किन्तु उसमें एक बून्द भी नहीं ठहर सकता, इसी प्रकार वीर्य निग्रह अर्थात् विना ब्रह्मचर्य व्रत के पालन किये चाहे कैसी भी उत्तमोत्तम औषधियां ली जावें सव निष्फल हो जाती है और इसी लिये धर्म शास्त्र में आदेश किया गया है कि:—

मरणं विन्दुपातेन, जीवनं विन्दु धारणात्।
तस्मादति यत्नेन, कुरुते विन्दु धारणम् ॥

अर्थात् ब्रह्मचर्यव्रत का पालन करना ही जीवन और तद्विपरीत मृत्यु है। अतः व्रत करके अपने वीर्य का निग्रह अवश्य करो। अव मैं पाठकों के लिये वल, वीर्य तथा वुद्धि वर्द्धक कुछ उत्तमोत्तम पाक तथा औषधियों का वर्णन करता हूं कि जिनको

प्रत्येक पाठक सुगमता पूर्वक बनाकर अपने प्रयोग में ले सकते हैं औषधि सेवन करते समय अपने अहार विहार पर अवश्य ध्यान देना चाहिये अन्यथा औषधि कोई लाभ न करेगी। विशेष कर ब्रह्मचर्य पर तो अवश्य ही ध्यान दो और गरम मसाले, आम के अचार, मांस, मदिरा तथा तेल खटाई आदि औषधि सेवन काल में कदापि न खाओ तो अवश्य आपको लाभ होगा।

१—एरण्ड पाक

छिले हुये एरण्डी के बीज ½ सेर, दूध ४ सेर, मिश्री २ सेर, घी पाव भर तैय्यार रखो। सौंठ, पीपल, लौंग, इलायची, दालचीनी हरड़, जावित्री, जायफल, तेजपात, नागकेसर, असगंध, रास्ना, षड़गंधा, पित्त पापड़ा सब एक २ तोला लेकर कूट पीस छान लो। लोह भस्म ६ मासा, अदरख का रस ६ मासा दोनों तैय्यार रखो। प्रथम दूध को कड़ाही में डाल दो जब पकते २ आधा रह जावे तब अरण्डी की मींगी जल के साथ पीस कर पकते दूध में डाल दो, जब खौआ हो जावे, तब उतार लो, फिर कड़ाई में घी डाल कर खौआ को भून डालो, इसके पश्चात् मिश्री की चाशनी बनावो और उसमें खोआ मिला कर उतार लो। गरम गरम में ही उपरोक्त दवाइयों का चूर्ण व अदरख रस मिला दो और ऊपर से बादाम गिरी कतरी हुई आध पाव, मुनक्का आध पाव और किशमिश आध पाव मिला दो और आधी छटांक के लड्डू बना लो। खुराक एक २ लड्डू प्रातः तथा सायं खाकर ऊपर से मीठा मिला बकरी का गरम दूध १ पाव पिलाने से समस्त वायु रोग पित्त रोग, ज्वर रोग, उदर रोग, प्रमेह रोग; पांडु रोग, क्षयरोग, श्वांस रोग तथा नेत्रादि रोग आराम होते हैं और साथ ही दस्त साफ होता है।

२—अश्वनी कुमारों का कौंच पाक

कौंच के बीज की गिरी ४ सेर लेकर २० सेर गाय के दूध में पकाओ पकाने का बरतन मिट्टी का होना चाहिये, जब दूध का खौआ हो जावे तब उतार लो। फिर ८ सेर मिश्री की या सफेद शक्कर की चाशनी करो और उसमें खौआ मिला लो और गरम गरम रहते ही नीचे लिखी दवाइयों का चूर्ण करके मिलादो जायफल, जावित्री, कंकोल, नागकेसर, लौंग, अजवायन, अकरकरा समुद्र शोप, सौंठ, मिरच, पीपल, दालचीनी, इलायची तेजपात, सफेद जीरा, प्रियंगु तथा गज पीपल प्रत्येक एक २ तोला लेकर कूट पीस छान लो और ऊपर की चाशनी में मिलादो इसमें से दो तोला या ज्यादा खाकर ऊपर से मिश्री मिला दूध पीना चाहिये। इसके सेवन से प्रमेह, क्षीणता, मूत्रकृछ, पथरी, गोला, शूल, तथा वायु रोग नाश हो जाते हैं। स्त्रियों को गर्भ रहता है और बल बढ़ता है।

३—किशमिशादिक मोदक

किशमिश ८ छटांक। स्याह मूसली २ तोला सफेद मूसली २ तोला, सालम मिश्री २ तोला, समुद्र शोप २ तोला, मोचरस २ तोला, बादाम मींगी २ तोला शतावर ४ तोला, कुलंजन ६ मासा मिश्री १ सेर। किशमिश, बादाम और मिश्री को अलग रखो और सब दवाओं को अलग। प्रथम किशमिश को पानी में धोकर साफ करलो और सुखालो। बादाम को जरा उबाल कर चाकू से कतर लो और मूसली आदि सात दवाओं को कूट पीस छान लो। मिश्री को कलईदार कड़ाही में थोड़ा सा अन्दाज़ का पानी डाल गाढ़ी २ चाशनी तैय्यार करलो. जब लड्डूओं के लायक चाशनी हो जावे तब उतार लो और ठंडी होने पर सब दवाओं का चूर्ण तथा किशमिश व बादाम डाल कर मिलालो और आधी

२ छटांक के लड्डू बनाओ और चिकने बर्तन में भरदो । प्रातः सायं एक लड्डू खावो और ऊपर से मिश्री मिला कर दूध पीवे। इससे वीर्य खूब गाढ़ा होता है और शरीर पुष्ट होकर मोटा होता है, यह चीज जाड़े में खाने योग्य है ।

४—बलकारक मोदक

कद्दू की मींगी, तरबूज की मींगी, पेठा की मींगी, खरबूजा की मींगी प्रत्येक दस २ तोला, कीकर का गोंद आध सेर, मखाने की खील २० तोला । इन सब चीजों को घृत में तल लेवे और इतना ही भूने कि वे कूटने से महीन हो सके । सब मींगियों को एक बार और गोंद तथा मखाने को पृथक २ भूने और सब को एक में मिलावे । फिर दो सेर मिश्री की चाशनी करके सब चीजें उसमें मिला दे और ५ तोला सफेद इलायची दाना भी डाल दे, यदि चाहो तो मेवा भी डाल सकते हो । इन सब को मिला कर दो २ तोला के लड्डू बनाओ । इनको प्रत्येक ऋतु में खा सकते हो और बच्चों को भी बाजार की मिठाई के स्थान पर यह लाभ दायक मिठाई खिला सकते हो ।

५—बलकारक पाक

बिनौला की मींगी, ककड़ी की मींगी, चिरौंजी, सफेद तिल पोस्त के दाने, सेमर की मूसली, सफेद मूसली शतावर, अष्टगंध सिघाड़े का चूर्ण, छिले इमली के बीज मूली के बीज, शलगम के बीज भूफली भुने ताल मखाने, समुद्र शोष मैदा लकडी प्रत्येक नौ २ मासा । कुलंजन, गोंद चीनिया, नागर मोथा, तज, कौंच के बीच छोटे गोखरू, इन्द्र, जौ, बबूल की फली, कमल गट्टा की मींगी (शुद्ध) धाय के फूल, सेमर का गोन्द बीज बन्द, मोचरस प्रत्येक छ. २ मासा । गुजराती अष्टगंध, भुने उटंगन के बीज, अकरकरा

सोंठ, पीपल, खुरासानी अजवायन प्रत्येक तीन २ मासा। सब को कूट पीस छान तिगुने कन्द की चाशनी करे और इसमें बादाम की मींगी, अखरोट की मींगी एक २ तोला और शुद्ध भांग दो तोला डालना उत्तम है। मात्रा १ तोला। उबाले दूध में १ छुहारा डाल कर ऊपर से पीना चाहिये।

६—गोखरू पाक

गोखरू १ सेर, वेलगिरी, मिर्च, भीमसेनी कपूर, पत्रज, दालचीनी, हल्दी, कूट, ताल मखाना, अफीम, प्रत्येक चीज सवा २ तोला भांग १२ तोला। गोखरू का वारीक चूर्ण करके उसमें दो सेर दूध मिला कर पकाले जब खौआ वन जाय तब ८ सेर मिश्री की चाशनी में ऊपर की सब दवाओं का चूर्ण मिला कर खौआ के साथ जमादे और अपनी पाचन शक्ति अनुसार मात्रा बना कर दूध के साथ सेवन करे। बड़ी पौष्टिक चीज़ है।

७—आम्र पाक

अच्छे पके हुए आमों का रस १०२४ तोला, साफ चीनी का बूरा २७५ तोला, गाय का ताजा घी ६४ तोला, सौंठ ३२ तोला, काली मिर्च १६ तोला, पीपल ८ तोला, साफ पानी २५६ तोला। ऊपर की सातों चीजों को मिला कर मिट्टी के वर्तन में मन्द २ आंच से पकावे और लकड़ी की कलछुली से चलाता रहे जब चाशनी गाढ़ी पड़ जावे तब उतार कर नीचे लिखी हुई दवाइयों का चूर्ण करके मिला दे और ठंडा करके ३२ तोला शहद मिला दे फिर उसे थाली में जमा दे। मिलाने के लिये दवा इस प्रकार है, धनिया, पिसा जीरा, हरड़, चीता, नागर मोथा, दालचीनी कलौंजी पीपरा मूल, नाग केसर, पीपल, इलायची के दाने, लौंग जायफल प्रत्येक चार २ तोला लेकर कूट पीस कपड़ छन करके

उपरोक्त पाक में मिला दे। यह आम्र पाक बल तथा वीर्य को बढ़ाने के लिए एक बहुत ही प्रसिद्ध आयुर्वैदिक योग है।

८—लौकी पाक

अच्छी ताजा खाने लायक लौकी को लेकर उसके बीज निकाल डालो और पानी में धीमी आंच से उबाल लो। फिर उसे घी में भून कर चौगुने दूध के साथ खोआ कर डालो और बराबर की मिश्री मिला कर बर्फी सी जमालो। ऊपर से चिरौंजी पिस्ता तथा बादाम गिरी आदि की बारीक कतर ऊपर चिपका दो और चांदी के वर्क भी चढ़ा दो। पाठक इसी प्रकार कुम्हाड़ा, ककड़ी नासपाती तथा कसैरू आदि के भी पाक बना सकते हैं।

९. धातु पौष्टिक गोली—अकरकरा, तालमखाना, छोटी बड़ी इलायची, कुचला (शुद्ध) काली मिर्च, रूमी मस्तगी, सौंफ, लौंग, जायफल, कंकोल, गोखरू, असगंध, बालछड़, मीठे इन्द्र जौ, दालचीनी, छोटी हरड़े, नागर मोथा, छोटी पीपल, अगर। सब चीजों को समान भाग ले कूट पीस कपड़ छन करके तिगुने शहद के साथ सान डाले और छोटे बेर के समान गोलियां बनाले। रोज सवेरे १ गोली दूध के साथ सेवन करे। यह गोली धातु को पुष्ट करने वाली है।

१०. बलवीर्य वर्द्धक पूरी—मिश्री १ तोला, घी १ तोला, उड़द का आटा २ तोला मिला कर सानलो और घी में पूड़ियां सेकलो फिर सेवन करो ताकत आजायगी।

११. वीर्य गाढ़ा होने का परीचित योग—बबूल की कच्ची फली जो छाया में सुखाई हों ५ तोला, मौलसरी की छाल सूखी ५ तोला, शतावर ५ तोला, मोचरस ५ तोला इन सबको कूट पीस कर छान लो और चूर्ण में २० तोला मिश्री पीस कर मिला दो इस

मे से छः मासा चूर्ण खा कर दूध पीने से कैसा ही पतला विर्य हो वह गाढ़ा हो जात है ।

१२. अपूर्व पुष्टीकारक योग—गिलोय, त्रिफला, मुलैठी, बिदारी कंद, सफेद मूसली, नाग केशर, शतावर प्रत्येक छटांक २ भर लाकर कूट पीस छान लो। इसमें से छ. मासा चूर्ण, छः मासा घी और ४ मासा शहद मिला कर रोज खाने से और ऊपर से मिश्री युक्त दूध पीने से वूढा भी जवान हो जाता है किन्तु ३० दिन में लाभ दिखता है।

१३ वीर्य निबन्ध पर अपूर्व योग —इमली के बीज १ सेर लाकर पानी में ४ दिन तक भिगोवे, पीछे निकाल कर ऊपर का काला छिलका दूर कर दे और बीजों को सुखाले। सूखने पर पीस कर छानले और चूर्ण के बराबर मिश्री मिला कर रखदे। इसमें से दो चना भर चूर्ण ४० दिन तक खाने से वीर्य गाढा हो जाता है।

१४ धातु पुष्टी कारक योग.—मूसली सफेद, मूसली काली, शतावर शकाकुल, मिश्री, असगंध नागोरी, सिंघाड़ा, और मुलैठी इन सब चीजों को समान भाग लेकर चूर्ण करलो और चूर्ण के बराबर मिश्री पीस कर मिलादो। इसमें स ६ मासा चूर्ण सायं प्रात भैंस के दूध के साथ सेवन करने से वीर्य पुष्ट हो जाता है।

१५. महाशक्ति वर्धक योग—नागोरी असगंध का चूर्ण २॥ तोला गिलोय का सत १ तोला, इन दोनों को भांगरा के रस में खूब घोंटे, जब बिलकुल महीन हो जाय तब आध २ मासा की गोलियां बनाले और दूध के साथ एक २ गोली सायं प्रातः सेवन करे।

१६. ग्रीष्म में पीने लायक अपूर्व ठंडाई—ब्राह्मी छः मासा, शांखपुष्पी ६ मासा, फूल गुलाब १ मासा, छोटी इलायची १ मासा,

काली मिर्च १ मासा, बादाम ५ नग, मुनक्का बीज निकाले ५ नग, सौंफ ३ मासा, मिश्री या शक्कर ५ तोला। इन सब चीजों को ठंडाई की तरह कूट पीस छान कर नित्य गर्मी के दिनों में सेवन करें। यह एक समय बना कर पीने की मात्रा है। इसके सेवन करने से मस्तक में तरी आती, गर्मी के विकार नाश होते हैं। तथा स्मरण शक्ति का विकाश होता है। दिमागी काम करने वाले वकील बाबू लोग तथा विद्यार्थियों के लिये बड़ा ही अपूर्व योग है।

४ पांडु तथा शोथ (सूजन) रोग चिकित्सा

यह रोग अधिक परिश्रम करने, अधिक खटाई और तीक्ष्ण पदार्थों के विशेष भक्षण से शरीर में स्थित वात, पित्त तथा कफादिक तिनों दोप कुपित होकर रुधिर को बिगाड़ देते हैं जिससे त्वचा पीली पड़ जाती है। इसी को पांडु (पीलिया) कमला तथा हलीमक रोग भी कहते हैं। पांडु रोग होने से पहले त्वचा फटने लगती है। अंग में पीड़ा होती तथा मिट्टी भक्षण करने की इच्छा होती है, नेत्रों में सूजन हो जाती है, मूत्र पीला उतरता है, अन्न पाचन नहीं होता है जब शरीर में ऐसे लक्षण विदित हों तब समझ लेना चाहिये कि हमको पांडु रोग हो गया है। जो पांडु रोग अत्यन्त ऊष्ण, पित्त कारक वस्तुओं का भक्षण करता है तो उसके पित्त रुधिर और मांस को दग्ध करके कामला रोग को पैदा करता है। लौकिक में इस रोग को पीलिया रोग कहते हैं। जिसके नेत्र, त्वचा, नख, तथा मुख आदि पीले पड़ जावें, इन्द्रियां निर्बल हो जावें और अन्न से अरुचि हो जावे तो जान लो कि हमको पीलिया रोग हो चुका है। इस रोग पर अनेकों प्रकार की औषधियां शास्त्रों में वर्णन हैं तिन में से कुछ मुख्य २ तथा सुगम औषधियां पाठकों के हितार्थ लिखता हूं कि जिससे प्रत्येक पाठक

विना किसी वैद्य तथा डाक्टर की सहायता के अपने रोग की चिकित्सा स्वयं कर सकें।

पांडु रोग पर सुगम चिकित्सा

१. हरड़ को गोमूत्र में पका कर खिलाने से सोथ (सूजन और पांडु रोग मिटता है।

२. माल कांगनी के तेल का सेवन करने से पांडु रोग की जल युक्त शोथ मिटती है। यह तेल इस रोग में बड़ा उपकारी है इसकी मात्रा १० से १५ बून्द तक है।

३. सर्वाङ्ग जल मय शोथ मिटाने के लिये काली जीरा की फक्की देनी चाहिये। इसकी मात्रा १। मासा से १।। मासा तक है।

४. चित्रक के चूर्ण को आंवला के रस की ३ या ४ भावना देकर उसको गौ घृत के साथ ३।। मासा चाटे तो पांडु रोग मिटता है।

५. शरीर के किसी भाग की जल युक्त शोथ मिटाने के लिये इन्द्रायन का वफारा और विरेचन देना चाहिये। इसकी जड़ को सिर के में पीस कर गर्म करके लगाने से ऊपर की सूजन मिटती है।

६. अडूसे के रस में कलमी शोरा डाल कर पिलाने से मूत्र वहुत लाकर पांडु रोग मिटता है।

७. लोहे के मैल को तपा कर गौ मूत्र में बुझा कर ठीक करे फिर ४ रत्ती को ६ मासा मधु और ३ मासा घृत में मिला कर चाटे तो असाध्य पांडु रोग नाश हो।

८. गुणादि चूर्णः—१२ तोला गुड़, १२ तोला निशोथ, ४ तोला पीपल, ४ तोला मंडूर भस्म, ४ तोला तिल। इन सब को पीस छान कर रखलो। इसके सेवन से सब प्रकार की सूजन दूर हो।

९. शोथारी चूर्णः—सूखी मूली, चिरचिटा, त्रिकुटा, त्रिफला दन्ती की जड़, वायविडंग, चीत की जड़ और नागरमोथा समान

भाग लेकर पीस छान लो। इसमें से नित्य ३ मासा चूर्ण खाकर ऊपर से बेल के पत्तों का स्वरस पीने से सब प्रकार के सूजन नष्ट होते हैं।

१०. यवाक्षार, सज्जीक्षार, सौवर्चल, सेंधा नौन, विड़ नोन, खारी नोन, लोह भस्म, त्रिकुटा त्रिफला, पीपला मूल, वायविडंग, नागर मोथा, अजमोद, देव दारू, बेल का गुदा, इन्द्र जौ, चीते की जड़, पाढ़, मुलेठी, अतीस, ढाक के बीज, भुनि हींग प्रत्येक १ कर्ष लेकर चूर्ण करलो तथा मूली के टुकड़ों की भस्म। इन सब को १२ सेर ६४ तोला जल में मिला ७ बार छान कर पकाना चाहिये फिर गोली बनाने योग्य गरम होने पर ६ मासा की गोली सुखा कर विधी पूर्वक सेवन करना चाहिये । इस से प्लीहा, उदर, श्वेत कुष्ठ, हलीमक (पांडु) रोग तथा शोथ (सूजन) रोग नाश होते हैं।

११. कलमी शोरा १ तोला, मिश्री ५ तोला । दोनों चिजों को खरल में डाल कर महिन कर लो। इसमें से ६ मासा तक शुद्ध जल में ७ दिन तक फक्की लेने से पांडु रोग, पेशाब की जलन इत्यादि सर्व रोग नाश होते हैं।

१२. नीम के पत्तों के रस में शहद मिला पिलाने से कामला रोग मिटता है।

१३. अडूसा के पंचाङ्ग के रस में मिश्री और मधु मिला पिलाने से कामला रोग मिटता है।

१४. नींबू का रस आंख में डालने से कामला मिटता है।

१५. मदार (आक) के जड़ की ६ रत्ती छाल और १२ काली मिरच पीस कर दिन में दो बार देने से कामला मिटता है।

१६. गिलोय के पत्तों को पीस गाय की छाछ में छान कर पिलाने से कामला मिटता है।

१७. गुवार पाठ के रस मे घृत मिला नस्य लेने से पीलिया मिटता है।

१८. हींग का अंजन करने से कामला मिटता है।

१९. गाय के दूध मे सौंठ मिला पिलाने से कामला मिटता है।

२०. एक तोला हल्दी को ४ तोला दही के साथ चाटने से पीलिया मिटता है।

२१. मैंहदी के पत्तों को कूट कर रात भर पानी में भिगो उनका नितरा हुआ पानी प्रातः काल ७ दिन तक पिलाने से कामला रोग मिटता है।

गल गण्ड माला रोग चिकित्सा

१. अमलतास की जड़ चावलों के पानी में महीन पीसकर गलगण्ड और गण्डमाला पर लेप करने से अवश्य आराम होता है।

२. आंवलों के पानी में कचनार की छाल पीस कर और सोंठ का चूर्ण मिला कर पीने से गलगण्ड और गण्डमाला रोग नाश होता है।

३. कायफल को महीन पीस छान कर गलगण्ड पर मलने से शीघ्र नाश होता है।

४. अमृतादि तेल—गिलोय नीम की छाल, हिंसक वृक्ष, कूड़े की छाल, पीपल, वला, अति वला और देवदारू इनको आध २ पाव लेकर पानी के साथ सिल पर पीस कर लुगदी करलो। फिर तिल का तेल ४ सेर, पानी १६ सेर और ऊपर की लुगदी को पकाओ, तेल मात्र रहने पर छान लो इस तेल को ६ मासा नित्य पीने से गलगण्ड आराम होता है।

५. गुञ्जाद्य तेल—सफेद घूंघची की जड़, कनेर की जड़, विधारा के बीज, आक का दूध और सरसों इनको छटांक २ भर लो। सरसों का तेल १½ सेर और गौ मूत्र ५ सेर लो। सब को

मिला कर तेल पकालो, जब तेल मात्र रह जाय तब छान लो। इस पके हुए तेल को फिर उन्ही सब चीजों के साथ क्रमशः दश बार पकाओ, तब उत्तम गुञ्जाद्य तेल होगा। इसकी मालिश करने से दारुण गण्ड माला, अपची और नाड़ी व्रण आदि नष्ट हो जाते हैं।

६. तुम्बी तैलः—बाय विडंग, यवाक्षार, सैंधा नोन, बच, रास्ना चीता, त्रिकुटा और हींग इनको आध २ पाव लेकर पानी के साथ सिल पर पीसलो। सरसों का तेल ४ सेर और पकी कड़वी लौकी का रस १६ सेर तेयार करलो। फिर तेल, रस और लुगदी को मिला कर पकाओ, तेल मात्र रहने पर छानलो। इस तेल की नस्य देने से गलगण्ड माला आराम होती है।

६ दर्द चोट पर ईङ्गलिश मेडीशन्स

१. टिंचर आयोडीनः—आयोडीन (Iodine) ५० ग्राम, पोटेशियम आयोडाइड (Potassium Iodine) २५ ग्राम, भपके का पानी (Distilled water) २५ मिली लीटर। विधि—आयोडीन और पोटाशियम आयोडाइड को पानी में घुला कर अल्कोहोल को इतना मिलावे कि जिससे कुल टिंचर १००० मिली लीटर तैयार हो जावे।

२. मलहम आयोडीन (Ointment of Iodine):—शुद्ध आयोडीन आधा ड्राम, आयोडाइड आफ पोटेशियम १ ड्राम, व्हाइट वेक्स (सफेद मोम) १४॥ ड्राम। विधि—पहिले मोम को थोड़ा जैतून के तेल (Olive oil) के साथ मिला कर पिघला ले, फिर उसमें आयोडीन और आयोडाईड आफ पौटेशियम को एक साथ घोट कर मिलादें।

३. पेन किलर (Pain killer) अल्कोहोल (Alcohol) १ औंस, टिंचर मर्ह (Tincture Myrrh) आधा औंस स्प्रिट

कैम्फर (Spirit of camphor) १ औंस, टिंचर ग्वायसी (Tincture of Guniace) १ औंस। सब को मिला दो और एक शीशी में भर कर रखदो।

४. स्वदेशी टिंचर आयोडीनः आयोडम प्योर ४ ड्राम, पोटाश आयोडाइड ४ ड्राम, रेक्टीफाइड स्प्रिट १६ औंस, डिस्टिल्ड वाटर ४ ड्राम। प्रथम आयोडीन और पोटाश को डिस्टिल्ड वाटर में खरल करें, बाद में स्प्रिट मिलाकर शीशी में भरदे। यदि सस्ती बनानी हो तो मैथिलेटिड स्प्रिट मिला कर बनावें।

७ नेत्र रोग पर ईङ्गलिश पेटेन्ट मेडीशन्स

१. Eye Drop (आई ड्राप) नं० १—गुलाब जल Rose water) २ औंस फिटकरी (Alumina) ८ ग्रेन। दोनों को मिला कर शीशी में भर दो। यह दुखती आंख की एक पेटेन्ट दवा है।

२. Eye Drop (आई ड्राप) नं० २ —: गुवार पाठा का रस १॥ तोला, नीम के पत्तों का रस १ तोला, अफीम ४ ग्रेन, फिटकरी ८ ग्रेन। सब को मिला कर खूब खरल करो और फिर छान कर शीशियों में भर दो। इसकी प्रति दिन चार २ बून्द दवा डालने से दुखती आंख अच्छी हो जाती है। यह बहुत ही उत्तम दवा है।

Eye cure (आई क्योर):—जिंक सल्फास ४ ग्रेन, गुलाब जल १ औंस। सब को सिला कर शीशी में भर लो। इससे आंखकी सुर्खी, जाला, पानी बहना आदि सर्व विकार नाश होते हैं

८ प्लेग का मलहम

संखिया ६ मासा, पारा ६ मासा, शुद्ध गंधक ६ मासा, हड़ताल वर्की ६ मासा, मैन्सिल ६ मासा, नीम की पत्ती ६ मासा, सिंदूर ६ मासा, फिनाइल ६ मासा, कुचला ६ मासा, मोम १ मासा,

चावल मोगरा १० दाना, तिल का तेल १ पाव। सब दवाओं को पीस कर तेल के साथ पकावे। जब एक चौथाई तेल रह जावे तब उसमें मोम मिला कर उतार ले और छान कर शीशी में भरले। इस तेल को प्लेग की गिल्टी पर मलने और उस पर तर किया हुआ फाया गिल्टी पर बांध रखने से गिल्टी बैठ जाती है।

६ विष शोधन प्रकरण

आयुर्वेद शास्त्रों में दवाइयों के रूप विषों का सेवन करना भी लिखा है। किन्तु विष सेवन करने से पहिले उनका अच्छी भांति शोधना भी बहुत आवश्यकीय है। विषों के सेवन करने से भी कई प्रकार के रोग शान्त होते हैं। वे विष कौन २ से हैं तथा इनका शोधन किस प्रकार किया जाता है। सो सब विषय सूक्ष्म रूप से पाठकों को बोध कराने निमित्त वर्णन करता हूँ। पाठक इनका बड़ी सावधानता पूर्वक वैद्य तथा डाक्टरों की अनुमति से सेवन कर सकते हैं।

१. विषों के नामः—कालकूट १. वत्सनाभ २. शृङ्गक (सींगिया अथवा मीठा तेलिया) ३. प्रदीपक ४. हलाहल ५. ब्रह्मपुत्र, ६ हारिद्र सक्तुक ७ और सौराष्ट्रिक ये नौ महा विष कहलाते हैं।

२. उपविषों के नामः—आक, थूहर, धतूरा, कलिहारी, कनेर, गुञ्जा और अफीम ये सात उपविष कहलाते हैं।

नोटः—औषधियों में जहां २ धातु, उपधातु, विष तथा महा विष का प्रयोग लिखा हो उनको विधि सहित शुद्ध करके खाने के काम में लिये जाते हैं। अब इनको शुद्ध करने का तरीका लिखा जाता है।

विष शोधन की प्रथम विधिः—विष शोधने की विधि यह है कि विष के छोटे २ टुकड़े करके ३ दिन तक गौ मूत्र में भिगो रखे फिर उन्हें साफ पानी से धो डाले, इसके बाद लाल सरसों

के तेल में भिगोये हुए कपड़े में उन्हें बाघ कर रख दो यह विधि भाव प्रकाश में लिखी है।

विष शोधन की दूसरी विधि.—विष के टुकड़े करके उन्हे ३ दिन तक गौ मूत्र मे भिगो रखे फिर उन्हें साफ पानी से धो कर एक महीन कपड़े मे बांध लो फिर हांडी मे बकरी का मूत्र या गाय का दूध भर दो। हांडी पर एक आडी लकड़ी रख कर उसी मे उस पोटली को लटकादो, पोटली दूध या मूत्र मे डूबी रहनी चाहिये। फिर हांडी को चूल्हे पर चढ़ा दो और मन्दाग्नि से ६ घन्टे तक ओटावो, पीछे विष को निकाल कर धोलो और सुखा कर रख दो। आज कल प्रायः विष शोधने मे यही रीति काम मे ली जाती है यदि विष को गाय के दूध मे पकाओ जब दूध गाढ़ा हो जावे या फट जावे तब विष को निकाल लो। और इस को शुद्ध विष समझो।

मात्रा—जौ भर विष की हीन मात्रा है, ६ जौ भर की मध्यम और ८ जौ भर की उत्कृष्ट मात्रा है महाघोर व्याधि में उत्कृष्ट मध्यम मे मध्यम और हीन मे हीन मात्रा का प्रयोग करना चाहिए उग्रकीट विष निवारण को २ जौ भर और मन्द विष या बिच्छू के काटने पर २ तिल भर विष काम में लावो।

विष सेवन पर अपथ्यः—लाल मिरच चरपरे पदार्थ खट्टे पदार्थ, तेल, नमक, दिन मे सोना, धूप मे फिरना और आग तापना इत्यादि वर्जनिय है। इसके सिवाय रूखा भोजन और अजीर्ण भी हानिकारक है क्यों कि जो मनुष्य रूखा भोजन करता है उसकी दृष्टी मे भ्रम, कान में दर्द और वायु के दूसरे आक्षेप आदि रोग हो जाते हैं।

विष शान्ति के सुगम उपाय

१. यदि किसी ने छुपा कर स्वयं विष खाया हो तो वह

पीपल, मुलैठी, शहद, चीनी और ईख का रस इनको पीकर वमन करदे। आरम्भ में ज़हर खाते ही वमन से बढ़ कर विष नाश करने की और दवा नहीं।

२. अगर देर हो गई हो और विष पक्वाशय में पहुंच गया हो तो दस्तावर दवा देकर दस्त करा दो।

३. दो या तीन तोला पपड़िया कत्था पानी में घोल कर पीने से संखिया का ज़हर उतर जाता है। यह पेट में पहुंचते ही कै लाता है।

४. एक मासा कपूर, तीन चार तोला गुलाब में हल कर के पीने से ही संखिया का विष नाश होता है।

५. कड़वे नीम के पत्तों का रस पिलाने से संखिया का विष उतर जाता है और कीड़े नाश हो जाते हैं।

६. करेले कूट कर उनका रस निकाल लो और संखिया खाने वाले को पिलाओ। इस उपाय से वमन होकर संखिया निकल जायगा, उत्तम दवा है।

७. बिनोले की गिरी निवाये दूध के साथ पिलाने से संखिया का विष उतर जाता है।

८. संखिया के विष पर शहद और अञ्जीर का पानी मिला कर पिलाओ। इससे कै होगी, यदि न हों तो उंगली डाल कर कै करावो।

९. जिस तरह बहुत सा गाय का घी खाने से धतूरे का विष उतर जाता है उसी प्रकार दूध में घी मिला कर पिलाने से संखिया का विष उतर जाता है।

१०. दूध और चूने का नितरा हुआ पानी बराबर २ मिला कर पिलाओ।

११. दूध और मिश्री मिला कर पीने से संखिया का विष उतर जाता है।

१० उप विषों का वर्णन

१. थूहर या सेहुँड का वर्णन.—थूहर का दूध उष्ण वीर्य चिकना चरपरा और हल्का होता है। इसके सेवन से वायु गोला उदर रोग, आफरा और विष शान्त होता है। यदि थूहर का दूध ज्यादा वेकायदा पीने से खून के दस्त हो गये हों तो मक्खन तथा मिश्री खिलाओ या कच्चा भैंसका दूध मिश्री मिलाकर पिलावो शीतल जल में मिश्री मिला कर पीने से थूहर का विष शान्त होता है।

२. कलिहारी का वर्णन:—संस्कृत में इसको गर्भपातनी, गर्भ-च्युत और कलिहारी। लेटिन में इसको ग्लोरी ओशासुपरवा या एकोनाइटम निपिलस कहते हैं। इसकी मात्रा ६ रत्ती की है। कलिहारी सारक, तीक्ष्ण तथा गर्भशल्य और व्रण को दूर करने वाली है। इसके लेप मात्र से ही शुष्क गर्भ और गर्भ गिर जाता है। इससे कृमि, वस्ति शूल विष, कोढ़, ववासीर, खुजली, व्रण सूजन और शूल नष्ट हो जाते हैं। इसकी जड़ का लेप करने से ववासीर के मस्से सूख जाते हैं, सूजन उतर जाती है, व्रण और पीडा नाश हो जाती है। यदि कलिहारी वे कायदा या ज्यादा खाली जाती है तो दस्त लग जाते हैं और पेट में बड़े जोर से ऐंठनी और मरोड़ी होती है, यदि इसका जल्दी उपाय न किया जाय तो मनुष्य वेहोश होकर और मल टूट कर मर जाता है यानी इतने दस्त होते हैं कि मनुष्य को कुछ चेत नहीं रहता।

विष शान्ति के उपाय—१. यदि कलिहारी से दस्त इत्यादि लगे हों तो विना घी निकाले गाय के माठा मे मिश्री मिला कर पिलाओ।

२. कपड़े में दही रख कर और निचोड़ कर दही का पानी निकाल लो, फिर जो गाढ़ा २ दही रहे उसमें शहद और मिश्री मिलाकर पिलाओ इन दोनों मे से किसी एक उपाय से कलि-हारी का विष शान्त होगा।

३. कनेर का वर्णन—सफेद कनेर से प्रमेह, क्रमि, व्रण, बवासीर, सूजन और रक्त विकार आदि रोग नाश होते हैं। इस से उपदंश के घाव, विष, खुजली, कफ और ज्वर भी नाश हो जाते हैं।

कनेर शुद्धि का उपाय—कनेर की जड़ के टुकड़े करके गाय के दूध में दोला यन्त्र की विधि से पकाओ तो शुद्ध हो जाती है।

कनेर की विप शान्ति के उपाय—१. सफेद कनेर के पास सांप नहीं आता। यदि कोई इसे खाले और विप चढ़ जाय तो भैंस की दही में मिश्री पीस कर मिलादो और इसको खिलाओ तो विष उतर जायगा।

४. धतूरे का वर्णन—धतूरा मादक या नशा लाने वाला है। इसके सेवन से कोढ़, दुष्ट व्रण, कामला, ववासीर, विष, कफ, ज्वर, जूंआ, लीख, पामा, खुजली, चमड़े के रोग, कृमि और ज्वर उतर जाता है। यह शरीर के रङ्ग को उत्तम या लाल करने वाला, बलकारक, गरम, भारी, कपेला मधुर और कड़वा तथा मूर्छाकारक है। इसको अङ्गरेजी में स्ट्रेमोनियम कहते हैं।

विष शान्ति के उपाय—तुपोदक में चावलों की जड़ पीसकर और मिश्री मिला कर पिलाने से धतूरे का विप शान्त होता है।

२. शंखाहूली की जड़ पानी में पीसकर पिलाने से धतूरे का विप शान्त होता है।

३. कपास के रस को पीने से धतूरे का मद शान्त होता है।

४. बहुत सा गाय का घी पिलाने से धतूरे का विप शान्त होता है।

५ चालीस मासा विनोले की गिरी पानी में पीस कर पीने से धतूरे का विप उतर जाता है।

६. चिरमठी का वर्णन—दोनों तरह की चिरमठी स्वादिष्ट कड़वी, वलकारी, गरम, कपैली चमड़े को उत्तम करने वाली, बालों

को हितकारी, विष तथा राक्षस ग्रह पीड़ा, खाज, खुजली, कोढ़, मुंह के रोग, वात भ्रम और स्वांस आदि रोग नाशक है। बीज कान्ति कारक और शूल नाशक है। सफेद चिरमठी विशेष कर वशीकरण है।

चिरमठी शोधन विधि—चिरमठी को कांजी में डाल कर ३ घण्टे तक पकाओ तो वह शुद्ध हो जायगी।

चिरमठी का विष शान्ती उपाय—चौलाई के रस में मिश्री मिला कर पीने से और ऊपर से दूध पीने से चिरमठी का विष शान्त होता है।

६. भिलावे का वर्णन—भिलावा के फल की चार रत्ती से साढ़े तीन मासा तक मात्रा लिखी है। भिलावे का फल पाक और रसमें मधुर, हल्का, कषैला, पाचक स्निग्ध, तीक्ष्ण, गरम, मल को छेदने और फोड़ने वाला मेधा को हितकारी, अग्निकारक तथा कफ, वात, व्रण पेट के रोग, कोढ़ ववासीर, संग्रहणी, गुल्म सूजन, आफरा, ज्वर और क्रमियों को नाश करता है। भिलावा की मींगी मधुर, वीर्य वर्द्धक पुष्टिकारक तथा वात और पित्त को नाश करने वाली है। भिलावा गरमी पैदा करता, वायु को नाश करता, दोषों को स्वच्छ करता, चमड़े में घाव करता, शीत के रोग, पक्ष वध, अदित और कम्प तथा मूत्रकृच्छ में लाभदायक है। इसके सेवन से मस्से नष्ट हो जाते हैं।

भिलावा शोधन विधिः—भिलावों को शोध कर खाना चाहिये भिलावों को जल में डाल दो जो भिलावे डूब जांय उन्हें निकाल कर उतने ही पानी में भिगो दो, फिर उन्हें ईंट के चूर्ण या ककुवा से खूब घीसो और उनके नीचे की ढ़िपुनी काट २ कर फेंक दो। इसके बाद उन्हें फिर जल में धो डालो और सुखा कर काम में लावो। शुद्ध भिलावे हैं।

भिलावा शोधने का दूसरी विधिः—भिलावो को एक दिन भर

पानी में पकाओ फिर उन्हें निकाल कर उनके टुकड़े २ कर डालो और दूध में डाल कर पकाओ। इसके बाद उन्हें खरल में डाल कर ऊपर से तोला २ भर सोंठ और अजवायन मिलादे और खूब कूटो। ये भिलावे भी शुद्ध दवा के काम में आते हैं।

भिलावे का विष शान्ति योग

१. कसौंदी के पत्ते पीस कर लगाने से भिलावों का विकार शान्त हो जाता है।

२. इमली की पत्तियों का रस पीने से भिलावे से हुई खुजली और सूजन नष्ट होती है।

३. चिरौंजी और तील भैंस के दूध में पीस कर खाने से भिलावा की खुजली और सूजन नाश होती हैं।

४. यदि भिलावा खाने से विकार हो गया है तो अखरोट खाना चाहिये।

५. यदि भिलावों का धूंवा लगने से सूजन चढ़ आई हो तो आमा हल्दी, साठी चावल और दूध को बासी पानी में पीस कर सूजन पर जोर से मले।

६. घी की मालिश करने से भिलावे की धूंआ या गंध से हुई सूजन या विष नाश हो जाता है।

७. यदि ज्यादा भिलावा खाने से गरमी का वहुत जोर हो जाय तो दही में मिश्री मिला कर खाओ, फौरन गर्मी शान्त हो जायगी।

८. यदि भिलावे का तेल शरीर पर लग जाये या पकाते समय धूंआ लग जाने से शरीर पर सूजन, फोड़े, फुन्सी, घाव या फफोले हो जांय तो काले तिलों को दूध या दही में पीस कर लेप करो।

९. दही, दूध, तिल खोपरा, चिरोंजी, ये सब चीजे भिलावे के विकार दूर करने की उत्तम दवा है।

१०. अखरोट की मींगी, नारयल की गिरी, चिरौंजी, काले तिल इन सब को महीन पीस कर भिलावे के विकार, या सूजन घाव पर लेप करो, फिर ४ या ५ घन्टे बाद लेप को हटा कर उस जगह को मठे से धो डालो और कुछ देर तक वहां कोई लेपादि न करो। घन्टे या आध घन्टे पीछे फिर ताजा लेप बनाकर लगादो इस तरह करने से भिलावों के समस्त रोग नाश हो जाते हैं।

७ भंग का वर्णन और उसके मदनाशक उपाय

भंग को संस्कृत में मदानि, विजया, जया त्रैलोक्य विजया आनन्दा, हर्षिणी, मनोहरा, हरा हरि प्रिया, शिव प्रिया, ज्ञान वल्लिका, कामाग्नि तन्द्रा रुचि वर्द्धनि और अङ्गरेजी में इन्डिया हेम्प कहते हैं। भंग कफ नाशक, कड़वी, ग्राही, काविज, पाचक हल्की तीक्ष्ण, गरम, पित्त कारक तथा मोह, मद, वचन और अग्नि को बढाने वाली, मेघा जनक और अग्नि कारिणी है। भंग से अग्नि दीप्त होती, रुचि होती, मल रुकता, नींद आती और स्त्री प्रसंग की इच्छा होती है।

भंग में डालने के मसाले :—सौंफ, बादाम, छोटी इलायची, गुलाब के फूल, खीरे ककड़ी के बीजों की मींगी, मुलैठी, खशखश के दाने, धनिया, सफेद चन्दन तथा मिश्री आदिक हैं।

१ भंग विष शांत के उपाय :—एक पेड़ा पानी में घोल कर पिलाने से भंग का नशा उतर जाता है।

२. बिनौले की गिरी दूध के साथ पिलाने से भंग का नशा उतर जाता है।

३. यदि गांजा पीने से बहुत नशा हो गया हो तो दूध पिलाओ अथवा घी और मिश्री मिला कर चटावो। अथवा खटाई खिलाओ।

४. ईमली का सत खिलाने से भंग का नशा उतर जाता है।

५ पुराने आचार के नींबू खाने से भग का नशा उतर जाता है।

६. भांग के नशे की गफलत में एमोनिया सूंघाना चाहिये। अगर एमोनिया न हो तो चूना और नौसादर को लेकर जरा से जलके साथ हथेली में मल कर सूंघाओ। यह घरेलू अमोनिया है।

७. सोंठ का चूर्ण गाय के दही के साथ खाने से भग का नशा उतर जाता है।

८ जमाल घोटे का वर्णन और विष शान्ति उपाय—जमाल घोटा दो तरह का होता है एक को छोटी दन्ती और फलों को दन्ती बीज या जमाल घोटा कहते हैं। ये फल अरण्डी के छोटे बीजों जैसे होते हैं ये बहुत ही तेज दस्तावर होते हैं। इससे वमन और विरेचन होता है। फलों के बीच में एक दो परती जीभी सी होती है उसी से कै होती है। मींगियों में तेल सा तरल पदार्थ होता है, इसी को वैद्य लोग शोध कर उस चिकनाई को दूर कर देते हैं। जब जीभी निकल जाती है और चिकनाई दूर हो जाती है तब जमाल घोटा खाने के काम का होता है। जमाल घोटा भारी, चिकना, दस्तावर तथा पित्त और कफ नाशक है। जमालघोटे के तेल को अङ्गरेजी में क्रोटन आइल कहते हैं इससे आफरा, उदर रोग, सन्यास, शिरो रोग, धनुस्थम्भ, ज्वर, उन्माद, एकांग रोग, आमबात और सूजन नष्ट हो जाती है। इससे खांसी भी जाती है। जमाल घोटे की मात्रा १ रत्ती भर है, इसके द्वारा दस्त कराने से जीर्ण ज्वर तथा उदर रोग नाश हो जाते हैं।

१. जमाल घोटे का शोधन प्रथम प्रकार:—जमाल घोटे के बीच में दो परती जीभी सी होती हैं उसको निकाल डालो। फिर उसे दूध में दौला यन्त्र की विधि से पकालो, जमाल घोटा शुद्ध है।

२. जमाल घोटे को भैंस के गोबर मे डाल कर छः घण्टे तक पकाओ, इसके बाद जमाल घोटे के छिल्के उतार कर भीतर

की जीरी निकाल फैंको। शेष नींबू के रस में दो दिन तक घोटो बस यह जमाल घोटा काम का हो जायगा।

जमाल घोटे का विष शान्ति उपय।

१. धनिया, मिश्री और दही तीनों मिला कर खाने से जमाल घोटे का उपद्रव शांत हो जाता है।

२ यदि कुछ भी न हो तो पहिले थोड़ा सा गरम पानी पिला दो फौरन दस्त बन्द हो जायेंगे। यदि इससे भी लाभ न हो तो दो या चार चावल भर अफीम खीला कर ऊपर से घी मिला दूध पिला दो, यदि गरमी की ऋतु हो तो दूध शीतल और जाड़े की ऋतु मे गरम पिलावो।

६ अफीम का वर्णन

खशखश के दाने की कार्तिक के महीने में खेती बो देते हैं, १० या १२ दिन मे पेड़ उग आते हैं। फूल निकलने तक खेतों की सिचाई करते है अगहन के महिने में डंडल वाला फूल निकलता है वह सफेद और लाल रग का होता है। फूल में असंख्य बीजो वाला फल होता है। उसे बोंडी या डोडी कहते हैं फल पकने से पहिले माघ और फाल्गुन मे सवेरे ही डोडी के ऊपर तीन नोक के औजार से चोंच जैसा छेद कर देते हैं, उन छेदों से धीरे २ रस वहता है। इस डोडी के बाहिर आते ही हवा लगने से जम जाता है, इसका रग गुलाबी या किसी कदर काला हो जाता है। किसान लोग इसको खुर्च लेते हैं और अफीम बना कर सरकार के हवाले कर देते है। संस्कृत में इसको खश-खश फल और चीर, पोस्त रस, आफूम कहते हैं। ग्रीक भाषा मे एक शब्द ओपियान है, उसका अर्थ नींद लाने वाला है। उसी ओपीयान, से ओपियम, अफियुन, आफू या अफीम शब्द बना है। योरुप वालों ने अफीम का सत निकाला है। जिसे वे मारफिया

कहते हैं और इसका इन्जेक्शन भी दिया जाता है। अफीम शोषक, ग्राह, कफ नाशक, वायु कारक, पित्त कारक, वीर्य वर्धक, आनन्द कारक, मादक वीर्य स्तम्भक, सन्निपात कृमि, पांडु, क्षय प्रमेह, श्वांस, खांशी प्लीहा तथा धातु क्षय रोग नाशक है।

अफीम का विष शान्ति प्रयोग

१ हींग को पानी में घोल कर पीलाने से अफीम का विष उतर जाता है।

२. प्याज का रस पीलाने या सूंघने से अफीम का विष दूर हो।

३. रीठे का जल पीलाने से अफीम का विष उतर जाता है।

४ घी में पीस कर चौकिया सुहागा पिलावे तो अफीम का विष दूर हो।

५. चौलाई या अरहर के पत्तों का रस पिलाने से अफीम का विष उतर जाता है।

अफीम शोधने की विधिः—अफीम को खरल में डाल कर ऊपर अदरख का रस इतना डालो कि जितने में वह डूब जाय फिर उसे घोटो, इस प्रकार २१ दिन अदरख का रस डाल २ कर घोटने से अफीम दवा के योग्य शुद्ध हो जाती है।

१० कुचले का वर्णन

कुचले को संस्कृत में कारस्कर, विषतन्दु, विषद्रुम, रम्यफल और काल कूटक और अङ्गरेजी में पाइजन नट कहते हैं। कुचला शीतल, कड़वा, वात कारक, नशा लाने वाला, हल्का, पाव की पीड़ा दूर करने वाला कफ पित्त और रुधिर विकार नाश करने वाला, कण्डु, कफ, बवासीर और व्रण को दूर करने वाला पांडु और कामला को हरने वाला तथा कोढ, वात रोग मल रोग और ज्वर नाशक है।

कुचले का शोधनः—कुचले के बीजों को घी में भून लो बस शुद्ध हो जावेंगे।

२. कुचले को कांजी के पानी में ६ घण्टे तक पकाओ फिर उन्हें घी मे भून लो यह शुद्धि और भी अच्छी है।

३ कुचले को शोधने की सब से अच्छी विधि यह है कि आध सेर मुलतानी मिट्टी को दो सेर पानी में घोल कर एक हांडी मे भर दो। फिर हाडी को आंच पर चढ़ा कर मंद २ आंच दो। जब तीन घण्टे तक आंच लग चुके तब कुचलों को निकाल कर गरम पानी से धोलो, फिर छुरी या चाकू से कुचले के ऊपर का छिलका उतार लो और दोनों परतों के बीच की पानी जैसी जीभी को निकाल कर फैंकदो, इसके बाद उनके महीन २ टुकड़े चावल जैसे कतरलो और छांया में सुखा कर बोतल मे भरदो। यह परमोत्तम कुचला है इसमें कड़वा पन भी नहीं रहता। इसके सेवन से ८० प्रकार के वात रोग नाश हो जाते है।

११ जल विष नाशक उपाय

१. सोंठ, राई और हरड़ इन तीनों को पीस छान कर रखलो। भोजन से पहले इस चूर्ण को खाने से अनेक देशों के जल रोग नाश हो जाते है।

२ सोंठ, यवाक्षार इन दोनों को पीस छान फक्की गरम पानी के साथ लेने से जल रोग शान्त होते हैं।

३. बकायन, यवाक्षार इन दोनों को कूट पीस गरम पानी के साथ लेने से अनेक देशों के जल से हुए विकार नाश होते हैं।

१२ धातु मारण शोधन प्रकरण

१. धातु परिभाषाः—स्वर्ण, रुपा (चांदी) तांबा, जस्त, (पीतल) शीशा, रांग और फौलाद ये सात धातु पर्वत से पैदा होती हैं।

२. उपधातु परिभाषा,—स्वर्ण माक्षिक (सोना मक्खी), नीला

थोथा, अभ्रक, काला सुरमा, गैनशिल, हरताल और खपरिया ये सात उपधातु कहलाती हैं।

नोटः—औषधियों में काम आने वाली ये सात धातु तथा सात उपधातु होती हैं इनका पहले भली भांति शोधन कर लिया जाता है और फिर भस्मादिक बना कर अनेक रोगों पर सेवन कराई जाती हैं। ये किस तरह शुद्ध की जाती हैं तथा उनका मारण किस प्रकार होता है सो सब विधि पाठकों के ज्ञानार्थ संक्षेप में लिखी जाती हैं। पाठक इनको सावधानता पूर्वक विधि सहित स्वानुभाव करके अपने रोगों पर काम में लेवें।

१. काला सुरमा गैरू आदि का शोधनः—काले सुरमे का चूर्ण करके जम्बीरी नीबू के रस में खरल करे और एक दिन धूप में रखे तो सुरमा शुद्ध हो जाता है। इसी प्रकार गैरू, सुहागा हीरा कसीस, फटकरी, कौड़ी, शंख तथा मुरदाशंख को भी शुद्ध कर सकते हो।

२. मैनशिल शोधनः—मैनशिल को दोला यन्त्र में डाल कर बकरी के मूत्र में सात दिन पकावे, फिर वाहिर निकाल खरल में डाल कर सात पुट बकरी के पित्त में देवे तो मैनशिल शुद्ध हो जाता है।

३. खपरिया शोधनः—खपरिया को दोला यन्त्र द्वारा मनुष्य के मूत्र में अथवा गौ मूत्र में ७ दिन पकावे तो खपरिया शुद्ध हो जाता है।

४. हरताल शुद्धिः—हरताल के छोटे २ वारीक टुकड़े कर उनको एक कपड़े की पोटली में वांध दोला यन्त्र द्वारा १ पहर पेठे के रस में और १ पहर तिल के तेल में पकावे तो हरताल शुद्ध हो जाती है।

५. अभ्रक हरतालादि से सत्व निकालने की विधिः—लाख छोटी मछली, बकरी का दूध, घूंघची भेड़ के वाल, हिरण का

मींग, तिलों की खल, सरसों, सहिजने के बीज, सैंधा नमक, जौ, कुटकी, घी और शहद ये १६ वस्तु हरतालादि जिस वस्तु का सत्व निकालना हो उस धातु का आठवां हिस्सा एक २ औषधि को लेकर सब के चूर्ण को एकत्र गोला सा बना कर मूषा में रख कर कोयले की आच में धोकनी से खूब धमावे तो हरताल तथा अभ्रक आदि उपधातुओं का सत्त्व निकल आता है। इस प्रकार से पाठक जिस किसी वस्तु का सत्त्व निकाल ना हो उसका सत्त्व निकाल सकते है।

६ पारा शोधन विधि —प्रथम स्वेदन कहते हैं। राई और लहसुन दोनों को एकत्र पीस के उसकी मूस बनावे, उसमें पारा डाल कर कपड़े मे पोटली बांध दोला यन्त्र द्वारा कांजी में ३ दिन पकावे। फिर उस पारे को निकाल खरल मे डाल कर घी ग्वार के रस मे एक दिन खरल करे। अब मर्दन संस्कार कहते हैं। फिर काजी मे इस पारे को धोकर उन औषधियों के रस से प्रथक कर के फिर खरल मे डाल के उस पारे का आधा सैंधा नमक मिला कर दोनों को नींबू के रस मे १ दिन खरल करे। अब मूर्च्छन सस्कार कहते है। फिर राई, लहसुन और नौसादर ये तीनों औषधि पारे के समान लेकर फिर उसमे पारे को मिला के धान तुषों के काढ़े मे सबको खरल करे। अब पातन सस्कार कहते है;—जब शुष्क हो जावे तब उसकी गोल गोल टिकिया सी बना लेवे, उनके चारो तरफ हींग का लेप करके उन टिकिओं को एक घड़े मे रखे, उसमे नमक डाल के घड़े के मुख पर दूसरा घड़ा उलटा जोड़ कर कपड़ मिट्टी से दृढ़ करके धूप मे सुखावे फिर इसको चूल्हे पर चढ़ा के निचे अग्नि जलावे और ऊपर के घड़े पर गीला कपड़े का पोचा फेरता जावे कि जिससे ऊपर का घड़ा शीतल रहे और जमा हुआ पारा निचे न गिरे अथवा उस पर शीतल जल भर देवे फिर उस निचे के घड़े की तीन प्रहर

तेज अग्नि देवे, जब शीतल हो जावे तब घड़े को अलग २ कर के हल्के हाथ से उस ऊपर के लगे हुए पारे को निकाल लेवे। यह पारा परम शुद्ध और विकार रहित होता है इसको इस प्रकार शुद्ध कर कार्य में लाना चाहिए।

७. गंधक शोधन.–(लोहे की कड़छी में घी डाल के मन्द २ अग्नि से तपाये उस घी के बराबर आंवला सार गंधक का बारीक चूर्ण करके उस घी में डाल देवे जब गधक घी में तप कर रस रूप हो जावे तब एक दूध के पात्र पर बारीक कपड़ा बांध के उसमें उस गंधक को डाले जब शीतल हो जावे तब उस गधक को निकाल लेवे। यह शुद्ध गधक सब कार्यों में लेना चाहिए।

८. शिगरफ से पारा निकालने की विधिः नीबू के रस में अथवा नीम के पत्तों के रस में शिंगरफ को १ प्रहर खरल कर डमरु यन्त्र में भर नीचे अग्नि जलावे, उसमें से पारा उड़ कर ऊपर की हांडी में जाकर जम जावेगा। उसे धो कर पारा निकाल ले, यह शुद्ध जानना। इसको सर्व कार्यों में बर्तना चाहिए।

९. शिंगरफ का शोधन.— शिगरफ को खरल में डाल कर भेड़ के दूध की सात पुट देवे तथा नींबू के रस की सात पुट देवे तो शिंगरफ शुद्ध होती है।

१०. क्षार बनाने की विधिः— जिन वृक्षो से क्षार निकलता है उन वृक्षों की लकड़ व पञ्चाङ्ग को ला कर और सुखा कर जला डाले, जब राख हो जावे तब इस राख को मिट्टी के पात्र में रख और राख से चौगुना जल डाल के उस राख को पानी मे मिला कर धर देवे। इस प्रकार १ रात्रि भर धरी रहने दे। प्रात. काल उस घड़े में से ऊपर २ का मितरा हुआ जल लोहे की कड़ाही में निकाल लेवे; फिर उस कड़ाही को अग्नि पर चढा कर नीचे अग्नि जला उस पानी को जला देवे। इस प्रकार करने से पानी जल

जावेगा और वस कड़ाही में चारों तरफ सफेद २ खार चूर्ण के समान (ग.ा हुआ रह जायगा, तव इस क्षार को निकाल लेवे, इस क्षार को प्रति सार्य कहते हैं। इसको श्वासादिकों पर देवे तथा काढ़े के समान पतला जो क्षार रहता है, उसको पेय कहते है, इस क्षार को गुल्मादि रोगों पर देवे। इस प्रकार पतला और चूर्ण के समान ऐसे दो प्रकार का क्षार होता है।

११. मंडुर वनाने की विधि.—वहेड़े की लकड़ियों के कोयले करके उसमें पुराने लोहे के कीट उसमें डालकर धोंके, जव लाल हो जावे तव उस कीट को गौमुत्र में वुझा देवे, फिर उस कीट का वारीक चूर्ण कर उसका दूना त्रिफले का काढ़ा हांडी में भर उस मे इस कीट के चूर्ण को डाल के अच्छी रीति से उस हांडि के मुख को ढक के मुख पर कपड़ मिट्टी कर देवे। पश्चात उसको आरने उपलों की गजपुट में रख कर फूंक देवे जव शीतल हो जावे तव उस हांडी को वाहिर निकाल उस कीट का जो शुद्ध मंडूर वनके तैयार होवे उसको निकाल लेवे तो परमोत्तम मंडुर वने तव इसको सव रोगों मे मिलावे।

१२. रोप्य माक्षित का शोधन मारण—रूपा माखों का चूर्ण कर ककोड़ा; मेढ़ा, सींगि और जमीरी इन तीनों के रस में एक २ दिन खरल कर धूप मे धरने से रोप्य माक्षिक शुद्ध होतो है। इसका मारण स्वर्ण माक्षिक के ममान करना चाहिये।

१३. स्वर्ण माक्षिक का शोधन मारण—स्वर्ण माक्षिक तीन भाग. सैंधा नमक १ भाग, दोनों का चूर्ण कर दोनों को लोहे की कड़ाही में डाल चूल्हे पर चढा नीचे से अग्नि जलावे, फिर इस मे विजौरे का रस अथवा जमीरी का रस डाल के लोहे की कड़छी से घोटे, जव कड़ाही लाल हो जावे तव स्वर्ण माक्षिक की भस्म को उसमें से निकाल लेवे। इस प्रकार शोधन करके उसको कुलथी

के काढ़े, तिल के तेल में छाछ, गौमुत्र में खरल कर शराब संपुट में रख कपड़ मिट्टी कर आरने उपलों की अग्नि में फूंक देवे तो स्वर्ण माक्षिक भस्म तैयार हो जाती है।

१४. नीला थोथा का शोधन—बिल्ली और कबूतर की विष्टा नीला थोथा के समान तथा नीला थोथा का दशवां हिस्सा सुहागा लेकर सबको एकत्र करके खरल करे और मिट्टी के शराब सम्पुट में भर कपड़ मिट्टी कर आरने उपलों की हल्की अग्नि देवे। फिर शहद में खरल करके अग्नि देवे तो नीला थोथा शुद्ध हो जाता है।

१५ अभ्रक का शोधन मारण—काली अभ्रक अर्थात वज्राभ्रक को कोयलों में डाल के धोंकनी से अथवा फूंकनी से फूंक मार कर तपावे, जब लाल हो जावे तब निकाल के दूध में बुझा दे फिर उसके पृथक २ पत्र करके चौलाई का रस और नींबू का रस दोनों को एकत्र करके उसमें उन पत्रों को आठ पहर पर्य्यन्त भिगो देवे तो अभ्रक शुद्ध हो जाता है। फिर उस अभ्रक को उस रस में से निकाल के उसका धान्याभ्रक कर उसको आक के दूध में एक पहर पर्य्यन्त खरल कर गोल २ चक्र के आकार की टिकिया बनावे, उनके चारों ओर आक के पत्ते लपेट कर मिट्टी के शराब सम्पुट में रख कर उस पर कपड़ मिट्टी करके धूप में सुखावे फिर, उसको आरने उपलों के गजपुट में रख कर फूंक देवे। इस प्रकार आक के दूध में एक दिन खरल कर और रात्रि में पुट देवे ऐसे सात पुट देवे, फिर वड़ की जटा के काढ़े में उस अभ्रक को एक २ दिन खरल करे और अग्नि देवे। इस प्रकार तीन गजपुट देवे तो अभ्रक की उत्तम भस्म हो जाती है। इस अभ्रक के सेवन से सर्व रोग दूर होते हैं, बुढापा दूर हो, अकाल का निवारण हो, सफेद बाल काले हों तथा इसको जैसे २ अनुमान के साथ देवे वैसा २ गुण करती है।

१६. मूंग भस्म—मूंगे की जड़ १ पाव, घी कुमार (गुवार

पाठ) का गूदा १ सेर। दोनों को मिला कर एक हांडी में रखले और हांडी का मुंह ढक्कन से बन्द करके मिट्टी से छाप दे, अब ज़मीन में एक बड़ा चोकोर गड्ढा खोद कर उसी में हांडी को रखदे गड्ढे को उपलों और कंड़ों से भर कर उसमें आग लगादे। ४८ घन्टे बाद हांडी को बाहिर निकाल कर खोल ले। मूंगे की जड़ उसमें सफेद जली हुई मिलेगी और हाथ में मींजने पर चूर्ण हो जायगी बस इसे निकाल कर पीस ले। यही मूंगा भस्म है और वीर्य दोष में फायदा करती है।

१७. चांदी की भस्म—चांदी का वर्क १ तोला वर्किया हरताल (शुद्ध) १ तोला। हरताल को पानी में घोट कर दो टिकिया सी बनाले और उसके बीच में चांदी का वर्क रख कर शराब सम्पुट मे बन्द करले और चारों ओर से उपलों की आग लगादें मीटीले रंग की भस्म एक पुट में तैय्यार हो जायगी। यही चांदी की भस्म है। इसको शुक्र (वीर्य) रोग में खाया जाता है।

१८. चांदी की भस्म (द्वितिय)—एक भाग हरताल ले के नीबू के रस में एक पहर खरल करे, फिर हरताल से तीन गुणा रूपे के पत्र लेवे और उन पर उस हरताल के कल्क का लेप करे फिर उन को एक के ऊपर एक रख कर मिट्टी के शराव सम्पुट में रख कर कपड़ मिट्टी करके सुखा लेवे फिर ३० आरना उपलों के बीच मे उस शराव सम्पुट को रख कर फूंक देवे। इस प्रकार १४ अग्नि पुट देवे तो चांदी की उत्तम भस्म बनती है।

१६. वंग भस्म.—शोधी हुई वंग १ भाग, शुद्ध पारा एक भाग। वंग को पहले गला कर पारे के साथ खरल में डाल कर घोट लेवे और पीठी सी बना ले फिर उससे कलमी शोरा मिला कर बारीक चूर्ण करले। अन्त मे उसे एक बड़े कूंजे में भर कर कुक्कट पुट में फूंकले। सफेद रंग की उत्तम भस्म तैय्यार हो

जावेगी, किन्तु इस भस्म में खार मिला रहता है उसे पांच सात बार पानी से धो कर निकाल देना चाहिये।

२०. शलाजीत शोधनः—ग्रीष्म ऋतु में गर्मी अधिक होती है इसी से पर्वत में से जो बड़ी २ शिलायें होती हैं वे गर्मी से अत्यन्त तप जाती हैं, तब उनमें रस गल कर जम जाता है उस को शलाजीत कहते हैं। उसको गौ के दूध में त्रिफले के काढ़े में तथा भांगरा के रस में प्रथक प्रथक एक २ दिन खरल करे और धूप में सुखा लेवे तो शलाजीत शुद्ध हो जाता है।

१२ विविध रोगोपायाधिकारः

१. लाल चन्दन, मंजीठ, लौंध, कूट, फूल प्रियंगु, बड़ के अंकुर और मसूर ये सात चीजें समान भाग ले पानी में पीस लेप करे तो मुख की छांई रोग दूर होवे।

२. बिजौरा की जड़ घी, मैनशिल और गौ के गोबर का रस ये चारों चीजें एकत्र कर लेप करने से मुख की कान्ति वढ़े तथा छांई रोग दूर होवे।

३. लौंध धनिया और बच समान भाग लेकर जल में पीस लेप करे अथवा गोरोचन और काली मिरच इन दोनों को जल में पीस कर लेप करे अथवा सफेद सरसों बच, लौंध, सैंधा नमक इन चारों को जल में पीस कर लेप करे तो मुख की छांई आदि रोग नाश होवे।

४. आक के दूध में हल्दी पीस कर लेप करे तो वहुत दिन की मुंह की काली छांई दूर होवे।

५. बड़ के पीले पत्ते, चमेली, लाल चन्दन, कूट, दारु, हल्दी, लौंध इन सब का चूर्ण कर पानी से पीस मुख पर लेप करे तो मुख पर जवानी की हुई फुन्शियां दूर होंवे।

६. गोखरू तिल के फूल इन दोनों को समान भाग ले चूर्ण

को शहद तथा घी दोनों में मिला कर मस्तक पर लेप करे तो केश वृद्धि होवे।

७ हाथी के दात को जला कर उसकी राख कर लेवे यह राख और रसौत इन दोनों को बकरी के दूध में पीस जिस स्थान के बाल उड़ गये हों उस जगह लेप करे तो बाल पैदा हो। यह लेप हाथो की हथेली पर मलनेसे हथेली पर भी बाल उग आते हैं।

८. बकरी आदि चौपाये जीवों की त्वचा, बाल, नख, सींग, और हाड़ इनकी भस्म कर तिल के तेल में मिला कर लेप करे तो यह लेप नवीन केश आने में उत्तम है।

९. बाल काले करने का उपाय.—इन्द्रायण के बीजों का तेल पाताल यन्त्र करके निकाल ले। फिर इसको सफेद बालों पर नित्य लेप करे तो बाल अत्यन्त काले हो जावें।

१० आंवले तीन, हरड़ दो, बहेड़ा एक, आम की गुठली के भीतर की मींगी पाच तथा लोह चूर्ण १ कर्ष। इन सब औष-धियों को लोहे की कड़ाही मे बारीक पीस सब रात्रि धरी रहने दो। दूसरे दिन लेप करे तो जिसके थोड़ी अवस्था में बाल सफेद हो गये हो वे सब काले हो जाते हैं।

११. त्रिफला, नीम के पत्ते तथा लोहे का चूर्ण एवं भांगरा इन सबको समान भाग ले बकरी के मूत्र में पीस कर लेप करे तो यह लेप सफेद बालो को काला करने में परमोत्तम है।

१२. त्रिफला, लोह का चूर्ण, अनार की छाल और कमल का कन्द यह सब चीजें पांच २ पल लेवे। सब को बारीक पीस चूर्ण करे फिर छ. प्रस्थ भांगरे का रस निकाल कर एक लोहे की कड़ाही मे भर कर और पूर्वोक्त त्रिफलादि चूर्ण डाल कर महीने पर्य्यन्त जमीन में गाढ़ देवे। पश्चात बाहर निकाल कर इसमे बकरी का दूध मिला मस्तक मे रात्रि के समय लेप कर उस पर अरंड के पत्ते बांध सो जावे। प्रात. काल उठ के स्नान करे, इस

प्रकार तीन लेप करे तो जिस मनुष्य के युवाऽवस्था में बाल सफेद हो गये हों वे सब काले हो जाते हैं।

१३. केश नाशक प्रयोगः—शंख का चूर्ण दो भाग, हरताल, एक भाग, मैनशिल आधा भाग, सज्जी खार एक भाग। इन सब को जल में पीस कर जिस जगह के बाल निर्मूल करने हों उस जगह उस्तरे से बालों को दूर करके उन औषधियों का लेप कर दे। इस प्रकार युक्ति से सात लेप करे तो बालों के आने का स्थान निर्मूल होवे, अर्थात् फिर बाल नहीं उग सकते।

१४. हरताल दो शाण, शंख का चूर्ण १ शाण, पलाश का खार २ शाण। इन सब औषधियों को केला के डंडा के रस में अथवा आक के पत्तों के रस में खरल कर केश दूर करने की जगह सात बार लेप करे तो सब बाल निर्मूल हो नाश हो जाते हैं।

१५ पलाश के फूल, गूलर के फूल इन दोनों का चूर्ण कर शहत में मिला योनि में लेप करे तो शिथिल हुई भी योनि इस लेप से कठोर अर्थात् तंग हो जावे।

१६. आम की मज्जा तथा कपूर इन दोनों का चूर्ण कर तिल के तेल में मिला के तथा उसमें शहद मिला कर योनि में लेप करे तो वृद्ध स्त्री की योनि सिकुड़ कर तंग हो जाती है।

१७. काली मिरच, सैंधा नमक पीपल, तगर, कटेरी के फल, औंगा के बीज, काले तिल, कूट, उड़द, जौ, सरसों असगंध ये १२ चीजें समान भाग ले कर चूर्ण कर शहत में मिला लिंग पर निरन्तर लेप करे तो लिंग मोटा हो जाता है। इसी प्रकार स्त्रियां स्तन, भुजा तथा कर्ण पर लेप करे तो इनकी वृद्धि होती है।

१८. इन्द्रायण के पत्तों का रस निकाल कर उस रस में पारा मिला कर लाल कनेर की लकड़ी से उसको खरल करे। इस

प्रकार पांच सात बार घोट कर लिंग पर लेप करे, पश्चात शिशन और योनि का संयोग होते ही पुरुषों की अपेक्षा स्त्री का वीर्य तत्काल पतन हो जाता है।

१६. मजीठ, मोरेठी कूठ, त्रिफला, शक्कर, खरैटी, मेदा क्षीर काकोली, असगंव, अजमोद, हल्दी, दारु हल्दी; हींग, कुटकी, नीलौफर, कमल, मुनक्का तथा दोनों चन्दन प्रत्येक एक २ तोला लेवे और कल्क छोड़ कर १२८ तोला घी, शतावरी का रस २५८ तोला और दूध २५८ तोला मिला कर पकाना चाहिये इस घृत को पीने से पुरुष स्त्री गमन में अधिक और स्त्री इसको पीकर मेधावी बालक उत्पन्न करती है। जिसके गर्भ नहीं रहता अथवा जो मरा अथवा अल्पायु बालक उत्पन्न करती है अथवा जिसके कन्या ही उत्पन्न होती है वे सब ही सुन्दर बालक पैदा करती हैं। योनि दोष, रजोदोष तथा परिश्राव मे यह बहुत ही हितकर है। यह सतान बढ़ाता, आयु बढ़ाता तथा समस्त ग्रह दोष नाश करता है, इसको अश्वनी कुमार भगवान ने फल घ्रत कहा है।

२०. दोनो करसला, त्रिफला, गुच, पुनर्नवा सोना पाठा, हल्दी, दारु हल्दी, रासन, मेदा व शतावरी का कल्क कर एक प्रस्थ घी और चौगुना दूध मिला कर पकाना चाहिये। यह घृत योनि शूल से पीड़ित तथा शिथिल योनि वाली स्त्री को पिलाना चाहिये इससे योनि ठीक गर्भ धारण करने योग्य हो जाती है। यह फल घृत योनि दोष नष्ट करने के लिये श्रेष्ठ है।

२१. नील कमल, नाग केसर, शहद और शक्कर मिला कर लेप करने से अधिक समय तक मैथुन करने की शक्ति प्राप्त होती है और लिंग दृढ़ होता है। यह लेप नाभि से ऊपर करना चाहिये।

२२. नीबू के बीजों में भांगरे के रस का फिर उनका यंत्र द्वारा तेल निकाल लेवे। इस तेल की नस्य लेवे और पथ्य में

गौ का दूध और भात देवे तो जिस मनुष्य के बाल असमय में सफेद हो गये हों वे भौंरे के समान काले हो जाते हैं।

ईङ्गलिस पेटेन्ट मेडीशन्स

बच्चों की दवा

१. बालामृतः—हाई पोफोस्फेट आफ सोडा १५ रत्ती, हाई पोफोस्फेट आफ लाइम १५ रत्ती। चीनी का शाफ शरबत ३० तोला वायविडंग का अर्क २ तोला, सोंठ का अर्क २ तोला। बनाने की विधिः—सब को मिला कर तीन चार दिन रखो और फिर शीशी में भर दो। इसके सेवन से बच्चों के हरे पीले दस्त दूध न पचना, वमन होना तथा फेफड़े आदि के समस्त रोग दूर होते हैं।

२. ग्राइप वाटर(Gripe water) पेट के दर्द की दवाः—पोटेशियम बाई कार्बोनेट (Potasseum bicarbonate) १ ड्राम, सादी चासनी २ औंस, एक्वा कै रुई (Aqua carui) २ औंस, एक्वा अनेथी (Aqua anethi) ८ औंस बनाने की विधिः - सब को मिला लो। एक चम्मच दवा को दो चम्मच पानी के साथ मिला कर पिला दे। इससे आंतों की ऐठन या दर्द अच्छा होता है।

३ इन्फैन्टस ग्राइप वाटरः—आइल आफ अनेथी (Oil of anethi) २० बूंद आइल आफ केरुइ (Oil of carui) २० बूंद, आइल आफ अनेसी (Oil of Anisi) २० बूंद पोटेशियम ब्रोमाइड (Potassiam Bromide) १॥ औंस, पीटेशियम बाइ कार्वोनेट (Potassium bi Carbonate) ६ ड्राम, सादी चासनी २० औंस, भपके का पानी (Distilled water) २० औंस। विधि—सवको मिला कर रखलो और आवा

आधा चम्मच बच्चों को पिलाओ। इससे बच्चों की आंत शूल को लाभ होता है।

१४ ज्वर रोग पर पेटेन्ट मेडीशन्स

१. एग्यु मिक्श्चर (Ague Mixture) :—क्विनीन सल्फेट १ ड्राम, सल्फेट आफ आयरन (Sulphate of Iron) १ ड्राम, सल्फ्यूरिक एसिड डिल (Sulphuric acid dil) २ ड्राम टारटरिक एसिड ½ ड्राम, मेग्नेशिया साल्ट १ औंस, टिक्चर नक्स वामिका १० बूंद, लिकर आरसेनिक ५ बूंद, एसिड कार्बोलिक ५ बूंद, भपके का पानी ½ पांइट । विधि.—सब को मिला कर शीशी में भर लो सब प्रकार के मलेरिया ज्वर को लाभ करती है।

६. एग्यु किलर (Ague killer).—लायकर एमोनिया एसिड २ ड्राम, एकोनाइट १० मिनिम, स्प्रिट ईथर १ ड्राम, टिचर क्लोरो फार्म २० मिनिम, टिचर नक्स वामिका १५ मिनिम, डिस्टिल्ड वाटर ३ औंस, । सब को मिला कर शीशी मे भर लो, मात्रा ½ औंस पानी के साथ दिन में ३ चार बार लेवे। रंग के लिये कोच लाइन की कुछ बूंद डाल दो। इससे जूड़ी (ज्वर इन्फ्लुन्जा और मलेरिया नाश होती है।

३ एग्युरिन (Aguerine) :—टिचर एकोनाइट ८ मिनिम, मग्नेशिया सल्फ ४ ड्राम, स्प्रिट नाइट्रोसी २ ड्राम, टिंचर क्लोरोफार्म ४० मिनिम, लाइकर एमोनिया एसिड ४ ड्राम, लाइकर आरसेनिक २० मिनिम, डिस्टिल्ड वाटर १ औंस। विधिः—प्रथम डिस्टिल्ड वाटर में मग्नेशिया घोल कर मिला दो, फिर सब सामान मिला दो और शीशी में भर बाकी शीशी का हिस्सा डिस्टिल्ड वाटर से पूर्ण करो। मात्रा दो या तीन चम्मच दवा पानी के साथ पीवे। बच्चों के लिये मात्रा अवस्थानुसार देनी चाहिये।

४. फीवर मिक्श्चर (Fever Mixture) कुनेन सल्फ ४० ग्रेन, एसिड सल्फ्यूरिक डिल ४० मिनिम. लीकर आरसेनिकल्स २० मिनिम, टिंचर कार्डमको १ ड्राम, डिस्टिल्ड वाटर १ औंस, बनाने की विधि:- प्रथम कुनैन को सल्फ्यूरिक एसिड डिल के साथ चीनी की खरल में डालकर रगड़े, तत्पश्चात बाकी दवाइयां मिला दे और एक शीशी में तैयार करके रख छोड़े। मात्रा ५ से १० बूंद तक एक औंस पानी के साथ देवे, कुछ खाने पर इस दवा को पिलावे। सब प्रकार के ज्वरों को नाश करती है।

५ मलेरिया मिक्श्चर:—लाइकर एमोनिया एसीटेसी ५ ड्राम, टिंचर एकोनाइट ८ मिनिम, स्प्रिट ईथर नाईट्रोसी २ ड्राम, टिंचर क्लोरो फार्म ४० मिनिम, डिस्टिल्ड वाटर ८ औंस। सबको मिला कर रख ले। मात्रा १ औंस दिन में दो बार देवे। इससे सब प्रकार के ज्वर नाश होते हैं।

६ एन्टी मलेरिया क्योर.—टिंचर चिरायता १ औंस, कुनैन सल्फ ५ ग्रेन, नक्सवामिका एक्ट्रेक्ट २ ग्रेन, लायकर आरसेनिक १५ बूंद, सबको मिलाकर शीशी में भर लो यह २४ घन्टे खुराक दवा है। एक खुराख दवा में आधी छटांक पानी मिला कर सेवन करे।

७. फीवर सोल्यूशन—टिचर एकोनाइट ३०मिनिम, एन्टी फेब्रीन १ ड्राम, स्प्रिट रेक्टफाइड १ ड्राम, डिस्टिल्ड वाटर ६ ड्राम,। प्रथम फेब्रीन और स्प्रिट आपस में मिलावे जब गल जाय तब पानी मिला कर अन्य चीजें भी मिला दे। मात्रा ½ ड्राम से १ ड्राम तक। दवा पीने के १ घन्टा बाद दूध पीना चाहिये।

८. फीवर टेबलेट—क्यूनाइन सल्फेट ½ ड्राम, ऐसाटानालीड ½ ड्राम, पाउडर चिरेटा ४ ड्राम, नक्स वामिका पाउडर ½ ड्राम,। सब को एकत्र करके मशीन द्वारा १०० टिकिया तैयार

करलो। इसे खाकर खूब दूध सेवन करना चाहिये। सब प्रकार के ज्वर नाश हो जाते हैं।

१५ हैजे की दवा :—

१. कालरा मिक्स्चर —लेमन जूस ५ ड्राम, प्याज का जूस ५ ड्राम, आइल मेंथा पिपरेटा ४ ड्राम, केम्फर स्प्रिट २ ड्राम, टिंचर कैपसिकम २ ड्राम, टिंचर ओपियम १ ड्राम। सब को मिला कर एकत्र करो, मात्रा २ बूंद से २५ बूंद तक। इस से अतिसार, हैजा, शूल, संग्रहणी, वायुशूल या अनेकों प्रकार के उपसर्ग ऐठनादि अच्छे होते हैं।

२ कालरा सोल्यूशन —टिंचर केपसीकम ६ ड्राम, टिंचर क्लोरो फार्म ४० मिनिम। सबको मिला लो। मात्रा ४ बूंद से १२ बून्द तक ले सकते हो।

३. एन्टी कालरा पिल्स :—कैपसीकम १ ग्रेन, पीपर निगरम १ ग्रेन, असी फाटीडा १ ग्रेन, केम्फर १ ग्रेन,। सबको मिला कर १ गोली बनावे। इस मात्रा से जितनी चाहो गोलियां बना सकते हो। यह कालरा (हैजा) के लिये अचूक दवा है।

नेत्र की पेटेण्ट मेडीशन्स

१. आंख धोने का अर्क (Eye Lotion):—कोकेन हाइड्रो क्लोराइड (Cocain Hydrocloride) ½ ग्रेन, बोरिक एसिड (Boric Acid) ४ ग्रेन, भपके का पानी (Distilled water) १ औंस। पानी को जरा गरम करके सबको घोल लेवे।

१६ खांशी की पेटेन्ट मेडीशन्स

१. खांशी की मीठी टिकिया (Cough Lozenges):—बेंजोइक एसिड (Benzoic Acid) १ ड्राम, ओरिस पाउडर (Orris powder) २ ड्राम, पिसी हुई अरबी गोंद (Gum-

Arabic) १ औंस। स्टार्च (Starch) २ औंस, साफ चीनी १६ औंस, पानी यथाऽवश्यक। सबको मिला कर १५, १५ ग्रेन की टिकिया बनालें। खांसी के समय मुंह में टिकिया रख कर रस चूसने से लाभ होता है।

२. खांसी की दवा (Cough cure):–इपीकाक्युयना दो ग्रेन की मात्रा में मशीन से गोली बनालो। यह खांसी के लिये उपयोगी है।

३. कफ मिक्श्चर (Cough Mixture):—कार्गोनेट आफ एमोनिया ५ ग्रेन, टिंचर सिनेमा ३० मिनिम, इनफ्यूजन सिनेमा ½ औंस, पानी १ औंस,। सबको मिला कर कुछ बून्द पानी के साथ लेना चाहिए।

४. कफ सोल्यूशन :—सरीप लिकरिस रूट २ औंस, वाइन इपीकार्क ½ ड्राम, स्प्रिट इथर नाइट्रेट ८० मिनिम, टिंचर क्लोरोफार्म ४० मिनिम। सबको मिलाकर एकत्रित करो। यह १६ खुराक दवा है, तीन २ घंटा बाद देना चाहिए। यह खांसी को हरण करती है।

५. कफ पिल्स :—फासफोर्स १ ग्रेन, हाइड्रोक्लोर मारफीन २ ग्रेन; वेलेरियेना आफ जिंक २५ ग्रेन। सबको मिलाकर २५ टिकिया बनालो। ये वातज खांसी को हरण करती है।

६. कूकर खांसी :—कार्बालिक एसिड़ ३० बून्द, अल्कोहल ३० बून्द, टिंचर आयोडीन रेक्टीफाइड से बना २० बून्द, टिंचर बेलाडोना ६० बून्द, एकवा मैथा पिपरेटा २ औंस। सब को मिला कर शीशी में भर लो। यह ३२ खुराक दवा है, रोग की अधिकता में चार चार घंटे बाद मात्रा पिलाओ रोग ज्यों ज्यों कमती होता जावे मात्रा कम करते जाओ।

१७. दांत रोग पर पेटेंट मेडिसन्स

१. दांत दर्द की दवा (Toothache water):—क्लोरेड

हाइड्रट २॥ औंस, कपूर १ औंस। दोनों को घोट ले जब पानी सा हो जावे तब शीशी मे भर ले। दांत में दर्द की जगह पर रुई से कुछ बूंदे लेकर लगावे।

२. टीथिंग सीरप (teething Syrup): बच्चों के दांत निकालने की दवा -टिंचर एरशिया फ्लोर (Tincture aurantia flor) १ औंस टिंचर कार्डसम कम्पाउंड Tincture Cardmum Co) ½ औंस गिलसरीन १॥ औंस, सादी चासनी ७ औंस। विधि सब को मिला लो, अवस्थानुसार ½ ड्राम से १ ड्राम तक।

३. दन्त शूल की दवा --जुद नामक अङ्गरेजी दवा को अल्कोहल १-५ हिसाब से मिला लो। यह दांत में रुई से लगा देने से दर्द बन्द होता है।

१८ कर्ण रोग पर पेटेन्ट मेडीशंस

१. इयर ड्राप्स (Ear drops) :—बोरिक एसीड Boric-acid) १ औंस, टिक्चर ओपियम (Tincture opium) १ औंस, गिलसरीन ७ औंस। सब को मिला कर घोटले और शीशी मे भर कर रख दे इससे कान का दर्द शान्त होता है।

२. कर्ण शूल की दवा.—लिनिमेंट केम्पर ५ ड्राम आइल मेथा पिपरेटा १० बूंद बोरिक एसीड १ ड्राम, टिंचर आयोडीन १ ड्राम, सबको एकत्र करलो और दो या चार बूंद कान में डालो

बवासीर रोग पर पेटेन्ट मेडीशंस

१. बवासीर चूर्ण (Piles powder):—शोधी हुई गंधक (Precipitated Sulphur) २ औंस, कार्बोनेट आफ मैग्नेशिया (Carbonate of Magnesia) १॥ औंस, पोटाश बाइटारटरेट (Potash bitartrate) २ औंस पिसा हुआ सिनामन कम्पाउंड (Pulverised cinamon) ½ पौंड। सब को अच्छी तरह मिला कर रखे। रोज सवेरे १ ड्राम चूर्ण दूध के साथ लेवे।

२. बवासीर गोली (Piles pills):—निबौली की गिरी १ छटांक, रसौत शुद्ध १ छटांक, बंसलोचन १ छटांक, शहत १ छटांक गुलाब फूल १ छटांक, गूगल शुद्ध एक छटांक, । सबको बारीक पीस कर गूगल मिला कर खूब कूटे, फिर छोटे बेर के बराबर गोलियां बनाले । प्रातः सायं एक २ गोली बकरी के कच्चे दूध से खावे तो खूनी और बादी दोनों प्रकार की बवासीर नष्ट होवे ।

३. बवासीर का मलहम —लेड एसिटेड (Lead acetate) २ भाग, टेनिक एसिड (Tennic Acid) १ भाग, बेलडोना (Belledona) $\frac{1}{5}$ भाग वैसलीन मलहम बनाने लायक सबको मिला कर रात्री में बवासीर के स्थान पर उङ्गली से लगाना चाहिये ।

२० दाद खुजली पर पेटेन्ट मेडीशन्स

१. एकजेमा का मरहम [Eczema ointment) फ्लावर्स आफ सल्फर ३६ भाग, जिंक आक्साइड या सफेदा (Zinc-oxide) ३. सात भाग ग्लिसरीन १३॥ भाग, लार्ड चर्बी ३६.८ भाग, पानी ४ भाग नींबू का इत्र (सुगन्ध के लिये) जरा सा मिला कर रखलो ।

२ खुजली का मलहम (Itch ointment) —वैसलीन १२॥ औंस, फ्लावर्स आफ सल्फर (Flowers of Sulpher) १ औंस बाई कार्बोनेट आफ पोटेशियम १ औंस कड़वे बादाम का तेल (oil of bitter almonds) १ ड्राम । वैसलीन को धीमी आंच पर पिघला कर सब चीजे एक २ करके मिलावे ।

३. पैर के गोखरू (Corn cure) की दवा—सैलिसाइलिक एसिड (Salicylic acid) १५ भाग, लेक्टिक एसिड (Lactic Acid) ३ भाग, एक्स्ट्रेक्ट आफ कैनाबिस (Extract of

canabis) २ भाग, एसीटोन (Acetone) ५ भाग, फ्लेक्सिबिल कोलोडियन) Flexible collodion) ७५ भाग। विधि:—सैलिसाइलिक एसिड को कोलोडियन में घुला कर बाकी सब चीजें भी उसके साथ मिला दो।

४. दाद का मलहम.—एसिड क्राइ सोफानिक १ औंस लेकर वैसलीन २ पौंड में मिला देना चाहिये या १ सेर तिली के तेल में १ पाव नींबू का रस डाल कर जला देना चाहिये, जब पक जाय तब उसमें १ सेर मोम डाल दो, गल जाने पर उतार कर छान लो और इसमें भी क्राइ सोफानिक को डाल कर खरल करो, वही काम देता है।

५. दद्रु गज केशरी—गोआ पाउडर ½ औंस, आंवलासार गंधक २ ड्राम, सुहागा ३ ड्राम। सबको प्रथक २ पीस कर एकत्र करलो और अच्छी तरह खरल करके ३ शीशियां भरलो यदि ज्यादा बनाना हो तो इसी मात्रा से बना सकते हो।

६. खुजली की दवा:—गन्धक ४ भाग, फिटकरी चार भाग बोरिक एसिड २ भाग। तीनों दवाओं को परस्पर पीस कर पुड़िया बनालो। लगाने के लिए शत धौत घृत १ औंस लेकर उसमें १ पुड़ी दवा मिलादो और खुजली वाले स्थान पर मलदो।

२१ शक्ति वर्धक (Tonic) पेटेन्ट मेडीसिन्स

१. शक्ति वर्धक गोलियां (Tonic pills)—कुनाइन सल्फ १ ड्राम, फेरिडेक्टिस ½ ड्राम, एक्स्ट्रेक्टस जेनसन जितना मिलाना हो मिलादो। सबको एकत्र करके ५ रत्ती प्रमाण की गोलियां बनालो मात्रा:—१ गोली गरम दूध के साथ लेवो।

२. शक्ति वर्धक गोली —कुनाइन सल्फ १ ग्रेन, सल्फेट आफ आयर्नस ½ ग्रेन, आइल क्लोज ¼ मिनिम। सबको एकत्र करके

गोली बनावे। यह एक गोली की मात्रा है इसके अनुसार चाहे जितनी गोलियां बना सकते हो।

३. डिनर पिल्सः—कुनेन १ ड्राम, पाडो फिलीन ५ ग्रेन शुगर आफ मिल्क ५ ग्रेन, एक्सट्रेट बेलाडोना १० ग्रेन, एक्स-ट्रेक्ट आफ एलोज ६० ग्रेन। सबको एकत्रित करके ६० गोलियां बनावे। एक २ गोली सेवन करने से दस्त साफ होता है और बुखार, यकृत, प्लीहा, उदर रोग तथा सिपलिश आदि रोग नाश होते हैं। और ताकतवर भी है।

४. टानिक पिल्सः—फोस्फेट आफ आयर्न ५० ग्रेन, फोस्फेट आफ कुनाइन ६० ग्रेन, स्ट्रीकनाइन १॥ ग्रेन, एसिड आरसेनिक १ ग्रेन, शुगर मिल्क १ ड्राम। सबको एकत्र कर ६० गोली बनावे और १ गोली खाकर ऊपर से दूध पीवे और पौष्टिक अहार करे।

५. टानिक सोल्यूशनः—सीरप आयोडाइड पांच ड्राम, काड लिवर आयल २४ ड्राम, एक्स्ट्रेक्ट आफ केलम्ब $\frac{1}{2}$ ड्राम, फास-फोरिक एसिड डिल १ ड्राम। सबको मिला कर १६ मात्रा बना ले, दवा खाने के १ घंटा बाद दूध पीना चाहिये।

६. राक टानिक दवाः—क्युनाइन इमिनल कारबोनस $\frac{1}{3}$ ड्राम, एक्सट्रेक्ट कोका $\frac{1}{2}$ ड्राम, एक्स्ट्रेक्ट डामियाना ५ ग्रेन, शक्कर ६ तोला, एसिड सल्फियूल $\frac{1}{2}$ ड्राम। प्रथम कुनेन एसिड में मिलादो जब बिल्कुल गल कर मिल जाय तब अन्य दवा मिलादो और शक्कर के पानी में शरबत बना कर पकाओ गाढ़ा न होने पावे, पतला रहे तब उपरोक्त सोल्यूशन में इतना मिलादो कि शीशी पूर्ण भर जाय। इसके पीने से ताकत जरूर आवेगी।

२२ सिर दर्द की पेटेन्ट मेडीशन्स

१. सिर दर्द (Head-ache) की दवा—कैफान साइट्रेट $\frac{1}{2}$ ड्राम, एन्टी पायरीन $\frac{1}{2}$ ड्राम. दोनों को खरल करके थोड़ा गोंद

का पानी देकर २ गोली बना लेवे। इससे सिर दर्द तथा वाई का दर्द जाता रहता है।

२. सिर दर्द नाशक मलहम—आइल मेंथा पिपरेटा ½ ड्राम, कम्फर २ ड्राम। आइल सिनामन (Oil Cinaman) २ ड्राम। सबको एकत्र करलो, इससे सिर पर मोटी लकीर करनी चाहिये।

३. सिर दर्द का मलहम—आइल ओलिव ३ ड्राम, मोम १ ड्राम, आइल सिनामोनी ३० बून्द, आइल वर्गामेन्ट १० बून्द, सबको एकत्र करो इसे सिर मे लगा देना चाहिये।

४. सिर दर्द का मलहम—घृत १¾ तोला, मोम ¼ तोला, मैंथल २ रत्ती, सीनामन आइल १¼ तोला, यूक्लीपटिस आइल ¼ तोला प्रथम घृत और मोम को आग पर पिघलाओ फिर नीचे उतार कर अब शेष वस्तु मिला कर खूब खरल करो और डिबिया में भर दो और काम में लो।

५. सिर दर्द की दवा—चूना और नौसादर मिलाकर शीशी मे रखलो, इसको सूंघने से भी सिर दर्द अच्छा हो जाता है।

६. अध कपारो (Hemi Cramia) की दवा—सोडियम सलिसिलेट (Sodium Salicylate) १ भाग। पोटेशियम ब्रोमाइड (Potassium Bromide) २ भाग दोनों को मिला कर दर्द आरम्भ होने के पहले खाले और एक घूंट पानी के साथ उतार जाय, अथवा रात में सोते समय खाले। यह आधे सिर की एक प्रसिद्ध दवा है।

७. सिर दर्द की दवा (Head-ache Balm) वैसलीन २० औंस, हार्ड पैराफिन (Hard paraffin) १२ औंस, मेंथल ४ औंस कपूर ४ औंस, तारपीन का तेल २ औंस, यूकेलिप्टस का तेल २ औंस, आयल आफ विन्टर ग्रीन २ औंस, आयल आफ सिट्रोनेला २ औंस। विधि—अन्तिम ६ दवाओं को मिलाकर एक

चौड़े मुंह की शीशी में मजबूती से कार्क लगा कर रखदे, कुछ समय बाद जब ये घुल कर एक हो जाय तब वैसलीन तथा पैराफिन को जरा आंच दिखा कर पिघलाले और फिर इस शीशी के अर्क को उसी में उंडेल अच्छी तरह मिला कर शीशी में भरले।

८ सिर दर्द की दवा (अमृतांजन की तरह लिक्वर अमोनिया Liquor ammonia) १ छटांक, रेक्टीफाइड स्प्रिट १ छटांक, कपूर १ छठांक, पीपरमेन्ट, १ छटांक आयल आफ लवेन्डर १॥ तोला, वैसलीन १॥ सेर। विधि – सब को मिला कर शीशियों में रखले, यह अमृतांजन के स्थान पर काम दे सकता है।

२३. अतिसार (दस्त) रोग पर पेटेन्ट मेडीशन्स

एक्स्ट्रेक्ट बेल लिकविड़ २ ड्राम ४ मिनिम। एक्स्ट्रेक्ट हेमामिलाडिस ४० मिनिम, टिंक्चर क्लोरोफार्म को ४० मिनिम, एक्सट्रेक्ट मानसोनी ४ ड्राम, एकवा डिस्टिल्ड ८ औंस। सब को मिला कर एकत्र करो, इससे शूल मरोड़, पेचिस आदि रोग दूर होते हैं।

२. टेमीरिण्डस सीरप इमली के फल का गूदा १ औंस, पानी १६ औंस, मिश्री या शक्कर चार औंस। प्रथम इमली को पानी मे घोल दे फिर मिश्री मिला कर इतना उबाले कि एक उबाल आ जावे तब तुरन्त उतारकर ठण्डा होने पर छान ले और बोतलों में भर कर कार्क लगादे। मात्रा प्रति खुराक $\frac{1}{4}$ औंस। इससे बुखार, पेचिस, हलक की सूजन में प्यास रोकने के लिये तथा हैजा आदि समस्त रोगों में लाभ करता है।

२४. विविध रोगों पर इङ्गलिश पेटेन्ट मेडीशन्स

१. बाई टोल—काडलिवर आइल २०० मिनिम, ग्वाया कोल (Gwoia Col) ३ मिनिम, लेसीथिन (Lecithin) ३ ग्रेन सोडियम गलीसरो फासफेट ८ ग्रेन, मगनेशिया गलीसरो फास्फेट २ ग्रेन, साल्ट एक्स्ट्रैक्ट ८० मिनिम, सीरप वाइल्डचरी ८०

मिनिम। सब दवाओं को मिलाकर इतना सीरप मिलावे कि कुल दवा का वजन ८ औंस हो जावे। इससे प्रमेह रोग नाश होता है।

२. गोनोरिया क्योर—आइल कोपैवा ४ ड्राम, लाइकर पोटाश ४ ड्राम, म्यूशिल मकाशिया १ औंस, स्प्रिट ईथर नाइट्रेट ३ ड्राम, आईल सेन्टाल १ ड्राम। सबको मिलाकर एक करो यह १६ खुराक दवा है, एक खुराक दवा में १ औंस पानी मिलाकर पीना चाहिये। इससे सुजाक रोग में फायदा होता है।

३. विवाह (संक्रामक) रोग एलीज ५ ग्रेन, पाउडर्ड सोप ५२ ग्रेन, (Powdered ginger) ५५ ग्रेन। सबको एकत्रित करके ५६ गोलियां तैय्यार करलो। यह कई रोगों को दूर करती है विशेष कर विवाई (संक्रामक) बीमारियों मे खाना लाभदायक है।

४ वात रोग (Rheumatism Mixture)-सोडा सेली सिलास ८० ग्रेन, एन्टी पाइरिन २४ ग्रेन, टिंक्चर जल सोमियम १ ड्राम, टिचर क्लोरोफर्म ४० मिनिम, ग्लीसरीन २ ड्राम, पानी २ औंस। सबको मिला कर २४ खूराक दवा तैयार कर, इससे वात सम्बन्धि रोग दूर होते हैं।

६. सीरप आफ सारसा पैरिला (Syrup of sarsaparilla) खून साफ होने की दवा.—लिकोरिया की जड़ (Liquorice root) १ पाव, सैसेफ्रास वुड (Sassafras wood) १ पाव, साफ चीनी ८ सेर। विधि—सारसा परिला को छोटे ७ टुकड़ों में कतर कर ३० सेर पानी के साथ धीमी आंच पर यहां तक पकावे कि केवल १२ सेर पानी रह जावे, फिर उसमें लिकोरिस रूट और सैसेफ्रास वुड को कूट कर मिलादे कुछ देर तक चुर जाने के बाद उसे उतार कर छानले और चीनी मिला कर फिर चुल्हे पर चढ़ादे और शर्बत की सी चाश्नी तैय्यार करलो। खून साफ करने की यह एक प्रसिद्ध पेटेन्ट मेडीशन है।

६. गोरे खूब सूरत होने की दवाः—४ औंस गुलाव जल में कोलन वाटर की चार ड्राम वाली शीशी की दवा, ३ औंस नौसादर साफ किया हुआ और तीन औंस पानी मिलादो और अच्छी प्रकार से हिला कर ५ शीशियों में भर दो। इसके मलने से चेहरा सुन्दर हो जाता है।

७. पसीना लाने वाली दवा—एसीटेड अमोनिया दो ड्राम नाइट्रेड पोटाश १० ग्रेन, कैम्फर वाटर १ औंस। सब को मिला लेवे। यह खुराक जवान मनुश्य की है। यह पसीना खूब लाती है रोग चाहे जो हो अगर पसीना या देह से पानी निकालने की जरूरत हो तो इसे याद करना चाहिए।

८. पसीना सोखाने का पावडर (Perspiration powder) सैलिसाइलिड एसीड १० भाग, विस्मथ सब नाइट्रेट (Bismuth subnitrate) ५ भाग जिंक ओलियट ((Zinc oleate) १० भाग, विधिः - सब को मिला कर काम में लावे।

९. कोलन वाटरः—एसेन्स आफ बरगामेन्ट १ ड्राम, एसेन्स आफ लेमन १ ड्राम, तेल नारङ्गी ½ ड्राम, आयल आफ रोजमरी १० बूंद, अम्बर का अर्क ५ बूंद, इन सब को मिला कर आधा पाइन्ट रेक्टीफ़ाइड स्प्रिट मे मिला दो, बाद में १ आधा औंस की शीशी में भर कर लेबिल आदि लगादो।

१०. बाल जमाने की दवा —पाइलो कारपीन नाइट्रास २ ग्रेन ग्लेसरीन २ ड्राम, रोज वाटर ६ ड्राम, क्यूनाइन स्यूरिफास ८ ग्रेन। सबको मिला कर एकत्र करो। इसको प्रति दिन लगाने से बाल निकल आते हैं और बालों का उड़ना बन्द होता है।

११. घेघे की दवाः—वैसलीन १ औंस, पल्व आइडेफार्म २ ड्राम कार्बोलिक एसिड ३० बूंद। सब को खरल में डाल कर खूब घोट डिब्बियोंमें बन्द करदे इससे रोग के स्थान पर मालिश करे।

१२. काड लिवर आयल एम्युल्सन (Cod liver oil Emulsion) —काड मछली का तेल २३ सेर, अल्कोहोल खालिश १३ तोला, आयल आफ निरोली (Oil of Niroli) १ तोला, पीपरमेट आयल १ तोला, आयल आफ लैमन १३ तोला सैखरीन (Saecharin) ५ मासा, वेनिलीन १ मासा। सबको अच्छी तरह मिला कर शीशियों में भरले।

१३. फ्रेकलस लोसन (Freckles Lotion) —अगर चित्तियां या धब्बे बहुत ज्यादा हों या तमाम चेहरे पर फैल गये हों तो यह उपाय करे। जौ का पानी (गाढा) २ भाग, स्प्रिट आफ वाइन १ भाग। दोनों को मिला कर चेहरे पर पोत लेवे। इस प्रकार प्रति दिन दो बार करना चाहिये।

१४. सीरप लेमन सुगर ४ औंस, पानी २४ औंस, लाइम जूस १ औंस विधि.—प्रथम पानी और खांड मिला कर चाशनी तय्यार करे फिर शीतल होने पर लाइमजूस मिला कर उबाल ले बाद मे साफ कपड़े से छान कर बोतल भर ले, ऊपर से ३ मासा अलकोहोल डाइल्यूट मिला कर कार्क बन्द करदे इसके पानी से अजीर्ण वमन, तृषा, पित्त, ज्वर, सिर दर्द, खुश्की, हैजा, तथा कामला, आदि मे लाभ होता है और चित्त प्रसन्न रहता है।

स्त्री रोग चिकित्सा

१ मासिक धर्म

स्वास्थ्य की दृष्टी से स्त्रियो मे मासिक धर्म का होना बहुत ही आवश्यकीय है, इसकी रुकावट तथा न्यूनाधिकता होने से कई प्रकार के रोग पैदा हो जाते है और सन्तति का योग भी बन्द हो जाता है। यह रजो धर्म १२ वर्ष से प्रारम्भ होकर ५० वर्ष तक चालू रहता है। जिस गर्भाशय से यह रज गिरता है उसका मुंह १६

दिनों तक खुला रहता है और इसी से ऋतुकाल माना गया है इस ऋतु समय में परस्पर मैथुन करने से गर्भ की स्थिति हो जाती है। अत गर्भ धारण करने के लिये स्त्री का रजस्वला होना बहुत आवश्यकीय है ऋतुकाल को छोड़ कर मैथुन करने से गर्भ नहीं रहता क्योंकि उस समय गर्भाशय का मुख बन्द हो जाता है। मासिक धर्म न होने से निम्न लिखित उपद्रव देखने में आते हैं।

१. गर्भाशय का खिचना, गर्भाशय और भीतरी अङ्गों का सूजना।

२. आमाशय के रोग होने से भूख न लगना अजीर्ण, जी मिचलाना, प्यास और आमाशय की जलन आदि।

३. दिमागी रोग होना—जैसे मृगी, सिरदर्द या उन्मादादिक।

४. छाती के रोग होना - जैसे खांसी तथा श्वांसादिक।

५. आँख, नाक, कान का दर्द तथा एक प्रकार का पित्त ज्वर सा बना रहता है।

मासिक धर्म खुलने का उपाय

१. काले तिल तीन मासा, त्रिकुटा ३ मासा, भारङ्गी ३ मासा, इन सब का काढ़ा बना कर उसमें गुड़ या लाल शक्कर मिलाकर सायं प्रातः पीने से मासिक धर्म होने लगता है।

२. मूली के बीज, गाजर के बीज, मेथी के वीज, इन तीनों को छटांक २ भर लेकर कूट पीस छान लो। इस चूर्ण में से हथेली भर चूर्ण फांक कर ऊपर से गरम जल पीने से मासिक धर्म होने लगता है।

३. काला जीरा २ तोल, अन्डी का गुड़ आध पाव और सौंठ एक तोला। सब को जोश देकर पीसलो और पेट पर इसका सुहाता २ लेप करो गरम करके। कई दिन सेवन करने से रजोधर्म होने लगता है और नलों का दर्द मिटता है।

४. भारङ्गी, सोंठ, काले तिल और घी इन चारों को कूट पीस कर मिलादो। इसके लगातार पीने से मासिक धर्म होने लगता है।

५. अच्छे काले तिल १ पाव ले और एक सेर पानी में काढ़ा करे। आध पाव शेष रहने पर पीवे तो महावारी शुरू हो।

२ वन्ध्या चिकित्सा

शास्त्र में तीन प्रकार की वन्ध्या (बांझ स्त्री मानी गई हैं।

१. जन्म वन्ध्या—जिसको जन्म भर सन्तान नहीं होती। २ मृत वन्ध्या—जिसको सन्तान तो होती हैं किन्तु हो कर मर जाती है। ३ काक वन्ध्या—जिसके एक सन्तान होकर फिर न होती हो। अब ये बांझ (वन्ध्या) किन कारणों से होती हैं सो वर्णन किया जाता है।

१ फूल या गर्भाशय में हवा भर जाने से।

२ फूल या गर्भाशय पर मांस बढ़ आने से।

३ फूल में कीड़े पड़ जाने से।

४ फूल के वायु से ठण्डा हो जाने से।

५ फूल के उलट जाने से।

६ फूल के सड़ जाने से।

७ बाल विवाह, छोटी स्त्री की बड़े मनुष्य के साथ विवाह तथा असमय मैथुन आदि कारणों से सन्तति का योग बन्द हो जाता है अब इसकी चिकित्सा पर कुछ लाभ प्रद नुसखे दिये जाते हैं।

३ गर्भ प्रद (गर्भ में रहने वाले) योग

१. काय फल को कूट छान कर और बराबर शक्कर मिलाकर रखलो। ऋतु स्नान के बाद तीन दिन तक हथेली भर खाओ, पीछे मैथुन करो, गर्भ रहेगा। पथ्य में दूध भात खाना चाहिये।

२. असगन्ध कूट पीस छान लो। इसकी ४॥ मासा से ६ मासा तक है। ऋतु प्रारम्भ होने से पहले इसे सेवन करना चाहिये।

पथ्य में दूध भात खाना चाहिये।

३. एक हथेली भर अजवाइन कई दिन तक खाने से गर्भ रहता है।

४. नाग केसर को पीस छान गाय के दूध के साथ सेवन करने से गर्भ रहता है।

५. छोटी पीपल, सोंठ, काली मिर्च, नाग केसर इनको समान भाग ले कूट पीस छान लो। इसमें से ६ मासा चूर्ण गाय के घी में मिला कर ऋतु स्नान के चौथे दिन चाट ले और रात को मैथुन करे तो अवश्य पुत्र होवे, चाहे वह बांझ ही क्यों न हो।

६ नाग केसर और सुपारी इन दोनों को बराबर लेकर पीस छान लो। इसकी मात्रा ३ मासा से ६ मासा तक है। यह बहुत ही गर्भ फल प्रदाता है।

७. दो तोला नागोरी असगन्ध को गाय के दूध के साथ सिल पर पीस कर लुगदी बनालो। फिर उसे एक कलईदार कड़ाही या देगची में रख कर ऊपर से एक पाव गाय का दूध और १ तोला गाय का घी डाल दो। और मन्द अग्नि से पकाओ। इसके बाद दूध को कपड़े से छान ऋतु स्नान से चौथे दिन पीवे और दूध भात का भोजन करे तो अवश्य गर्भ रहे।

नाग केसर और जीरा इन दोनों को गाय के घी में तीन दिन पीने से अवश्य गर्भ रहता है।

४ प्रदर रोग चिकित्सा

वैदक शास्त्रों में इसका कारण बतलाया गया है कि विरुद्ध अहार विहार करना, मद्य पीना, भोजन पर भोजन करना, अजीर्ण होना, गर्भ गिरना, अति मैथुन करना, अधिक राह चलना, बहुत शोक करना, बहुत बोझ उठाना, चोट लगना, दिन में सोना, हाथी या घोड़े आदि पर चढ़कर भगाना इत्यादि कारणों से प्रदर रोग

होता है। यदि इससे प्रदर रोग की चिकित्सा जल्दी न की जावे तो उसके शरीर में बहुत जल्दी खून निकल जाता है और उससे कमजोरी तथा बेहोशी आदि रोग घेर लेते हैं। अतः इस रोग की चिकित्सा पर कुछ लाभ प्रद योग वर्णन किये जाते हैं।

१. ककड़ी के बीजों की मींगी १ तोला, सफेद कमल की पखड़ी १ तोला लेकर पीस लो। फिर जीरा और मिश्री मिला कर ७ दिन पीओ। इससे श्वेत प्रदर नाश होवे।

२. दो तोला अशोक की छाल गाय के दूध में पका कर और मिश्री मिला कर प्रात. सांय कुछ दिन पीने से रक्त प्रदर निश्चय आराम होता है।

३. पके हुए गूलर के फूल लाकर सुखा लो और फिर पीस छान लो और उसमें बराबर मिश्री मिला दूध या पानी के साथ फांकने से रक्त प्रदर अवश्य शान्त होता है।

४. चौलाई की जड़ को चावलों के पानी के साथ पीस कर उसमें रसौत और शहद मिला कर पीने से प्रदर रोग नाश हो जाते हैं।

५. नाग केशर को पीस कर और माठा छाछ) में मिला कर ३ दिन पीने से श्वेत प्रदर नाश होता है।

६. चावलों की जड़ को चावलों के धोवन में औटा कर फिर उसमें रसौत और शहद मिला कर पीने से सब तरह के प्रदर नाश होते हैं।

७. अशोक छाल ४ तोला लेकर एक हांडी मे रख कर ऊपर से १२८ तोला पानी डालकर मन्दाग्नि से पकाओ। जब ३२ तो० पानी रह जावे तब उसमे ३२ तोला दूध भी मिला दो और फिर पकाओ जब पकते २ केवल दूध रह जाय तब नीचे उतार ठण्डा कर उसमें से १६ तोला दूध सवेरे ही पीवो। इस दूध के पीने से

घोर से घोर प्रदर नाश होता है ।

८. रक्त प्रदर की औषधि—जब स्त्री के गुप्त अङ्ग से मासिक रुधिर बराबर बहता रहे, बन्द न होवे जिसको पैर कटना और पैर जारी होना कहते हैं उसकी औषधि निम्न लिखित प्रकार से है।

१ आम की गुठली को भून कर खिलाओ।

२ आम की गुठली का चून करके घी बूरे में मैदा मिला हुआ हलुवा खिलाओ।

९. पीले प्रदर की औषधि—कायफल को कूट दूध के साथ सेवन करे।

१०. सर्व प्रदर नाशक औषधि—सालम मिश्री, चिकनी सुपारी, माजूफल को कतर कर कतीरा, काली मूसली, केले की फली, मोच रस, चोब चीनी प्रत्येक २ तोला, केसर जायफल, जावित्री, लौंग सौंठ चार २ मासा, भसिंडा आठ तोला ताल मखाना, मस्तंगी एक २ तोला, देव दारू ४ तोला इनको कूट पीस छानलो। इन सब के बराबर मिश्री लेकर चाशनी करे। आठ तोला घी, दो छटांक मावा, डाले, पीछे कुटो पीसो औषधि मिलावे और नौ २ मासा सांय प्रात सेवन करे तो सर्व प्रकार के प्रदर नाश होवें।

५ योनि रोग नाशक प्रयोग

१. अगर योनि मे दाह या जलन हो तो नित्य आंवलों के रस मे चीनी मिला कर पीनी चाहिए। अथवा कमलिनी की जड़ चावलों के पानी में पीस कर पीनी चाहिए।

२. अगर योनी में राध निकलती हो तो नीम के पत्तों को सैंधा नौन के साथ पीस कर गोली बना लेनी चाहिए। इन गोलियों को रोज योनि में रखने से राध का निकलना बन्द हो जाता है।

३. अरंडी के बीज नीम के रस में पीस कर गोलियां बनालो इन गोलियों को योनि में रखने से योनिशूल मिटता है।

४. तुम्बी के पत्ते और लौंध बराबर लेकर खूब पीसकर योनि में लेप करो। इससे योनि के घाव तत्काल मिट जाते हैं।

५. ढाक के फल और गूलर के फल इन्हें तिल के तेल में पीस कर योनि में लेप करो। इससे योनि दृढ़ हो जाती है।

६ स्तन पीड़ा नाशक उपाय

१. इन्द्रायन की जड़ पानी या बैल के मूत्र में घिस कर लेप करने से स्तनों की पीड़ा और सूजन तुरन्त मिट जाती है।

२. यदि स्तनों में खुजली, फोड़ा या गांठ अथवा सूजन हो तो शीतल दवाओं का लेप करो। १०८ बार धोये हुए मक्खन में मुरदासंग और सिन्दूर पीस छान कर मिलादो और उसे २१ बार धोओ। फिर उसे स्तनों पर लगादो, इस लेप से फोड़े, फुंशी और घाव आदि सब आराम हो जाते हैं।

३. हल्दी और गुवार पाठा की जड़ पीस कर लगाने से स्तन रोग नाश होते हैं।

४. गुवार पाठा के रस में हल्दी का चूर्ण डाल कर गरम करलो फिर सुहाता २ स्तनों की शूजन पर लेप करो। इससे सूजन फौरन उतर जायगी।

५. यदि स्तन पक गये हों तो उस पर निम्बोलियों का तेल चुपड़ दो यह बहुत ही अच्छी दवा है।

६. अगर बालक स्तनों को दांतों से काटता हो तो चिरायता पीस कर स्तनों पर लगादो।

७ दुग्ध चिकित्सा

१. अगर दूध पानी में डालने से पानी मे न मिले ऊपर तैरता रहे और कसैला स्वाद हो तो उसे वायु से दूषित समझो।

२. अगर दूध में कड़वा, खट्टा नमकीन स्वाद हो तथा उसमें पीली रेखा हो तो उसे पित्त दूषित समझो।

३. अगर दूध गाढ़ा और लसदार हो तथा पानी में डालने से डूब जाय तो उसे कफ से दूषित समझो।

४. उत्तम दूध के लक्षण—जो दूध पानी में डालने से मिल जाय पाण्डु रंग का हो, मधुर और निर्दोष है। ऐसा ही दूध बालक के पीने के योग्य है।

८ दूध शुद्ध करने का उपाय

१. बच्चे की माता तथा धाय को तीन दिन तक दस मूल का काढ़ा पिलाने से वायु से दूषित दूध शुद्ध होता है।

२. गिलोय, शतावर, परवल के पत्ते, नीम के पत्ते, लाल चन्दन और अनन्त मूल का काढ़ा मिश्री मिला पिलाने से पित्त से दूषित दूध शुद्ध होता है।

२. त्रिफला, मोथा, चिरायता, कुटकी बमनेटी देवदारू, वच और अकुवन का काढा पिलाने से कफ से दूपित दूध शुद्ध होता है।

४. परवल के पत्ते, नीम के पत्ते, विजयसार देवदारू, पाढा, मरोड़ फली, गिलोय, कुटकी और सौंठ इनका काढ़ा पिलाने से किसी भी दोष से दूषित दूध शुद्ध हो जाता है।

९ दूध वढाने वाला प्रयोग

१ .सफेद जीरा और साठी चावल दूध में पका कर कुछ दिन पीने से स्तनों में दूध बढ़ जाता है।

१. बिना दूध वाली यदि दूध में जीरा डाल कर पीवे तो दूध वाली हो जाय।

३. पीपलों का मिला छना चूर्ण गरम गरम दूध के साथ पीने से दूध वढ़ता है।

४. भाड़ के गेहूँ उकरवा अब भुने कर और अखरोट के पत्ते बरावर ले गौ के घी में ही सात दिन तक खावे तो बांझ के भी दूध उतर आता है।

५. गेंहूं के दलिये को दूध में पका कर खाये अथवा सफेद जीरा का पाक बना कर खावे तो दूध उतर आता है।

१० शीघ्र प्रसव कराने वाले प्रयोग

१. अठारह मासा अमल तास के छिल्कों का काढ़ा औटा कर स्त्री को पिला देने से बच्चा शीघ्र ही सुख से हो जाता है।

२. बच्चा जनने वाली के बांये हाथ में मकनातीसी पत्थर रखने से बच्चा सुख से हो जाता है।

३. गाय का दूध आध पाव और पानी एक पाव मिला कर पीने से बच्चा तुरन्त ही हो जाता है।

४ बिजौरा नींबू की जड़ वा मौरेठी का चूर्ण शहद में मिला कर घी के साथ पिलाने से सुख पूर्वक बालक होता है।

५. कलिहारी की जड़ कांजी में पीस कर पैरों पर लगाने से शीघ्र ही बालक होता है।

६ अडूसे की जड़ से नाभि, मूत्रशय और भग में लेप करना चाहिये।

११ प्रसूती की चिकित्सा

प्रसूती रोग लक्षणः—शरीर टूटना, ज्वर, कपकपी, प्यास, शरीर भारी होना, मूजल शूल और अतिसार ये प्रसूती रोग के लक्षण हैं। यह रोग बच्चा जनने के दिन से डेढ़ महीने तक अथवा रजोदर्शन होने तक होता है। अब उसकी शन्ति पर सुगम उपाय पाठकों के हितार्थ वर्णन किये जाते हैं।

१. सौभाग्य शूंठी पाक —घी ८ तोला, दूध १२८ तोला चीनी २०० तोला, पिसी छनी सोंठ ३२ तोला। इन सब को एकत्र मिला

कर गुड़ की विधि से पकालो जब पकने पर आवे तब इसमें धनिया १२ तोला, सौंफ २० तोला, वायबिडंग, सफेद जीरा, सौंठ, गोल मिरच, पीपल, नागर मोथा, तेजपात, नागकेसर, दालचीनी, छोटी इलायची। प्रत्येक चार २ तोला पीस छान कर मिलादो और फिर पकाओ जब तैय्यार हो जाय तब किसी साफ बर्तन में रख दो। इसके सेवन से प्यास, वमन ज्वर, दाह, श्वांस शोथ खांशी तिल्ली और कृमि रोग नाश होते हैं।

२. सौभाग्य शुठी मोदकः—कसेरू, सिघाड़े, पद्मबीज, मोथा, सफेद जीरा, काला जीरा, जायफल जावित्री, लौंग, शैलज, शिलाजीत, नागकेसर, तेजपात, दालचीनी, कपूर, धाय के फूल, इलायची, सौआ, धनिया, गज पीपर, गोल मिरच, और शतावर इन २२ चीजों को चार २ तोला ले कूट पीस छान ले। लोह भस्म ८ तोला, ले कूट पीस छान ले। लोह भस्म ८ तोला, पिसी छनी सौंठ १ सेर, मिश्री आधा सेर, घी एक सेर, दूध ८ सेर, तैय्यार करो। फिर पाक विधि से, पाक बनालो। इसमें छः २ माशा तक खाने से सूति का जन्य अतिसार ग्रहणी आदि रोग शान्त होकर अग्नि वृद्धि होती है।

३ गोखरू २॥ तोला कुचल कर आधा सेर पानी में औंटावे जब छटांक भर रह जावे तब छटांक भर बकरी का दूध मिला कर सात दिन तक पीवे। दोनों समय पीना चाहिए।

४. इस रोग में भात, दही, खटाई, शरबत, ठण्डा पानी और वायु ठण्डी वर्जित है।

१२ गर्भिणी रोग चिकित्सा

१. ज्वर नाश योगः—मुलैठी, लाल चन्दन, खस, सारिवा, और कमल, के पत्ते इनका काढ़ा बना कर उसमें मिश्री और शहद मिला कर पीने से गर्भिणी का ज्वर उतर जाता है।

२. लाल चन्दन, सारिवा, लौंध, दाख और मिश्री इनका काढ़ा पीने से ज्वर शान्त होता है।

३. अतिसार ग्रहणी आदि नाशक योगः—सुगन्धवाला अरलु, लाल चन्दन, खिरेटी धनिया गिलोय, नागर मोथा, खस, जवासा, पित्त पापड़ा और अतीस इन दवाओं का काढ़ा बना कर पिलाने से गर्भिणी स्त्रियों के अतिसार, संग्रहणी, ज्वर, योनि से खून गिरना, गर्भस्राव, दर्द या मरोड़े के साथ दस्त आना आदि आराम हो जाते हैं।

४. यदि गर्भवती के पेट पर अफारा आ जावे तबः—बच व लहसुन को सिल पर पीस कर लुगदी बनालो इस लुगदी को दूध में डाल कर औटालो, जब औट जाय तब उसमें हींग और काला नौन मिला कर पिला दो। इससे आफरा मिट कर गर्भिणी को सुख होता है।

५. गर्भिणी का मूत्र न उतरे तबः—डाभ की जड़, दूब की जड़, कास की जड़ इनको थोड़ी सी ले दूध में औटा कर पिलावे।

६. गर्भिणी को वमन हो तब.—गेरू को आग में गरम कर पानी मे बुझा लेवे और पीवे। २ कपूर कचरी को पीस कर मूंग बराबर गोली बना कर खावे। ३ बट के वृक्ष की दाढ़ी जला कर उसकी भस्म शहद में चाटे।

७, गर्भिणी को रुधिर बहनाः—अनार के छिलके के पानी की पिचकारी लेने से यह जरायु प्रवाह बन्द हो जाती है।

८. गर्भ में बालक मर जाय तबः—छटांक भर गौ का गोबर डेढ़ पाव पानी मे घोल कर पिला दो। अथवा काले सांप की कांचली की धूनी अङ्ग के भीतर दो तुरन्त बालक हो पड़ेगा।

१३ गर्भ स्राव और गर्भपात

१. गर्भ स्राव के लक्षण :—शरीर में अचानक आशक्ति और

मन में व्याकुलताई सी जान पड़े, जी डूबा सा जाता हो, खड़े होने से मस्तक घूमे और चक्कर आवे। पेट के ऊपर और जांघों में रह रह कर वेदना उठे तो जान जाना चाहिये कि गर्भ गिरने वाला है यदि तरबूज का सा पानी भी झरने लगे तो स्राव निश्चय समझे। यदि कमर जांघ या गुदा में अधिक पीड़ा ज्ञात हो, शूल सी चले और रुधिर व रुधिर के चकत्ते बहार आने लगें तो जान लेना चाहिये कि गर्भाशय से गर्भ अलग हो गया है।

गर्भस्राव का कारणः—गर्भावस्था में मैथुन करना, राह चलना हाथी या घोड़े पर चढ़ना, महनत करना, अत्यन्त दबाव पड़ने, फलांगने, गिरने, दौड़ने, व्रत उपवास करने. अजीर्ण होने, मल मूत्र के वेग रोकने, गर्भ गिराने वाले तेज और गर्म पदार्थ खाने ऊंचे नीचे स्थानों पर बैठने या सोने, डरने तीक्ष्ण गर्म कड़वे तथा रूखे पदार्थ खाने पीने के कारणों से गर्भ स्राव या गर्भपात होता है।

गर्भस्राव और गर्भपात में भेद —चौथे महीने तक जो खून के रूप में गिरता है उसे गर्भस्राव कहते हैं। और जो पांचवे या छठे महीने गिरता है उसे गर्भपात कहते हैं।

गर्भस्राव तथा गर्भपात चिकित्सा

१. भौंरी के घर की मिट्टी मोगरे के फूल, पीला गेरू, लजवन्ती, धाय के फूल, रसौत और राल इनमे से सब या जो २ मिले उन्हें कूट पीस छान लो। इस चूर्ण को शहद में मिलाकर चाटने से गिरता हुआ गर्भ रुक जाता है।

२. जवासा, सारिवा, पद्माख, रास्ना, मुलैठी और कमल, इनको गाय के दूध में पीस कर पीने से गर्भस्राव वन्द होता है।

३. कुम्हार वर्तन वनाते समय हाथ में लगी हुई मिट्टी को

पोंछना जाता है उस मिट्टी को लाकर पिलाने से गिरता हुआ गर्भ रुक जाता है।

४. मुलैठी, देवदारु, और दुद्धी इनको दूध के साथ पीवे तो गर्भस्राव बन्द होता है।

५ शतावर और दुद्धी का काढ़ा पीने से गर्भस्राव बन्द होता है।

यदि निम्नलिखित औषधियों को गर्भ रहने के पश्चात सेवन कराई जावे तो फिर कभी गर्भपात या गर्भस्राव न होगा।

१. पहले महीने में मुलैठी सागौन के बीज असगन्ध, देवदारु, इनमें से जो २ मिले उन सब का १ तोला कल्क दूध में घोल कर गर्भिणी को पिलाओ।

२. दूसरे महीने में अश्मन्तक, काले तिल, मंजीठ शतावर इनमें से जो २ मिले उनका एक तोला कल्क दूध में घोल कर गर्भिणी को पिलावो।

३. तीसरे महीने में वन्दा। फूल प्रियंगु, कंगुनी सफेद सारिवा इसमें से जो २ मिले उनको १ तोला कल्क दूध में घोल कर पिलावो।

४. चौथे महीने में सफेद सारिवा, काला सारिवा, रस्ना, भारङ्गी और मुलैठी इन में से जो २ मिले उनको १ तोला कल्क दूध मे घोल कर पिलावो।

५. पाँचवे महीने में कटेरी, बड़ी कटेरी. कुम्भेर वड़ आदि दूध वाले वृक्षों की बहुत सी छोटी २ कोंपले और छाल इनमे से जो २ मिले उन सबको १ तोला कल्क दूध में घोल कर पीना चाहिए।

६. छटे महीने में पिठवन, वच, सहजना, गोखरू और कुम्भेर इनमें से जो २ मिले उनको एक तोला कल्क दूध में घोल कर पीना चाहिये।

७. सातवें महीने में सिघाड़े, कमल कन्द, दाख, कसेरू, मुलैठी और मिश्री इन में जो २ मिले उनको १ तोला कल्क दूध में घोल कर पिलाओ।

८. सातवें महीने में दवाओं को शीतल जल में पीस कर और दूध में मिला कर पिलाने से गर्भस्राव और गर्भपात नहीं होता। इसके सिवाय गर्भ सम्बन्धी शूल भी नष्ट हो जाता है।

६. आठवें महीने कैथ, कटाई, बेल, परवल, ईख और कटेरी इन सब की जड़ों को शीतल जल में पीस कर १ तोला कल्क तैयार करके फिर इस कल्क को १२८ तोला जल और ३८ तोला दूध में डाल कर पकाओ जब पानी जल कर दूध मात्र रह जाय तब छान कर पिलाओ।

१०. इस मास में मैथुन करना सर्वथा निषेध है क्योंकि उस समय पुरुष के मैथुन करने से गर्भ निश्चय ही गिर जाता। लूला लंगड़ा हो जाता है।

११. नवें महीने में मुलैठी, सफेद सारिवा काला सारिवा असगन्ध और लाल पत्तों का जवासा इनको शीतल जल में पीस कर १ तोला कल्क को ४ तोला दूध में घोल कर पिलाना चाहिए।

१२. दसवें महीने में सौंठ और असगन्ध को शीतल जल में पीस कर उस में से २ तोला कल्क कर १२८ तोला जल और ३२ तोला दूध में डाल कर पकाओ जब दूध मात्र रह जाय तब छान कर गर्भणी को पिलाओ अथवा सोंठ को दूध में औटा कर शीतल करके पिलाओ।

१३. ग्यारवे महीने में खिरनी के फल कमल लजवन्ती, की जड़ और हरड़ को शीतल जल में पीस कर फिर १ तोला कल्क दूध में घोल कर पिलावे इससे गर्भणी का शूल शान्त हो जाता है

१४. बारवें महीने में मिश्री, विदारी कन्द काकोली, और

कमल नाल इनको सिल पर पीस कर १ तोला कल्क पीने से शूल मिटता है घोर पीड़ा शान्त होती है और गर्भ पुष्ठ होता है

नोट—इसके अतिरिक्त कमल को जड़ कमल की नाल और फूल तीन माशा लेकर दूध में औटा कर पीवे अथवा महीने २ में निम्नलिखित औषधि लेवे। मुलैठी साल वृक्ष के बीज, देव दारु, लोनिया साग काले तिल, राल शतावरी, पीपल, कमल की जड़ जवासा, गौरीशर, वाय सुरई, दोनों कटेली, सिंघाड़ा, कसैरू दाख मिश्री यह सब दवा तीन २ मासा लेवे और सात महीने सात २ दिन पीवे तो कभी गर्भपात या गर्भस्राव न होगा। गर्भवती को नित्य मल त्याग भली भांति होना चाहिये जो न होता हो तो थोड़ा सा अन्डी का तेल दूध में बूरा मिला पिलावे इस विरेचन से कुछ हानि नहीं है।

ऋतु, का रुधिर अधिक बहना (बन्द करने के उपाय)

इस रोग को हिन्दी में पैर जारी होना कहते हैं। यह रोग भी स्त्रियों मे बड़ा भयङ्कर होता है अब इसकी चिकित्सा पर कुछ प्रयोग पाठकों के हितार्थ वर्णन किये जाते हैं।

१. बकायन की कोंपलों का एक तोला स्वरस पीने से बन्द होता है।

२. कपास के फूलों की राख हथेली भर नित्य शीतल जल के साथ फांकनी चाहिये।

३. रसौत १ माशा, राल १ माशा, बबूल का गोंद १ माशा, सुपारी ढाई माशा इनको सिल पर पानी के साथ पीस कर एक २ माशे की टिकिया बनालो इनमे से २ या तीन टिकिया खाने से रुधिर बन्द होता है।

४. गाय के पांच सेर दूध मे १ पाव चिकनी सुपारी पीस कर मिलादो और औटाओ, जब औट जाय तब उस मे आध

सेर चीनी डाल दो और चाशनी करो फिर छोटी माई ५२॥ माशा, बड़ी माई ५२॥ माशा, पकी सुपारी के फूल १०५ माशा, धाय के फूल १०५ माशा, ढाक का गोंद १० तोला। इन सबको महीन पीस कर कपड़ छन कर लो जब चाशनी शीतल होने लगे तब इस छने चूर्ण को उसमें मिलादो और चूल्हे से उतार कर साफ बरतन में रखदो। मात्रा २० माशा से ६० माशा तक सेवन करो। इस सुपारी पाक के खाने से योनि से नदी के समान बहता हुआ रुधिर भी बन्द हो जाता है।

५. जले हुए चने, तज और लौध समान भाग लेकर पीसलो और फिर सब की बराबर चीनी मिलादो। इसमें हथेली भर दवा फांकने से रुधिर बन्द हो जाता है।

६. अनार की छाल एक तोला औटा कर पीव।

७. बबूल की गोंद भून कर फिर उसमें बराबर का गेरू मिलादो। इसमें से ७॥ मासा दवा हर सवेरे फांकने से रुधिर बन्द होता है।

८ छः माशा गेरू और छः माशा सैलखड़ी एकत्र पीसकर पानी के साथ फांको।

सौन्दर्य वर्द्धक उबटन बनाना

१. पीली सरसों १ सेर, सफेद चन्दन का चूरा १ छटाक बाल छड़ एक छटांक, नेत्र वाला आधी छटांक आम की छाल एक छटांक, केसर एक तोला, चिरौंजी २ छटांक। इन सब का कूट छान कर रखे जब आवश्यकता हो तब दूध में पीस कर लगाना चाहिये।

२. बकरी का दूध, गौ का घी, मसूर का चून, नारङ्गी का छिलका, मैदा इन सबको मिला कर उबटन करो।

बाल रोग चिकित्सा

बालकों के बहुत से रोग गर्भाऽवस्था में से सम्बन्ध रखने वाले हैं। जो माता गर्भावस्था में अपने आहार विहार आदिकों पर ध्यान नहीं देती, उनके बच्चों को फोड़ा, फुन्सी शीतला चेचक तथा मसान रोग आदि बहुत व्यापते हैं। अतः गर्भाऽवस्था में माता को चाहिये कि वह अपने खाने पीने पर अवश्य ध्यान दिया करे। और जो बच्चे माता का दूध पीते हैं और उनको जो रोग होता है वह भी प्राय. माता की गलती से ही हुआ करता है। अत. इन सब बातों का ध्यान रखते हुए माता को चाहिये कि ऐसे समय में सादा हल्का तथा सात्विक भोजन किया करें। अत्यन्त गरम मसाले, मिरचे, तेल, इमली, आचार, अमचूर आदि का तथा बहुत देर से पचने वाली गरिष्ठ, बासी (ठन्डा) भोजनों से सदैव बचती रहें।

बालकों को औषधि देने के नियम

जो बालक दूध पीते हों तो उनकी दूध पिलाने वाली को, जो नाज खाते हों तो बालक को और जो बालक दूध पीते हों और नाज भी खाते हों तो दोनों को औषधि देना चाहिये। अब बच्चों के भिन्न २ रोगों की कुछ सुगम शास्त्रोक्त औषधियां लिखी जाती हैं कि जिससे प्रत्येक मनुष्य अपने बच्चों के रोगों की चिकित्सा बिना किसी वैद्य तथा डाक्टर के स्वयं कर सकें।

१. जन्माऽवस्था में बच्चों को, स्नान कराने का काढ़ा—

बालकों का जन्म होने के पश्चात् निम्नलिखित काढ़े से चौथे तथा पांचवे दिन स्नान करावे।

१. गौरख मुन्डी और खंश का काढ़ा से स्नान करावे।
२. हल्दी चन्दन, कूट इनको पीस बालकों को उबटन करा

कर स्नान करावे ।

३. पीपल, पीपलामूल, कटेली इनका काढ़ा कर गौ के घी में पकावे जब घी मात्र रह जावे तब बालकों को मल कर स्नान करावे ।

४. राल, गूगल, खश, हल्दी इनकी धूनी दिया करें ।

बालकों को जन्मते ही दस्त कराना आवश्यकीय है क्योंकि इस समय दस्त न कराने से बच्चों को कई प्रकार के रोग होजाते हैं । बहुत सी मूर्खा दाई बालक को दस्त न होने पर उसकी गुदा में उङ्गली देकर दस्त कराती हैं सो बहुत ही हानिकारक है, ऐसा कदापि नहीं करना चाहिये ।

इस समय दस्त कराने के लिये निम्नलिखित औषधियों का प्रयोग करो तो अवश्य दस्त हो जायेगा ।

१—बालक को उसकी माता का थोड़ा सा दूध पिलावे, फिर पीछे इस दूध को दो तीन दिन तक न पिलावे ।

२—अरण्डी के तेल की दस बूंद थोड़ा शहद में मिला कर चटादे, दस्त हो जायेगा ।

बालक जब जन्म लेता है तब उसकी टूंडी में नाल लगा रहता है उसको बहुत सावधानता से काटना चाहिए । प्रायः इस समय कभी गलती भी हो जाती है और बालक की टूंडी पक जाती है यदि ऐसी अवस्था हो तो बच्चे को निम्नलिखित औषधि का प्रयोग कराना चाहिये ।

बालक की टूंडी पक जाने की औषधि

१—कपड़े को कड़वे व गोले के तेल में भिगो लगादे ।

२—हल्दी, लौंध, प्रियङ्गु के फूल इन सबको शहद में महीन पीस टूंडी पर लेप करे ।

३—जो सूजन होय तो पीली मिट्टी को आग पर गरम कर दूध डाल उसका बफारा दे ।

वालक के खाल लग जाने पर औषधि

वालक की खाल, कांख, घोंटू, रान चिपकी रहती हैं यहां मैल जम जाता है और कच्ची खाल होने के कारण लग जाती है इसलिये कड़वा तेल लगाकर मैल निकाल कर नित गरम पानी से धो लिया करे।

वालक के दूध डालने की औषधि—

१—काकड़ा सींगी, अतीस, मोथा, पीपल पीस कर शहद में चटावे।

२—आम की गुठली, धान की खील, सैंधा नौंन पीस कर शहद में चटावे।

३—कटेली के फल का रस, पीपल, पीपलामूल, चित्रक, सौंठ इनको पीस कर घी और शहद में चटावे।

वालक दूध न पीवे तब—

नीम के पत्ते, पटोल के पत्ते, गिलोय के पत्ते, अडूसा के पत्तों का काढ़ा कर स्नान करावे।

वालकों की आंख दुखें तब औषधि—

१—छोटे वालकों के कान में कडवा तेल डाल दे और तलवे पर मल दे, यदि हो सके तो एक बून्द आंख में भी डाल दे

२—दूध पिलाने वाली नियम से रहे, नमकीन खट्टा न खावे चने की वनी हुई कोई चीज न खावे।

३—रसौत का पानी आंख मे डालना चाहिये।

४—घी को गरम करके और रूई का फाया वना नमक के पानी मे डुवो घी में छोड़ दे, जब छुन छुन शब्द हो जावे तब उतार कर ठण्डा कर आखों पर वांध दे।

बालकों की खांसी पर औषधि—

१—पोहकर भूल, अतीस, पीपल, काकड़ा सींगी को पीस कर शहद में चटावे।

२—बंशलोचन पीस कर शहद में चटावे।

३—आक की फूल की बिन्दी गिनकर उतनी ही काली मिरच गिन कर पांचों नमक डाल कर एक कुलिया में डाल कपड़ मिट्टी कर फूंक देवे और १ रत्ती मात्रा शहद में मिला कर चटावे।

बालकों की खांसी और ज्वर पर औषधि—

१—काकड़ा सींगी, अतीस, पीपल पीस कर शहद में चटावे।

२ - सुहागा अधभुना और बराबर की काली मिरच पीस कर गुवार पाठा के रस में चने बराबर गोली बना खिलावे।

बालकों के रक्तातिसार की औषधि—

१—पाषाण भेद और सोंठ पानी में घिस कर लगावे।

२—अनार के फल का छिलका लौंग दालचीनी का चूरा आठ २ माशा लेकर मिट्टी की हांडी में डेढ़ पाव पानी के साथ १५ मिनट तक उबाले। हांडी का मुख बन्द रखे, जब उबल जावे ठंडा कर छान ले और बालक को ६ माशा और युवाको ४ तोला दिन में तीन चार बार देवे।

३—आक की जड़ का चूर्ण दे, इस प्रकार चूर्ण बनावे। आक की जड़ खोद कर मिट्टी को पोंछ छाया में सुखावे जब सूख जावे तब छाल को अलग करले और दूसरे बेर सुखावे कि तनिक भी दूध न रहे। जब निपट सूख जावे तब कूट पीस कर चूर्ण करले, बालक जितने वर्ष का हो उतनी ही रत्ती दवा तीन चार बार ठंडे पानी के साथ फंकांना चाहिये।

४—सौंठ. सौंफ, पोस्त का छिलका, आंवला, छोटी हरड़, सफेद जीरा ये सब चार २ माशा, मिश्री २ तोला। पोस्त के

डोडे और जीरा तथा सौंफ को भून ले, फिर इन सब औषधियों को थोड़े घी में भून कर पीस ले और मिश्री मिला कर रख छोड़े। दिन में तीन बार ठन्डे पानी से खिलावे पर भोजन गरिष्ट न करे।

५—अनार का काढ़ा दे।

बालकों के अफारा रोग की औषधि—

१—सैंधा नोंन, सौंठ, इलायची, भुनी हींग और भारङ्गी को महीन पीस कर गरम पानी के साथ खिलावे।

२—हींग को भून कर और पानी में पीसकर टूंडी के चारों तरफ लेप करे।

३—सूखा पोदीना, छोटी इलायची, पीपल, काली मिरच और काला नमक बराबर पीस कर तीन चार दिन खिलावे।

बालकों के लार गिरने की औषधि—

१. जवारस, मस्तंगी थोड़ी २ सी खिलावे। इसके बनाने की विधि यह है कि दो माशा मस्तंगी और दो तोला इलायची के बीज पीस कर पाव भर बूरे की चाशनी करके उसमें दवा डालदे और चकती जमाले। इसमें से एक या दो माशा नित्य खिला दिया करे।

बालकों के कान बहने की औषधि—

१. लोंध को महीन पीस कानमे डालने से बन्द होजाता है।

२. समुद्र फेन, सुपारी की राख, कत्था इनको महीन पीस कर कागज की बत्ती बनाकर कान में फूक दे।

३ मोर के पजे को जला कर डाले।

४. सुदर्शन का पत्र गरम कर रस निचोड़ दे।

५. नीम की पीपल का रस शहद में मिला कर गुनगुना कर डाल दे।

बालकों के गले आ जाने पर औषधि—

१. शहतूत का शर्बत चटादे। यह शर्बत जितनी बार चटाया जायेगा उतना ही शीघ्र आराम होगा।

बालक के तालु पक जाने पर औषधि—

मुल्तानी की मिट्टी घिसकर दिन में कई बार तलुवे पर रखे।

बालकों की अलाई पर औषधि—

मसूर के छिलके और आंवला जलाकर उन की बराबर महदी और कवीला पीस कर घी में मिला शरीर के उस भाग पर मलदे और मंहदी को पानी में औटा कर स्नान करादे।

बालकों की संग्रहणी पर चूने का पानी

आधी छटांक खाने का चूना ले और परात में रखकर ढाई सेर पानी से धीरे धीरे पतली धार से तरादे, जिस से घुल कर पानी में मिल जावे, दो घण्टे पीछे उस पानी को नितार लो, नीचे के चूने के पानी को फेंकदो। अब इस पानी को आधा घटा फिर नितरने दो इस प्रकार दुबारा नितार कर नीचे के चूने के पानी को फेंक दो और इस नितरे पानी को बोतल में भर कर रखलो और बालक को दूध में मिला कर थोड़ा सा पिला दिया करो। इससे बालकों को उल्टी और फटे दस्तों को भी आराम होगा।

बालकों के मुख आ जाने पर औषधि—

१. शीतल चीनी और पपरिया कत्था पीस कर शहद में चटावे।

२. केले की ओस चटावे।

३. कपूर और शीतल चीनी पीस कर लगावे।

४. छोटी इलायची के बीज, पपरिया कत्था और बंसलोचन पीस कर बुरका दे, यदि फफोले हो गये हों तो दो रत्ती सुहागा

सात रत्ती गेहूँ का सत पीस छान कर मुख में डाले।

बालकों का मसान रोग

यह रोग अपवित्रता से होता है इस में बालक की पसली चलने लगती है, ज्वर हो आता है, पसलियों में कफ जम जाता है, कभी दस्त हो जाते हैं और कभी नहीं होते है, बालक अचेत रहता है। यह सर्द गरम दो प्रकार का होता है। गरमी से होता है उसमे तो कुछ डर नहीं रहता। किन्तु जो सरदी से होता है उस मे बहुत डर रहता है उसकी औषधि यह है:—

१. कबीला भुना हुआ, नीला थोथा, बड़ी हरड़ का छिलका, पपरिया कत्था इन सबको सम भाग लो, कूट छान गोली बनालो और घी मे मिलाकर पसली पर लेप करे।

२ केंचूआ, पीलू के बीज और लौंग बराबर ले बाजरे के समान गोली बना नित्य एक गोली खिलादे।

३. एक कंजे का बीज और एक रत्ती नीला थोथा इन दोनों को पीस सरसों के बराबर गोली बना एक नित्य खिलादे।

४ एलुआ और जमाल घोटा (शुद्ध को बछिया के मूत्र मे लोहे से पीस कर मूंग बराबर गोली बनाले और एक गोली नित्य खिलादे।

५ सरदी होकर गले मे कफ घर घराता हो और पेट की पीड़ा से बालक रोवे और सुस्त पड़ा हो तो शुण्ठी मात्रा देवे।

इसकी विधि यह है कि बतेरा सौंठ का चूर्ण पाव भर, दही चक्का आध पाव, पीपल छोटी आध पाव इन सबको एक मिट्टी की हांडी में भरे मुख बन्द करके उस पर तीन कपरोटी चढ़ा देवे फिर एक गड्ढा हाथ भर लम्बा हाथ भर चौडा और इतना ही नीचा खोद कर आरने उपले उसमें भरदे। बीच में इस हांडी को रख आग लगादे, जब कंडे जल जावें तब राख निकाल कर

फिर और आग लगादे। इस प्रकार तीन बार करे तब हांडी को तीसरी बार निकाल कर उसमें से सब औषधि रत्ती २ भर निकाल ले, और बाकी को शीशी में भर डाट लगादे। एक रत्ती यह साधारण मात्रा है। माता के दूध में एक चांवल दे, जो रोग का बल अधिक जान पड़े तो एक रत्ती अदरक का रस और छः रत्ती शहद मिला कर तीन दिन तक दोनों बार दे। यदि पसली चले तो तुलसी दल के चार रत्ती रस में चार चांवल भर शुण्डी मात्रा और एक माशा शहद मिलाकर दे और इस तेल को लेप करके सुहाता २ सेके।

तेल बनाने की विधि—

अदरक और लहसुन का दो दो तोला रस लेकर आधी छटांक मीठा तेल में डाल कर आग पर औटावे जब तेल मात्र रह जावे तब उतार कर छान ले और इस तेल को पेट पर लेप करे।

बालकों के चिनौने की औषधि—

१—कांजी का पानी पिलावे।

२—मुनक्का में वायविडङ्ग रख कर पांच दाने से दस दाना तक दिया करें।

३—नमक के पानी में कपड़ा भिगो अथवा कड़वे तेल वा हींग में भिगो कर शौच स्थान पर रखे।

४—राई को पीस कर दही में मिला कर पिलादे।

५—अनार की जड़ का ताजा छिलका एक छटांक कतर तीन पाव पानी में उबाले। जब आधा जल रह जावे तब उतार कर छान लेवे और बोतल में रख छोड़े। सवेरे एक छटांक और पश्चात् आध घण्टे अन्तर से पिलाता रहे। इस भांति चार मात्रा खानेसे और दो तोला अरण्डी का तेल का विरेचन देने से

१२ घन्टे में सब कीड़े निकल जावेंगे। इसमें बालक को मीठा न खाने दे और न दूध पिलाने वाली खावे। भोजन अधिक न करे और गरिष्ट भोजन करे।

बालकों की हिचकी पर औषधि—

१—नारियल पीस कर शक्कर मिला कर चटावे।

२—गीला कपड़ा तालु पर रखे।

३—रीठे को डोरे में पिरो कर नाड़ में लटकादे।

बालकों के गंज की औषधि—

१—नीम के पत्तों को पानी में औटा कर खूब धोवे। इसके पीछे, इस औषधि को लगावे। गंधक और चूना को आधी आधी छटांक लो, तीन पाव पानी में डाल कर मिट्टी की हांडी में औटावे और छान कर बोतल में भरदे। कबूतर के पंख को उसमें भिगो भिगो कर गंज वा खुजली पर लगावे।

२—गौ के घी को धोकर उसमें कबीला, तूतिया, मुरदासन एक २ तोला पीस कर मिला ले और गंज पर लगावे।

बालकों के जल जाने पर औषधि—

१—इमली की छाल को जला कर गौ के घी में मिला कर लगावें।

२—यदि घाव हो गया हो तो कड़वा तेल को चुपड़ कर रेल के कोयले को महीन पीस कर बुरकाता रहे।

३—चूने का पानी लगावे।

बालकों की खुजली पर औषधि—

चूने के पानी मे कड़वा तेल डाल कर खूब हिलाओ जब हिलते हिलते गाढ़ा हो जावे तब उसमें रूई का फाया भिगो कर खुजली पर लगावे।

बालकों के कांच निकलने पर औषधि—

१—बालक के मूत्र से उसे शौच लगावे।

२—पुरानी चलनी का चमड़ा जला कर और पानी में घिस कर उस स्थान पर चिपका दो।

३—कड़वा तेल लगा कर जला हुआ और पिसा लिसौड़ा लगावे।

४—आम और जामून की छाल और पत्तीको पानी में औटा कर उस पानी से शौच करावे।

बालकों के पेट बढ़ने पर औषधि—

पानी में मिला हुआ शहद थोड़ा २ दिया करें, इस प्रकार थोड़े दिन सेवन करने से पेट छट कर ठीक होगा।

बालकों के चिनग पर औषधि—

बालक मूत्र करते समय रोवे और अपनी इन्द्री को खेंचे तो समझलो कि इसको चिनग है तब यह औषधि करे—

१—चार पांच डली बबूल के गोंद को कपड़े में बांध पानी में भिगोदे फिर उस पानी में मिश्री मिला तीन चार वा पांच बार दिन में पिलावे।

२—पत्थर के बेर को पानी में पीसकर पिलादे यह पंसारी के मिलता है और हजरूल यहूद अर्थात् यहूद देश का पत्थर कहलाता है।

बालकों के मृगी रोग पर औषधि—

बच के चूर्ण को शहद में मिला कर चटावे।

बालकों के नकसीर की औषधि—

१—अनार के फूल का रस और श्वेत दूब का रस इन दोनों से दिन मे दो तीन वेर नास लेवे।

२—फिटकरी के पानी को नाक में सूंघे।

३—पोत मिट्टी पर पानी डालकर सूंघे।

वालकों के हैजा पर औषधि

अफीम, हींग, काली मिरच और कपूर बराबर लेकर पीसकर डेढ़ दो रत्ती की गोली बनावे और घंटे २ पीछे लगावे।

वालकों के लू लगने पर औषधि

१—कच्चे आम के भुर्ते का पानी वनाकर पीवे।

२—पुराने पेड़ों का शर्वत पीवे।

३—प्याज का अर्क पीवे।

पान से जीभ फटने पर औषधि

१—एक या दो लौंग खाले। ज्यों २ लौंग खाई जावेगी जीभ ठीक हो जावेगी।

वालकों की फूली पर औषधि

चिरचिटे की जड़ का रस शुद्ध शहत में मिला कर आंजे तो फूली कट जायगी।

वालकों की कब्जी पर औषधि

१—काला नोन, सुहागा भुना हुआ, हींग भुनी हुई इनको पानी में घिस कर तनिक गुनगुना करके पिलादे।

२—मुरदासंग को पानी में घिस कर और शक्कर मिलाकर औंटावे। और गुनगुना कर पिलादे।

३—अरन्डी का तेल पिलादे।

वालकों की फुन्सी पर औषधि

१ फ़ी चचाल्क को लेकर कूट पीस ले और उसमें थोड़ा सा गुलावी रङ्ग और थोड़ी सी बोरिक एसिड डाल कर किसी

चीनी की डिबिया में भर कर रखलो। यह चीज़ १० या १२ आने में छोटी सी डिबिया आती है और लागत करीब दो आना के पडती है।

१—कत्था सफेद ५ तोला, राल ५ तोला, फिटकरी १। तोला, नीला थोथा १। तोला, तिल्ली का तेल ५ तोला। पहले तेल और पानी को मिला कर खूब फेंटे और फिर सब दवाइयों का चूर्ण मिला कर आग पर रख कर अच्छी तरह मिला ले जब मिल जाय तब उतार ले। यह मरहम फोड़े फुन्सियों के लिये बहुत अच्छी है।

बालकों को मोटा ताजा बनाने वाली

पेटेन्ट औषधियां

हमारे बहुत से सुयोग्य वैद्य, डाक्टर तथा फार्मेसी वालों ने बालकों के लिये कुछ लाभदायक चीजों को बना पेटेन्ट करा कर रजिस्टर्ड कराया है। जो सुन्दर २ शीशियों पर सुन्दर लेबिल द्वारा सुसज्जित की हुई दवा वेचने वाले प्रत्येक एजेन्टों की दुकानों पर विकती देखी जाती हैं। इन में से कुछ मुख्य मुख्य बालोपयोगी औषधियों का वर्णन किया जाता है कि जिस से हमारे गरीब लोग भी इनको स्वयं बना कर अपने बालकों को प्रयोग करा सके।

१. बाल जीवन सुधा

पुदीना २॥ तोला, तुलसी के पत्ते २॥ तोला, मीठा वच २॥ तोला, अतीस २॥ तोला, मुलैठी ५ तोला, धाय के फूल ५ तोला। सब दवाओं को कूट कर दो सेर पानी में डाल धीमी आंच से औटावे जब चौथाई पानी बाकी रह जावे तब उस में आधा सेर चूने का नितरा हुआ पानी मिलादे और तीन पाव रहने पर तीन

पाव मिश्री डाल कर चाशनी बनाले। यह शर्बत सायं प्रातः तीन तीन माशा बच्चों को चटाने से उनकी खांसी, कफ, बुखार, क्षय तथा मिठवा के रोग दूर होते हैं।

२. बाल पौष्टिक शर्बत

मुनक्का १ तोला, उन्नाव १ तोला, सनाय, वाय विडंग, सौंफ, की जड़, अलसी, काकड़ा सींगी, अमलताश का गूदा, अजवायन, सफेद जीरा, पीपल छोटी, नागर मोथा, मुलैठी, अतीस मीठा काला जीरा, मकोय, सोंठ, मीठी बच, ढाक के बीज, इन्द्र जौ, त्रिफला, गुलाब के फूल, शतावर, शीतल चीनी, बनफशा, खत्मी सब चीजें एक एक तोला और मिश्री, २॥ सेर। इन सब चीजों को कूट पीस रात को दो सेर पानी में भिगोदे, सवेरे चूल्हे पर चढ़ा कर धीमी आंच से काढ़ा करले जब आधा पानी जल जाय तब उतार कर छान ले। अब ढाई सेर मिश्री की चाशमी बनाले। यह शर्बत छोटे बच्चों को अवस्थानुसार २॥ माशा से ६ माशा तक दूध के साथ सायं प्रातः पिलाने से हर तरह का बुखार, खांसी, कै अतिसार का रोग अच्छा हो जाता है।

३. बालाऽमृत

हाइ पोफो-फेट ओफ सोडा १० ग्रेन, हाइ पोफोस्फेट आफ लाइम १० ग्रेन, शकर का शर्बत ४ औंस। सब को मिला कर इस में २ ड्राम वाय विडंग आयल और २ ड्राम सौंठ का अर्क मिला कर तीन चार दिन रक्खें फिर शीशी में भरदो अगर लाल रग देना हो तो कुछ को चलाइन की बून्द मिलादो। यह दवा बच्चों के समस्त रोगों को हरण करती है, विशेप कर फेफड़े के रोग दूर होते हैं।

४. बलकारक मिठाई

कद्दू की मींगी तरबूज की मींगी, पेठा की मींगी, खरबूजा

की मिगी, ककड़ी की मिंगी- खीरा की मिंगी प्रत्येक दस दस तोला कीकर का गोंद आध सेर, मखाने की खील २० तोला। इन सब चीजों को घृत में तल कर इतना भूने कि वे कूटने से महिन हो सके। सब मींगियों को एक साथ और गोंद तथा मखाने को पृथक २ भूने और सब को एक में मिलावे। फिर दो सेर मिश्री की चाश्नी कर के सब चीजें उस में मिला दे और ५ तोला सफेद इलायची दाना भी डाल दे यदि चाहो तो मेवा भी डाल सकते हैं इन सब को मिला कर दो दो तोला के लड्डू बनाओ। इन को प्रत्येक ऋतु में खा सकते हैं। और बच्चों को भी बाजार की मिठाई के स्थान पर यह लाभदायक मिठाई खिलाई जा सकती है।

सर्व रोगों का एक इलाज

अमृत धारा

इस अमृतधारा के विषय में बाजारों में कितने ही विज्ञापन देखने में आते हैं। कितनी ही फार्मेसियों ने इसका नाम बदल २ कर प्रचार करने की चेष्टा की है और कितने ही मनुष्य इस योग के द्वारा हजारों रुपया प्राप्त कर धनपति बन चुके हैं। किसी ने इनका नाम अमृतधारा, पीयूस धारा किसी ने पीयूस सिंधु तथा सुधा सिंधु किसी ने चन्द्र धारा तो किसी ने चिरायु धारा आदि विविध नामों से रजिस्टर्ड करा रखा है। यह अमृतधारा क्या चीज है तथा किस २ योग से निर्माण की गई है सो सब बातें विधि सहित पाठकों के हितार्थ प्रकाशन किया जाता है। पाठक ऐसी उत्तम तथा उपकारक चीज को बना कर अवश्य काम में लायें।

अमृत धारा का प्रयोग

ज्वरः—तुलसी, अदरक और नागर वेल के पान (ये तीन चीजें) या इन में से कोई एक चीज का रस पाव तोला लेकर उस में तीन बूंद अमृतधारा मिला कर दिन में तीन वार पिलाने से तीन चार दिन के भीतर सर्व प्रकार के ज्वर नाश होते हैं तथा एक चम्मच गरम पानी के साथ तीन चार बूंद अमृतधारा को डाल कर सांय प्रातः पिलाने से मोतीझारा (निकाला) आदि सर्व ज्वर आदि शान्त होते हैं।

हैजाः—अमृतधारा चार पांच बूंद ठंडे पानी के साथ दस २ मिनट बाद देते रहो, दस्त और के वन्द होती जावे त्यों २ अमृतधारा का प्रयोग भी घटाते जावो। अथवा प्याज का रस निकाल उसमें अमृतधारा की तीन बूंद डालकर देने से हैजा मिट जाता है।

शिर.—दो बूंद अमृतधारा की कपाल पर और कनपटियों पर मसलने से सब तरह के सिर दर्द नष्ट होते है।

नेत्रः—एक बूंद अमृतधारा की कपाल और कनपटियों पर मसलने से सब तरह के सिर दर्द नाश हो जाते है।

कानः—दस बूंद तिल्ली का तेल एक तोला प्याज का रस में दो बूंद अमृतधारा मिला कर कान में डालने से कर्ण रोग शान्त होते है।

नाकः—एक हिस्सा अमृतधारा और तीन हिस्सा तिल्ली या एरण्डी का तेल या दस बूंद गुल रोगन मिला रूई का फाया भिगो नाक में लगाने से तथा शीशी खोल सुंघने से पीनस रोग नष्ट होते है।

मुख के छालेः—४ आना भर कवाब चीनी पीस कर उस में २ बूंद अमृतधारा मिला मुख में मसलने से छाले नष्ट हो जाते हैं।

दाँत दाढ़—दांत दाढ़ पर अमृतधारा मलने से और कौचर में फौआ रखने से या मलने से पीड़ा मिटती है, तथा गले के भीतर बाहर की सूजन आदि सर्व मुख रोगों पर फायदा करती है।

कास श्वांस—पांच चार बून्द अमृतधारा ठंडे पानी के साथ मिला कर सांय प्रात. लेने से श्वांस, कास दमा सब रोग नाश होते हैं। तथा मीठे तेल में अमृतधारा मिला छाती पर मालिश करने से श्वांस तथा खांसी आदि छाती का दर्द शान्त होता है।

पसली—सौंफ या अजवायन के अर्क या क्वाथ में ४-५ बून्द अमृतधारा डाल कर पीने से पसली का दर्द या नमूनिया का रोग मिटता है। अथवा केवल अमृतधारा सोंठ के चूर्ण में मिला देने से भी आराम होता है और पसली पर अमृतधारा की मालिश करने से भी रोग शान्त होता है।

छातीः—हृदय पर अमृतधारा तेल में मिला मलना चाहिये और आंवला के मुरब्बे में तीन चार बून्द अमृतधारा डाल कर पिलाने से सर्व हृदय रोग मिटते हैं।

पेट दर्द—खॉड या बताशे में ३-४ बून्द अमृतधारा डाल देने से पेट दर्द शान्त होता है। यदि न मिटे तो आधा २ घन्टे के अन्तर से सेवन कराया जाय तो अवश्य लाभ होगा।

मंदाग्नि—भोजन के पश्चात् २ या तीन बून्द अमृतधारा की ठंडे पानी के साथ लेने से मंदाग्नि के सव रोग शान्त होते हैं। अथवा सौंठ के अर्क के साथ पानी मिलाने से सब उदर विकार नाश होते हैं।

कमजोरी रोग—१ तोला गाय का मक्खन और आधा तोला शहद में ४ बून्द अमृतधारा मिला लेने से कमजोरी रोग का नाश होता है।

जलन—अग्नि, तेजाब, गरम पानी या गरम तेल में जल जाने पर, एक दो या तीन चूने का कंकर ले और उसको दस

तोला पानी में भिगोदो। दस मिनट बाद उस में २ तोला मीठा तेल डाल कर मलने से जलन से शान्ति होती है।

अर्द्धांग, गठिया लकवादि—अमृतधारा में १ तोला सरसों या मीठा तेल मिला मालिश करना तिस पर गरम कपड़े से सेक करना अथवा ऊपर पुरानी रूई गरम कर बांधने से वायु सम्बन्धी पीड़ा की शान्ती होती है।

हिचकी—दो बून्द अमृतधारा को जीभ पर डाल कर मुह बन्द कर अमृतधारा कुछ सूंघने से पांच मिनट में बन्द होती है

प्लीहा रोग—प्लीहा स्थान पर अमृतधारा की मालिश करना और तीन चार बून्द तीन माशा खांड में एक माशा काला नमक मिला कर बासी पानी में पीना चाहिये।

यकृत रोग—अमृतधारा की तीन चार बून्द त्रिफला के पानी में डाल सांय प्रात पीवें और यकृत स्थान पर अमृतधारा की मालिश करने से भी यह रोग शान्त होता है।

अतिसार रोग—ठंडे पानी मे दो तीन बून्द अमृतधारा सांय प्रात लेने से दस्त, आमदस्त, मरोड़े, पेचिश अतिसार, आमातिसार, खट्टी डकार, अति प्यास, पेट फूलना, पेट-दर्द, भोजन करते ही कै या दस्त का होना इत्यादि सर्व रोग शान्त होते हैं।

दाद खुजली आदि—तिल्ली का तेल में अमृतधारा मिला लगाने से सारे शरीर या किसी एक जगह की खुजली मिटती है

जुकाम—अमृतधारा को सूंघने से मिटती है।

मृगी—सिर मे एक दो बून्द अमृतधारा की मालिश करे तथा दो बून्द रोज गुलाब जल के अर्क में डाल कर पीवे।

जहरी जानवरों के विष पर—जहरी जानवर टाटिया बिच्छू भँवरा तथा मक्खी आदि के डङ्क पर अमृतधारा मसलने से आराम होता है, जिस जगह पर बिच्छू काटे उस जगह को थोड़ा

कुचर कर अमृतधारा मसलने से शीघ्र आराम होता है।

यह अमृतधारा बहुत ही अनुपम योग जो कितने ही वर्षो से संसार में प्रसिद्ध हो रहा है इसके प्रचार करने वाले कितने ही लखपति हो चुके हैं और इसको कितने ही नाम व रूपों में परिवर्तन कर मन माना द्रव्य उपार्जन कर रहे हैं। यह अमृत धारा क्या है तथा इसको संसार में किन २ नामों से रजिस्टर्ड कराया गया है सो सब बातें पाठकों के हितार्थ लिख कर वर्णन की जाती हैं पाठक अपनी २ रुचि अनुसार बना कर अपने तथा अपने परवारिक रोगों पर सदुपयोग स्वयं करें और यदि चाहें तो सीधे सच्चे ढंग से इसको सुन्दर २ लेबिलों वाली छोटी २ शीशियो में भर कर सुसज्जित करे तो द्रव्य कमावे।

अमृतधारा बनाने की विधि

अजवायन का सत, पोदीना (पीपर मेन्ट) के फूल और कपूर ये तीनों समान भाग ले न्यारे २ लाकर अच्छी मजबूत कार्क दार शीशी में एक २ करके तीनों चीजें डालदें और कार्क लगा दे, दस या पन्द्रह मिनट बाद अमृतधारा अपने आप बन जायगी। कपूर भीम सेनी डालने से उत्तम अमृतधारा बनती है। भीम सेनी कपूर मँहगा आता है इस लिये बाजार वाले नहीं डालते। इनमें कितने ही लोग दालचीनी तथा लोंग का सस्ता अर्क डाल कर वेचते हैं। असली अमृतधारा उपर्युक्त तीन वस्तुओं के योग से वनाई जाती है। बाजारों में बेचने वाले तथा फार्मेसी वाले इसको जी चाहे जिस नाम से रजिस्टर्ड करा कर वेचते हैं। सो उनके नामों के योग तथा गुण विधि सहित सुनिये इससे आपको इसकी (Secret sciene) का दृढ़ प्रत्यक्ष करण हो जावेगा।

पियूस सिन्धु, सुधा सिन्धु

शरबत शक्कर आध औंस, एसिड सायनिक डिल ८ मिनिम,

स्प्रिट क्लोरो फार्म २ बूंद, टिंक्चर कैपसिकम आधा ड्राम, आइल मैंथा पीपरमेन्ट १५ बूंद। स्प्रिट कैम्फर १ ड्राम। सबको मिला कर एक जीव करलो और शीशी में कार्क लगा कर रख दो। बस दवा तैयार है।

चन्द्र धारा

कपूर १ तोला, अजवायन का सत १ तोला, पीपरमेन्ट १ तोला दालचीनी का तेल १ तोला। सबको मिलाकर शीशियों में रखलो कुछ समय बाद सब मिल कर एक हो जायगा। यह दवा प्रसिद्ध अमृतधारा की जगह पर काम दे सकती है।

चिरायु धारा

सत अजवायन ४० ग्रेन, तेल पीपरमेन्ट ४० ग्रेन कपूर ४० ग्रेन केसर १ ग्रेन। केसर को पीस कर बाकी चीजों को वैसे ही एक बोतल में डाल दो। यह भी प्रसिद्ध अमृतधारा के स्थान पर रजिस्टर्ड है।

इसी प्रकार जीवन धारा कामधेनु आदि विविध नामों में इसी एक चीज को रजिस्टर्ड कराया है कितने ही बाजार में बेचने वाले इनमें और भी सस्ती दवा मिलाकर बेचा करते हैं कि जिस से उनको आठ गुणा तक फायदा हो जाता है ये लोग जिस तरह बनाते हैं सो योग पाठकों के उपकारार्थ लिखा जाता है। कैम्फर १ औंस, आइल मैंथा पिपरेटा १ औंस, थाइमोल आधा औंस, आयल क्लोज ४ ड्राम, एमोनिया कार्ब १ ड्राम। सबको मिलादो, आधा ड्राम केसर अच्छी प्रकार खरल करके मिलादो। इससे रङ्ग अच्छा आता है कई एक इसमें केसर का रङ्ग न देकर उतना ही अमर बेल का चूर्ण मिला देते हैं। इसी प्रकार कोई इन तीन चीजों को एकत्र कर दवा से तिगुना रेक्टी फाइड स्प्रिट मिला देते हैं। गुणों में प्रायः सभी समान हैं किन्तु अमृतधारा के विधान

से बनाई हुई विशेष उपकारक है। पाठक अपनी २ इच्छानुसार जैसी चाहें वैसी बना कर काम में ले सकते हैं।

अमृतधारा के विधान में लिख कर पाठकों को बतलाया जा चुका है कि भीमसेनी कपूर डालने से अमृतधारा उत्तम बनती है। यह भीमसेनी कपूर बाजार में मंहगा आता है इसकी कीमत २५) या ३०) रुपया तोला तक ले लेते हैं अब यह भीमसेनी कपूर क्या है तथा किस प्रकार बनाया जाता है। सो विधि सहित सुनिये। पाठक स्वयं बनावे और लाभ उठायें।

भीमसेनी कपूर बनाने की विधि

कपूर ४ तोला, गुजराती इलायची ४ तोला, बड़ी इलायची ४ तोला, शीतल चीनी २ तोला, लौंग १ तोला, कलमी शोरा १ तोला, काली मिरच १० दाना, चन्दसुर २० दाना।

विधिः—ऊपर की सब वस्तुओं को केले के पानी में पीस कर लुगदी सी बनाले और एक अलमूनियम की थाली में रख कर ऊपर से चीनी मिट्टी का कटोरा औंधा दे देवें। फिर उस थाली के नीचे को तेल के चिराग की आँच दे और कटोरे के ऊपर कपड़े की मोटी गद्दी पानी से तर करके रखे। कुछ देर में कटोरे के अन्दर थाली का कपूर उड़ कर जमा हो जायगा बस यह भीमसेनी कपूर है, इसे निकाल कर शीशी में भरले बाजार में प्रायः यह २५) या ३०) रु० तोला तक बिका करता है।

खुजली की अचूक दवा

पंवाड़ के बीज, माली बावची, आमिया हल्दी, आंवला सार गंधक। सब चीजों को एक २ तोला लेकर कूट पीस चार पुड़िया बनालो। सेवन विधि—एक पुडिया को रात के समय मिट्टी के बरतन में पाव पानी के साथ भिगोदो, प्रात काल उसका नितरा पानी को छान कर पी जावो और दवा के बचे हुए खोखश को लोढी चकले पर बारीक पीस कर उसमें कड़वा तेल मिला कर धूप में बैठ खुजली स्थान पर मालिश करो और आध घंटा पश्चात् साबुन लगा कर गरम पानी से स्नान करे। इस प्रकार ३ दिन सेवन करने से खुजली नाश हो जाती है।

देशी टिंचर आयोडीन

हल्दी पिसी छनी १ तोला, सफेद कनेर की जड़ १ तोला, गोमूत्र दो छटांक, कड़वा तेल दो छटांक, सब चीजों को कड़ाही मे डाल कर औटावो, जब तेल मात्र रह जावे तब छान कर शीशी में भरलो। इसकी दर्द तथा चोट पर मालिश करो तो दर्द तथा चोट की पीड़ा शान्त हो जाती है।